

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

मुख्य कार्यालय, तिसरा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृह

मा महासभा दि. २३/०६/२०१४

मा. महासभा बुधवार दि. ११/०६/२०१४ रोजी सकाळी ठिक ११.०० वाजता आयोजित करण्यात आली होती. सदरहू सभा ठरावाद्वारे बहुमताने तहकूब केल्याने विषयपत्रिकेवरील प्रलंबित विषय क्र. १ ते ०६ व पुरक घोषणा क्र. ७ ते १० या विषयांवर चर्चा करण्यासाठी ही सभा सोमवार दिनांक २३/०६/२०१४ रोजी सकाळी ११.०० वाजता महापालिका सभागृह, ३ रा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृह येथे मा. महापौर यांच्या अध्यक्षतेखाली भरली असता खालीलप्रमाणे सदस्य हजर होते.

उपस्थित सदस्य

१)	कॅटलीन ऍन्थोनी परेरा	महापौर
२)	सय्यद नुरजहाँ नझर हुसेन	उपमहापौर
३)	शरद केशव पाटील	सभापती, स्थायी समिती
४)	पाटील ध्रुवकिशोर मन्सारांम	सभागृह नेता
५)	मेहता नरेंद्र लालचंद	विरोधी पक्षनेता
६)	सॅन्ड्रा जेफ्री रॉड्रीक्स	सदस्या
७)	अशोक सुर्यदेव तिवारी	सदस्य
८)	असेन्ला मेंडोन्सा परेरा	सदस्या
९)	अॅड. रवि व्यास	सदस्य
१०)	कोठारी सुमन रमेश	सदस्या
११)	कांगणे यशवंत ठकाजी	सदस्य
१२)	सिंग मदन उदितनारायण	सदस्य
१३)	पाटील रोहिदास शंकर	सदस्य
१४)	म्हात्रे कल्पना महेश	सदस्या
१५)	पिसाळ मनिषा नामदेव	सदस्या
१६)	पांडे हंसूकुमार कमलकुमार	सदस्य
१७)	निलम हरिश्चंद्र ढवण	गटनेता, शिवसेना
१८)	जाधव मोहन महादेव	सदस्य
१९)	पाटील सुनिता कैलास	सभापती, महिला व बालकल्याण समिती
२०)	वेतोसकर राजेश शंकर	सदस्य
२१)	अरविंद दत्ताराम ठाकुर	गटनेता, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना
२२)	प्रभात प्रकाश पाटील	सदस्या
२३)	प्रेमनाथ गजानन पाटील	सदस्य
२४)	शर्मा सुनिला सत्येंद्र	सदस्या
२५)	मेहता डिपल विनोद	सदस्या
२६)	जयंतीलाल गुरुनाथ पाटील	सदस्य
२७)	संध्या प्रफुल्ल पाटील	सदस्या
२८)	पाटील वंदना विकास	उप-सभापती, महिला व बालकल्याण समिती
२९)	घरत तारा विनायक	सदस्या
३०)	आमगावकर हरिश्चंद्र रामचंद्र	सदस्य
३१)	केळुसकर प्रशांत नारायण	सदस्य
३२)	रावल भगवती जयशंकर	सदस्या
३३)	शाह राकेश रतिशचंद्र	सदस्य
३४)	मेघना दिपक रावल	सदस्या
३५)	जैन गिता भरत	सदस्या
३६)	डॉ. जैन रमेश धरमचंद्र	सदस्य
३७)	शुभांगी महिन कोटियन	सदस्या
३८)	डॉ. राजेंद्र जैन	सदस्य
३९)	बाबरा डॉनल्ड रॉड्रीक्स	सदस्या
४०)	मेंडोन्सा स्टिवन जॉन	सदस्य
४१)	प्रतिभा प्रकाश तांगडे-पाटील	सदस्या
४२)	ग्रिटा स्टिफन फॅरो	सदस्या

४३)	डॉ. आसिफ गुलाब शेख	सदस्य
४४)	जयमाला किशोर पाटील	सदस्या
४५)	संदिप मोहन पाटील	सदस्य
४६)	डिमेलो बर्नड अल्बर्ट	गटनेता, राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी
४७)	बगाजी शर्मिला विन्सन	सदस्या
४८)	लियाकत ग. शेख	सदस्य
४९)	परमार अनिता भरत	सदस्या
५०)	पाटील प्रणाली संदिप	सदस्या
५१)	रकवी सुहास माधवराव	सदस्य
५२)	झिनत रऊफ कुरेशी	सदस्या
५३)	खण्डेलवाल सुरेश	सदस्य
५४)	पाटील नरेश तुकाराम	सदस्य
५५)	शेख शबनम लियाकत	सदस्या
५६)	सुजाता रविकांत शिंदे	सदस्या
५७)	मोहम्मद फरिद सिद्दीक कुरेशी	सदस्य
५८)	पुजारी कांचना शेखर	सदस्या
५९)	काझी रशीदा जमील	सदस्या
६०)	इनामदार जुबेर	गटनेता, भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
६१)	शेख अशरफ मोहम्मद इब्राहिम	सदस्य
६२)	म्हात्रे सुर्यकांत खंडोजी	सदस्य
६३)	डिसा मर्लिन मर्विन	सदस्या
६४)	कासोदरिया अश्विन श्यामजी	सदस्य
६५)	डॉ. नयना मनोज वसानी	सदस्या
६६)	जैन दिनेश तेजराज	सदस्य
६७)	भट्ट दिप्ती शेखर	सदस्या
६८)	दळवी प्रशांत ज्ञानदेव	सदस्य
६९)	विराणी रेखा अनिल	सदस्या
७०)	अनिता जयवंत पाटील	सदस्या
७१)	भोईर भावना राजू	सदस्या
७२)	भोईर राजू यशवंत	सदस्य
७३)	वेंचर गिल्बर्ट मेंडोसा	सदस्य
७४)	अरोरा दिपिका पंकज	सदस्या
७५)	भावसार शिल्पा कमलेश	सदस्या
७६)	कमलेश यशवंत भोईर	सदस्य
७७)	सुमबंड महरुत्रीसा हारूनरशीद	सदस्या
७८)	गावंड मंदाकिनी आत्माराम	सदस्या
७९)	प्रभाकर पद्माकर म्हात्रे	सदस्य
८०)	मीरादेवी रामलाल यादव	सदस्या
८१)	दक्षता राजेंद्र ठाकूर	सदस्या
८२)	भगवती शर्मा	नामनिर्देशित सदस्य
८३)	दिनेश दगडू नलावडे	नामनिर्देशित सदस्य
८४)	धनेश परशुराम पाटील	नामनिर्देशित सदस्य
८५)	डॉ. सुशिल अग्रवाल	नामनिर्देशित सदस्य

गैरहजर सदस्य -

१)	प्रविण मोरेश्वर पाटील	सदस्य
२)	भानुशाली वर्षा गिरीधर	सदस्या
३)	पाटील वंदना मंगेश	सदस्या
४)	मुन्ना सिंग	गटनेता, अपक्ष
५)	रॉझीक्स मॉरस जोसेफ	सदस्य
६)	गोविंद हेलन जॉर्जी	सदस्या
७)	शाह सिमा कमलेश	सदस्या
८)	सामंत प्रमोद जयराम	सदस्य
९)	म्हात्रे परशुराम पद्माकर	सदस्य

१०)	वंदना रामदास चक्रे	सदस्या
११)	अनिल बाबुराव भोसले	सदस्य
१२)	रविंद्र भिमदेव माळी	सदस्य

रजेचा अर्ज – निरंक

मा. महापौर :-

दि. ११/०६/२०१४ रोजीची तहकूब सभा आज आयोजित करण्यांत आलेली आहे. सभेस उपस्थित सर्व सन्मा. सदस्य, अधिकारी व पत्रकार बंधूंचे स्वागत करित आहे. सदरची सभा खेळीमेळीच्या वातावरणात पार पाडाची अशी माझी विनंती आहे. सचिवांनी सभेस सुरुवात करावी.

नगरसचिव :-

या परिपत्रकाद्वारे आपणांस कळविण्यांत येत आहे की, मा. महासभा बुधवार दि. ११/०६/२०१४ रोजी सकाळी ठिक ११.०० वाजता आयोजित करण्यात आली होती. सदरहू सभा ठरावाद्वारे बहुमताने तहकूब केल्याने विषयपत्रिकेवरील प्रलंबित विषय क्र. १ ते ०६ व पुरक घोषणा क्र. ७ ते १० या विषयांवर चर्चा करण्यासाठी ही सभा सोमवार दिनांक २३/०६/२०१४ रोजी सकाळी ११.०० वाजता मिरा भाईंदर महानगरपालिका, स्व. इंदिरा गांधी भवन, मुख्य कार्यालय, तिसरा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृहात आयोजित केलेली आहे. प्रश्नोत्तर तासाला सुरुवात होत आहे. ११-१५ झालेले आहेत. प्रश्न क्र. २३ डॉ. राजेंद्र जैन ह्यांचा प्रश्न आहे. प्रश्नोत्तराला सुरुवात करावी.

डॉ. राजेंद्र जैन :-

मा. आयुक्त महोदय, मा. महापौर मॅडम यह जो प्रश्न लिया है। इसमें पहले यह बताया गया था की २०१२ में रिपेयर की परमिशन दिया उसके बाद में फिर उसपे कुछ स्टे वैगेरा हुआ। बाद में बोला की स्टे हट गया। उसको तोडना चाहिए नोटीस दिया और बाद में बोला उसका रिक्वाइज बांधकाम करेंगे। पिछली महासभा में धनेगावे साहबने कहाँ था छोटासा काम है। और बाद मे रिक्वाइज बांधकाम भी बाद मे देखा तो नही हुआ, बाद में तोडा गया। मेरी मा. महापौर से और मा. आयुक्त से विनंती है की पूरी मिरा भाईंदर में इनलिगल कस्ट्रक्शन का जाल बिछा हुआ है, रिपेयर कें परमिशन के नाम पर महसूल कम होता है। तो पहला सवाल यह है रिपेयर हो रही थी और रिपेयर परमिशन दिया गया और इसका बांधकाम हो गया तो उस समय किस अधिकारी की ड्युटी थी की यह बांधकाम ऐसे ना हो, उसका नोटीफिकेशन क्यू नही आया और अगर नही आया तो उसपे कारवाई क्यू नही होती? ऐसे सवाल पे हमेशा हमे मौनकारी मूँह देखना पडता है। पर मैं इस प्रकरण की माध्यम से यह अपिल करना चाहूँगा की अगर अधिकारी अपने कर्तव्य का पालन नही करेंगे तो पहले स्टेप पे गडबड होगी। जब भी बात करेंगे अधिकारी बोलते है प्रेशर था। यह प्रेशर किसका था, प्रेशर या, संरक्षण था। यह आपको देखने का है। लेकिन जिस अधिकारी को वॉर्ड मे बिट मार्शल बोलते है या वॉर्ड ऑफिसर बोलते है अगर वह समय पे सुचना नही देते या उसको संरक्षण देते है। उसके बाद में जब बन गया तो कोर्ट के अंदर स्टे मिला। कोर्ट में स्टे मिलने के बाद में पुरी प्रक्रिया चालू हुई कानून का सम्मान करते हुए एक साल देढ साल जो भी समय लगा वह लगा उसके बाद में कोर्ट डीपीएलडी प्रोसीजर लो वह पुरा किया गया। उसके बाद रिक्वाइज परमिशन डाला गया तीन बार उसको मना किया उसको रिक्विजन नही कर सकते। तीन बार मना करने के बाद जब फॉलोअप किया गया तो बताया गया की उसको रिक्विजन परमिशन दे दिया है। मुझे समझ में नही आता २-२ चार ही हो सकता है कभी २-२-४-५ किया कभी २-२-४-३ किया एक ही जगह के उपर एक चीज के उपर कभी हा कभी ना। रिक्विजन परमिशन कैसे दिया गया। तीन बार कना करने के बाद तीन बार का लेटर है उसको ऑफिसियल परमिशन नही दे सकते। इसके बाद रिक्विजन परमिशन दिया है लेकिन कोर्ट से स्टे उठ गया है। डी.पी.एल. पुरा हो गया है। वह तोड सकता है तो उसपे कारवाई क्यो नही होती। तो जवाब यह मिलता है की, उसने रिक्विजन ऑप्लिकेशन के लिए रिक्विजन ऑप्लिकेशन दिया हुआ है। इसके लिए उसको तोडक कारवाई से रोका हुआ है। क्या यह कानून संगत है। मैने इसका कानून पुछा मुझे बताया गया लेकिन लिखित मे मेरे पास ऐसा कुछ स्पष्ट नही मिला। इस तरह का मतलब यह हुआ की सुप्रीम कोर्ट भी डिस्मिशन दे देगा। बिल्डींग को तोडने का और वह बोलेगा मुझे इस पर विंग डालने का है तो जब वह डाले तब तक उसको रोका जाएगा क्या? यह मुझे न्यायसंगत लगता नही। इस बहाने ये ३-४ महिने कारवाई रोकी गई। महासभा में यह बताया गया की इसका विंग कर दिया गया तो उसे तोड दिया गया। मुझे इसका खुलासा चाहिए की क्या-क्या हुआ है। मैने ४-५ मुद्दे उठाया। यह सब कारवाई कैसे हुई। मा.आयुक्त साहब आप यह स्टडी कर देखेंगे।

सत्यवान धनेगावे :-

मा. महापौर मॅडमच्या परवानगीने बोलतो, मौजे भाईंदर, सिटीएस नं. ५७१ ह्या जागेमध्ये मोंटारो ह्यांनी जे बांधकाम केलेले आहे. त्या संदर्भात राजेंद्र जैन साहेबांचा प्रश्न आहे. ह्याबाबत लेखी उत्तर त्यांना दिलेले आहे. ह्या प्रकरणामध्ये २००९-१० मध्ये दुरुस्ती परवानगी दिलेली होती. दुरुस्ती परवानगी अटीशर्तीच्या अधीन राहून दिलेली होती. त्या अटीशर्तीचे वायलिसेस झाल्यामुळे ती परवानगी रद्द केली होती. त्या अगॅस्ट मोंटारो ह्यांनी जिल्हा न्यायालयात दाद मागितली होती. जिल्हा न्यायालयाने त्यामध्ये स्थगिती आदेश दिले होते. दरम्यानच्या बऱ्याच कालावधीत दावा कोर्टात चालल्यानंतर मे स्थगिती आदेश रद्द बातल ठरले. त्यानंतर

त्यांनी रेग्युलायझेशनचा प्रस्ताव सबमिट केला होता. तो प्रस्ताव काही कागदपत्रा अभावी अपूर्ण होता. म्हणून तो प्रस्ताव नाकारण्यांत आला होता. त्यानंतर त्यांनी आर्किटेक्टची आपली लिस्ट आहे त्या लिस्टनुसार डॉक्युमेंटचा डिटेल् प्रस्ताव सबमिट केला होता. त्या प्रस्तावाची तांत्रिक छाननी मागच्या महासभेत झाली होती. तो प्रस्ताव रेग्युलायझेशनसाठी आहे असे मी आपल्याला उत्तर दिले होते. त्या महासभेच्या नंतर तो प्रस्ताव मंजूर करण्यांत आलेला आहे. आणि त्या मंजूरीनुसार वरचे सेकंड फ्लोअरचे जे अॅक्सेस बांधकाम होते ते बांधकाम मनपाच्या प्रभाग कार्यालयाकडून तोडण्यांत आलेले आहे.

डॉ. राजेंद्र जैन :-

धन्यवाद साहेब. मीने जो सवाल किए वह अभी तक अनुत्तरीत है। आपने बोला परमिशन दिया उसपे अतिरिक्त बांधकाम हुआ तो कोर्ट में कैसे गया। मेरा पहला सवाल यही था की मुझे यह बताया गया है की इन लिगल बांधकाम में जबतक बिल्डींग बनती है तबतक इनलिगल कंस्ट्रक्शन टाऊन प्लानिंग के पास जाता है और बनने के बाद में अतिक्रमण के पास जाता है। तो जब बन रहा था और इनलिगल बन गया। तो जिम्मेदारी किसकी थी। मैं जिम्मेदारी की बात कर रहा हूँ।

सत्यवान धनेगावे :-

मिरा भाईदर मनपा में प्रभाग अधिकारी सबका आते हैं। जिम्मेदारी की बात नहीं है।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

आप पहले नियम पता किजिए। मुझे यह बताया गया की बिल्डींग बनने तक अगर गलत काम होता है तो उसकी जिम्मेदारी टाऊन प्लानिंग की और बनने के बाद अतिक्रमण की। यह बराबर है या गलत है।

सत्यवान धनेगावे :-

इसमें पहले रिपेयर परमिशन दिया गया था। रिपेयर परमिशन के तहत उन्होंने बांधकाम किया इसलिए वह मॉटर चल रहा था।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

रिपेयर परमिशन अंतर्गत दिया गया बांधकाम गलत तरीकेसे वाढीव काम किया गया तो उसकी जिम्मेदारी किसकी थी?

सत्यवान धनेगावे :-

उसको नोटीस दिया था।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

नोटीस देने के बाद भी बन गया।

सत्यवान धनेगावे :-

उसका रिपोर्ट परमिशन रद्द किया था। सब प्रोसेस रेकॉर्ड पे है।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

नोटीस बनने के बाद दिया या बनते समय दिया।

सत्यवान धनेगावे :-

नोटीस बनते टाईम ही दिया जाता है।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

जिसने आपको नोटीफाय किया वह पेपर दिखाईए।

सत्यवान धनेगावे :-

प्रभाग कार्यालय और मेरे ऑफिस में जो भी रेकॉर्ड है वह आपको कभी भी मिलेगा।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

इस आन्सर में नहीं है। आपने उसको तीन बार उसको रिवाइज करने से इन्कार किया। तो चौथी बार उसको कैसे परमिशन दिया।

सत्यवान धनेगावे :-

जब भी तीन बार इन्कार किया वह रेकॉर्ड पे है, कागज नहीं दिया, आर्किटेक्ट से प्लान नहीं डाला एक बार सिर्फ ऑप्लिकेशन किया था, ओनरशिप सब पेपर है वह नहीं दिया। तिसरी बार.....

डॉ. राजेंद्र जैन :-

मेरी जानकारी में आपने ही बताया की उसे पॉसीबल नहीं है, इसलिए नहीं दिया है।

सत्यावान धनेगावे :-

ऐसा स्टेटमेंट मैंने नहीं दिया। जब तक डिमोलेशन नहीं तब तक रेग्युलायझेशन है। यह कायदेका प्रावधान है।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

जब आपने तोडने का आदेश एक बार दे दिया उसके बाद में उसने रेग्युलायझेशन प्लान डाला तो यह कौनसा कानून है। अगर रेग्युलायझेशन का ऑप्लिकेशन डाली जाएगी तब तक उसको तोड नहीं सकते।

सत्यवान धनेगावे :-

ऐसा नहीं है। कोई भी कंस्ट्रक्शन इनलिगल होता। जब तक डिमॉलिशन नहीं होता तब तक रेग्युलायझेशन का ऑप्शन ओपन रहता है।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

ऑप्शन ओपन रहता है लेकिन तोड़ने का ऑप्शन चालू है की नहीं है।

सत्यवान धनेगावे :-

जो बांधकाम रेग्युलाईज हुआ उसके अलावा एक्सेस कंस्ट्रक्शन था वह कार्पोरेशनने तोड़ दिया।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

बिच में आपने कहाँ था अभी रेग्युलायझेशन हो रहा है इसलिए इसको नहीं तोड़ेंगे। ऑप्लिकेशन पेंडींग है। ऑप्लिकेशन पेंडींग तक जो तोड़ा जा सकता था वह नहीं तोड़ा यह आपने सही किया, गलत किया।

सत्यवान धनेगावे :-

जब तक रेग्युलायझेशन के बारे में डिस्मिशन नहीं होता तब तक तोड़ नहीं सकते।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

डिस्मिशन हो चुका है आप खुद ही कोर्ट में गए है तोड़ने का है, कोर्ट से स्टे हट गया है डिस्मिशन हो चुका है।

सत्यवान धनेगावे :-

उसके बाद हमारा डिस्मिशन हुआ।

डॉ. राजेंद्र जैन :-

आपका डिस्मिशन पहले हो चुका है। आपने तोड़ने का नोटीस दिया है। कोर्ट से स्टे हट चुका है। मा. आयुक्त साहेब मैं अपने पॉइंट आपके सामने रखे है आशा है आप समझेंगे।

सत्यवान धनेगावे :-

रेग्युलायझेशन का ऑप्लिकेशन हमारे पास पेंडींग था। उसके उपर डिस्मिशन नहीं होता तब तक हम कुछ नहीं कर सकते। रेग्युलायझेशन का डिस्मिशन होने के बाद.....

डॉ. राजेंद्र जैन :-

मैं आयुक्त महोदय ये यही बात पक्की करने की बोल रहा हूँ की आपने तोड़ने का नोटीस दिया कोर्ट से स्टे उठ गया डी.पी.एल हो गया आप तोड़ सकते हो लेकिन रेग्युलायझेशन के अंड में आपने टाईम निकाला और आप कुछ नहीं कर पाए तो आपको तोड़ना पडा।

सत्यवान धनेगावे :-

टाईम निकालने की बात नहीं है। उसका ऑनरशीप है उसका प्लॉट एरिया है। उसका एफ.एस.आय. एन.टायटल है उसका जो हक है उसको देना है।

नगरसचिव :-

प्रश्न क्र. २४.

गिता जैन :-

सर यह अन ऑथर्राईज था इनलिगल का जो चल रहा है। मैं आयुक्त साहेब के पास गई थी उन्होने ऑर्डर दिया था। लेकिन उसके बाद भी जो इनलिगल कंस्ट्रक्शन कम्प्लिट हुआ। आज भी वो वही है। यह बन रहा था तब से आपके नोटीस में लाया जा रहा है। की यह इनलिगल है और उसके बाद भी कोई अक्शन नहीं होती। वह बहुत दुःखद है। और उसके बाद भी तोड़ने के ऑर्डर के बावजूद आज भी वह इमारत वैसे की वैसे खड़ी है। अधिकारी का कहना है वह लेडी हमे गाली देती है। हमे धमकी देती है। तो मैं यह समझी की भाईदर में इनलिगल कंस्ट्रक्शन करना हो तो यह रित अपनाई जाए।

मा. आयुक्त :-

उसको नोटीस दिया गया है। वह भी तोड़ने की कारवाई होगी। और तोड़ने की कारवाई करते समय जो भी लिगल प्रोसीजर है। जो भी संधी देना जरूरी है। वह देना भी जरूरी होता है। आपने बोल दिया और तोड़ दिया ऐसा नहीं हो सकता। उसकी इन्क्वायरी होगी। इन्क्वायरी होने के बाद अगर तोड़ना जरूरी है तो तोड़ा जाएगा। और उसके लिए जो ड्यू प्रोसेस ऑफ लॉ फॉलो करना है वह किया जाएगा। जो पहला क्वेशन पुछा गया था। आपका क्वेशन अलग बारे में है। उसके लिए अलगसे सवाल उठाना ज्यादा अच्छा रहेगा।

शरद पाटील :-

मा. आयुक्त साहेब विषय वेगळा असू द्या. पण ह्या शहरामध्ये अनधिकृत बांधकाम होतात. आपल्या अधिकाऱ्यांना माहित असते ते झाल्यानंतर ती पूर्णपणे होतात. मुंबईमध्ये कॅम्पाकोलामध्ये चालले आहे तसा विषय मिरा भाईदरमध्ये होते. बिल्डर बांधून जातात. लोक तिथे राहायला येतात. आणि नंतर आपण तिथे कारवाई करायला जातो. हे चुकीचे आहे. तुम्ही बिल्डर असताना करा. लोकांना त्याचा नाहक भुर्दंड होतो. आपण त्या बिल्डींग समोर नोटिस लावत नाही की ही बिल्डींग इनलिगल आहे. ह्याच्यात फ्लॅट घेऊ नका. तशी तुम्ही तरतूद करा. त्यांच्यासमोर बोर्ड लावा की ही बिल्डींग इनलिगल आहे. त्याच्यात फ्लॅट घेऊ नका. घेतल्यास महानगरपालिका जबाबदार राहणार नाही.

मा. आयुक्त :-

ठीक आहे. त्याप्रमाणे देखील करण्यांत येईल. आपण काय केलेले आहे. ज्या बिल्डींग आपल्याला अनधिकृत निदर्शनास आल्या. त्या आपण सिल केल्या. तिथे कोणी घेऊ नये. ह्याशिवाय संबंधित सबरजिस्टरला कळवले की ह्याचे रजिस्ट्रेशन आल्यानंतर आपण ते नाकारा. आपण जे म्हणता जनजागृती

मिरा भाईदर शहरामध्ये आपले जे हॉर्डिंग आहेत. त्याच्यावर देखील लावण्यांत येईल आणि सर्व्हे पण करण्याच्या बाहेर ज्या अनधिकृत इमारती आहेत त्याचे देखील पॅम्पलेट लावण्यांत येईल.

गिता जैन :-

सर मैं आपको याद दिलाऊ की जब वह बन रहा था। तब भी मैंने कहा था की यह बन रहा है आप रोख लीजिए।

मा. महापौर :-

ठीक है।

शिल्पा भावसार :-

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलू इच्छिते. ६० फुट रोडवर गणपती मंदिराच्या समोर माधव संस्कार केंद्र आहे. जोशी निकेतनच्या बाजुलापण तेथे इनलिगल इमारतीचे काम चालू आहे. त्याच्यावर कारवाई करावी अशी माझी अपेक्षा आहे.

मा. महापौर :-

ठीक आहे.

नगरसचिव :-

प्रश्न क. २५ डॉ. रमेश धरमचंद जैन ह्यांचा प्रश्न आहे.

रमेश जैन :-

मा. महापौर मॅडम, मा. आयुक्त साहेब धन्यवाद. मेरा प्रश्न था, मनपाचे उत्पन्न वाढवण्याच्या दृष्टिने मोकळ्या जागेवर कराचे परिणामकारक वसूली होण्याच्या दृष्टिकोनातून कोणतेही जमिन मालक विकासकाकडून मोकळ्या जागेवरील कराचा भरणा केल्याशिवाय सुधारित बांधकाम मंजूरी, जोत्याचा दाखला, भोगवटा दाखला देण्यांत येऊ नये. असे निर्देश देणारे आदेश मा. आयुक्त साहो, ह्यांनी ह्यांचेकडील आदेश क्र. मनपा/१४३/२००८-२००९ दि. २२/१२/२००८ व आदेश क्र. मनपा/आयुक्त/२९४/२००९-१० दि. २३/१२/२००९ ने नगररचना विभागास दिले होते हे खरे आहे का? मॅडम यह प्रश्न मैंने पुछा था। उसका जवाब दिया। सोबत यादी जोडून देत आहे. मैं प्रश्न क्या पुछ रहा हूँ और यादर दे रहे है। मैंने प्रश्न पुछा था पूर्व आयुक्त जाधव साहबने और शिवमूर्ती नाईक साहबने ओपन लॅन्ड कर वसुली के लिए आपको कुछ पत्र लिखा है क्या? उन्होंने लिखा सोबत यादी जोडून देत आहे. उसका उत्तर हॉ या ना मैं होना चाहिए। उसके बाद मैंने कर विभाग से बार बार कोशिश की इसका जवाब नहीं दिया। उसके लिए दो महिने निकाले। उसके बाद अतिक्रमण विभाग को पत्र दिया तो अतिक्रमण विभागने बोला की हमने कर विभाग को पत्र दिया है। संपूर्ण लिस्ट दी है, उसके हिसाबसे करआकारणी लिया जाए। आज तक कुछ जवाब नहीं मिला। जो लिस्ट मिली है वह अधुरी लिस्ट है। उसमे कुछ नहीं है। उसके बाद मैंने सचिव महोदय को पत्र डाला की मेरा प्रश्न आ रहा है आप कर विभाग को पत्र लिखके वापस उसका जबाद दिया जाए। देढ साल हो गया है, उस पत्र का जवाब नहीं मिला। किन किन बिल्डरने कौन से विकासकर्ता ने कौनसा टॅक्स बकाया है। अगर दिया है तो कौनसी रिसिप्ट नंबर दी थी कौनसे साल मे कितना दिया है, उसका रेकॉर्ड मेरे को नहीं दिया। आपने मेरे को पत्र का क्या जवाब दिया था। टॅक्स डिपार्टमेंटवाले मेरेसे बात करे।

सत्यवान धनेगावे :-

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलतो. डॉ. रमेश जैन साहेबांनी प्रश्न विचारला आहे. पहिला प्रश्न मनपाचे उत्पन्न वाढविण्याच्या दृष्टिकोनातून मोकळ्या जागेच्या कराची परिणामकारक वसूली होण्याच्या दृष्टिकोनातून कोणत्याही जमिन मालक, विकासकाकडून मोकळ्या जागेवरील कराचा भरणा केल्याशिवाय सुधारित बांधकाम मंजूरी देण्याचा दाखला, भोगवटा दाखला देण्यांत येऊ नये असे निर्देश देणारे आदेश मा. आयुक्त साहो ह्यांच्याकडील आदेश क्र. मनपा/आयुक्त/२९४/२००९-१० दि. २३/१२/२००९ ने दिले होते काय? हे आदेश दिले होते हे खरे आहे, ह्याबाबत २००८ पासून किती बांधकाम परवानग्या दिलेल्या आहेत त्याबाबतचा सर्व तपशिल कर विभागाला दिलेला आहे. ती यादी आपणांस सुध्दा उपलब्ध करून दिलेली आहे. दुसरा प्रश्न आहे. असल्यास १/४/२००८ ते ३१/३/२०१३ पर्यंत नगररचना विभागाकडून दिलेला सुधारित बांधकाम परवानगी दाखला जोत्याचा दाखला प्रत्येक वर्षवार मिळावा ही माहिती दिलेली आहे.

रमेश जैन :-

धनेगावे साहब मुझे कर विभाग के दिपक सावंत साहब से बात करना है। आपसे बात करने का कोई मतलब नहीं है।

सत्यवान धनेगावे :-

मा. आयुक्त साहो, ह्यांचे आदेश असताना मोकळ्या जागेवरील कराची पावती वसुली न केल्याने मनपाचे कोट्यावधी रुपयाचे आलेल्या नुकसानीस जबाबदार कोण आहे. व्हेकेन्ट अँड टॅक्सच्या बाबतीत सांगू इच्छितो. बांधकाम परवानगी दिल्यानंतर बांधकाम परवानगी दिलेली तारीख, भोगवटा दाखला आणि प्रथम कर आकारणी ह्या कालावधीसाठी ह्या टॅक्सची आकारणी असते. त्यामुळे ह्या मोकळ्या जागेच्या कर आकारणीमध्ये महापालिकेचे नुकसान आजपर्यंत झालेले नाही. फक्त टॅक्सची वसूली कॅरी ऑन होत असते आणि प्रलंबित राहिल्याने ती करण्यांत येणार आहे. त्यामुळे मनपाचे सद्यस्थितीत नुकसान झालेले नाही. व्हेकेट लॅन्डच्या संदर्भात

रमेश जैन :-

व्हेकेन्ट लॅन्ड का २००८ से आपने चालू किया है। उस समय कितने बिल्डर और विकासको का बाकी था। कई बिल्डर तो भाग गये आप लोगोने टाईमपे उनको नोटीस नहीं दिया। अब उनका वसूल कौन करेगा।

सत्यवान धनगावे :-

प्रॉपर्टी टॅक्स और रेग्युलर टॅक्स वसुली जैसा कॉर्पोरेशन करता है। यह कॉर्पोरेशन के लिए २००८ से नया टॅक्स है। तो नए टॅक्स क सिस्टम ऑपरेट करने के लिए साहजिकच एक दो साल शुरू का जो पिरेड है एस्टाब्लिशमेंट के लिए जाता है। किसी का नुकसान नहीं हुआ और सबका डिमांड नोट दिया गया है।

रमेश जैन :-

आपने २००८ का २०१२ में वसूल किया क्या? उसपे ब्याज लिया क्या आपने? जब एक छोटासा व्यक्ति पाणी बिल नहीं भरता तो उसका नल कनेक्शन काट देते हो। नोटीस लगा देते हो। उसका बोझा बिस्तर बाहर फेक देते हो। तो इनके लिए क्या किया?

मा. आयुक्त :-

२००८-०९ में तत्कालीन मा.महासभा में एक निर्णय लिया था की महानगरपालिकेचे उत्पन्न वाढविण्यासाठी ज्या ठिकाणी आपण बांधकाम परवानगी देतो त्या ठिकाणी आपण मोकळ्या जमिनीच्या कराची आकारणी करावी. त्यानुसार सुरुवातीला २००८-०९ मध्ये जेव्हा अंमलबजावणीला सुरुवात झाली तो विषय नविन होता. रिकव्हरी थोडी कमी होती. ते मान्य करायला काही हरकत नाही. पण जसजशी रिकव्हरीची सिस्टम सेट झाली. त्यानुसार रिकव्हरी वाढायला लागली. जेव्हा मागच्या वर्षी मा.महासभेमध्ये हा मुद्दा उपस्थित झाला होता. त्यावेळेस मी सांगितले होते की, मी प्रत्येक गोष्टीचा आढावा घेईन. त्यानुसार मी मालमत्ता विभागाचा आणि ओपन लॅन्ड टॅक्स ह्याची वसुली ह्याची आकारणी आणि एकंदरीत रूपरेषा निश्चीत करून दिलेली आहे. त्यानुसार आता निर्णय घेतलेला आहे. जोपर्यंत ओपन लॅन्ड टॅक्सची वसुली होणार नाही तोपर्यंत त्या मालमत्तेची कराची आकारणी करणार नाही. जेणेकरून विकासक आणि बिल्डर जो असेल त्याला ते भरावे लागेल. हे मी सांगतो. १/४/२००८ नंतर कमेसमेंट सर्टिफिकेट दिलेल्या किंवा ओ.सी. न दिलेल्या प्रकरणामध्ये दुसरा मुद्दा एखादा रिव्हाईज परमिशनला आला तर रिव्हाईज परमिशनला देखील जोपर्यंत ओपन लॅन्ड टॅक्स भरणार नाही. तोपर्यंत त्याला परवानगी देणार नाही. किंवा एखादा टी.डी.आर. लोडींगच्या परवानगीसाठी आला तर त्यालासुध्दा हीच कार्यपध्दती अवलंबविण्याचा निर्णय आपण घेतलेला आहे. ह्यामध्ये ह्याशिवाय अंतर्गत फेरबदल असतील किंवा त्याला ओ.सी. घ्यायची असेल ह्याही वेळेस आपण त्यांना जोपर्यंत व्हेकेन्ट लॅन्ड टॅक्स भरणार नाही. तोपर्यंत कुठलीही परवानगी देणार नाही, असा निर्णय घेतलेला आहे. ह्या प्रकरणाचा सगळा आढावा नगररचना विभाग आणि मालमत्ता करामध्ये हा समन्वय साधण्यांत आलेला आहे. ओपन लॅन्ड टॅक्सची दरवर्षी रिकव्हरी नोटीस जाईल ती सुध्दा तरतूद करण्यांत आलेली आहे. आपल्याकडे संगणकामध्ये फक्त मालमत्ता कराच्याच डिमांड नोटीस निघत होत्या. पण त्या संगणक प्रणालीमध्ये फेरबदल करून करासोबतच ओपन लॅन्ड टॅक्सच्या नोटीस निघतील अशी आपण व्यवस्था केलेली आहे. आणि ह्याचा परिणाम असा झाला की आपण दरवर्षी वसुली करतो. त्यामध्ये वाढ झालेली आहे. गतवर्षी फक्त आठ कोटी झाले होते. ह्यावर्षी नविन कार्यप्रणालीमुळे ११ कोटी २१ लाख झालेले आहेत. ह्या जून महिन्यामध्ये साधारणतः चार कोटी वसूल झालेले आहे. थोडक्यात आपली रिकव्हरी डिफर झालेली आहे. पण ती रिकव्हरी झाली नाही आणि नुकसानरन झाल अशातला प्रकार नाही. दुसरा प्रश्न असा होता एखादा विकासक इथून निघून गेला तर तो रिकव्हरी कोणाकडून करावी. पण निघून जरी गेला तरी त्याचे आमच्या मनपामध्ये कोठेतरी प्रोजेक्ट चालू आहेत अशा केसेस फार कमी आहेत. त्यांच्याकडून देखील ह्या व्हेकेन्ट लॅन्ड टॅक्सची वसुली केल्याशिवाय त्यांच्या कोणत्याही प्रकल्पाला, प्रस्तावाला आपण मंजुरी देणार नाही. अशी भूमिका प्रशासनाने घेतलेली आहे. रिकव्हरी आज जरी झाली नाही किंवा सुरुवातीला स्लो होती आता त्याला गती दिली आहे. ह्या गतीमुळे निश्चीतपणे आपल्याला आपले ध्येय गाठता येईल आणि मनपाचे नुकसान होणार नाही. ह्याची दक्षता घेण्यांत येईल.

प्रेमनाथ पाटील :-

मा. महापौर मॅडमच्या परवानगीने बोलतो, डॉ. रमेश जैन ह्यांच्या प्रश्नावर बोलतो. काही ठिकाणी आपण ओ.सी. न घेता त्यांना सरसकट टॅक्स आकारणी करतो. मग ओ.सी. घेण्याची काही पध्दत नाही का? ओ.सी. न घेणे म्हणजे इनलिगल झाले त्याला आपण शास्ती लावतो.

मा. आयुक्त :-

ह्याच्यामध्ये मा. महासभेने निर्णय घेतलेला होता. त्या निर्णयाच्या अनुषंगाने तत्कालीन आयुक्तांनी जे आदेश काढले होते त्यानुसार आता इकडे ओ.सी. घेतली नाही म्हणून आपल्या मनपाचे नुकसान होते. म्हणून आपण असा ठराव केला होता की आपण शास्ती लावावी आणि शास्ती लावून वसुली करावी. म्हणून शास्ती लावून वसुली करतो. आणि ज्या क्षणी त्याला ओ.सी. मिळेल आणि ओ.सी. मिळाल्यानंतर शास्ती ज्या तारखेला मिळाली असेल त्याची शास्ती आपण रद्द करतो. त्याच्यामुळे आपण जर विचार केला की ओ.सी. घेतली नाही म्हणून आपण आकारणीसुध्दा करू नये. तर ते योग्य होणार नाही आणि महासभेने जो ठराव केलेला आहे. त्या ठरावाच्या विसंगत भूमिका घेतली होती.

प्रेमनाथ पाटील :-

साहेब, आपल्याकडे आर्किटेक्ट काय करतात. अँजपर प्लान ह्यांच्या लेटरहेडवर लिहून देतात की, हे प्लाननुसार बरोबर आहे. ओ.सी. न घेता काही ठिकाणी यु.एस.सी.चा फ्लॅट न देता यु.एस.सी. फ्लॅट आपण देताना महानगरपालिकेचे पत्र आले पाहिजे की २०० स्केवअर मिटरची जागा मला यु.एस.सी. डिपार्टमेंटला मिळाली आहे असे पत्र यायला पाहिजे. ह्या पत्रानुसार नगररचनेचे हे पत्र टॅक्स डिपार्टमेंटला वर्ग करायला पाहिजे की, ह्यांची यु.एस.सी. चे जेवढे क्षेत्र आहे तेवढे मिळाले आहे. मिरा भाईंदरमध्ये असे बरेच विकासक आहेत जे यु.एस.सी. फ्लॅट न देता फक्त वास्तुविशारदच्या लेटरपॅडवर अँजपर प्लान याप्रमाणे फक्त लिहून दिल्याने त्यांना शास्ती न आकारता कर आकारणी करण्यांत आलेली आहे. मग ते नगररचनेचे काम नाही का की त्यांनी यु.एस.सी. फ्लॅट दिले आहेत की नाही दिले. त्याची शहानिशा करून त्यांनी टॅक्स विभागाला पत्र दिले पाहिजे.

मा. आयुक्त :-

ह्यामध्ये आपली सुचना चांगली आहे की, मालमत्ता विभागाने कर आकारणी करण्यापूर्वी नगररचना विभागाचा अभिप्राय घ्यावा. तिथून आपले नविन धोरण बदलत गेले आहे. त्याची दखल घेण्यांत आलेली आहे. आता आपण जी काही मालमत्ता कराची आकारणी करू. नगररचना विभागाचा अभिप्राय आल्याशिवाय ती आकारणी होणार नाही हे सुध्दा स्पष्ट करू इच्छितो.

प्रेमनाथ पाटील :-

ह्या विषयाचे मी पत्र दिले.

मा. आयुक्त :-

उत्तर मिळेल ना.

डॉ. राजेंद्र जैन :-

मा. महापौर मॅडम, मा.आयुक्त महोदय आपने बोला कोई नुकसान नहीं हुआ है। सबसे पहले आप ऑडिट डिपार्टमेंट की रिपोर्ट देख लो। आपकी कर आकारणी पुस्तिका तयार नहीं है। आपका जो रिपोर्ट है उसमें ही आप देख रहे हैं। जबतक कर आकारणी पुस्तिका नहीं बनेगी यह जो ११ करोड, २० करोड, ३० करोड, ४० करोड, ५० करोड यह पैसा कब तक जा सकता है। याने की हम पूरे नुकसान पे हैं। जबतक कर आकारणी पुस्तिका बनेगी ही यह आपका बी.एम.सी. अॅक्ट बोलता है। मैं मानता हूँ आपके आने के बाद और आपके आने के पहले जो प्रथा चालू की है। इसके लिए बहोत रिकव्हरी हो रही है। हमने स्थायी समिती में सूचना दी की दो महिने के अंदर पुस्तिका वह पूरी होगी, तभी आपको मालूम होगा ६६ करोड, ६८ करोड है। बहोत ज्यादा अमाऊन्ट इसमें है। दुसरी बात धनेगावे साहेब बोले नुकसान नहीं हुआ है। आपका प्रस्ताव क्या है। आपने रिकव्हरी करने का नोटीस दिया तो नोटीस देने के दिन का इंटररेस्ट दे सकते हैं। २०१० का नोटीस दिया और २००८ से ड्यू था। २ टक्के इंटररेस्ट ले नहीं सकता तो डेफीनेटली हम लॉस्ट में ही है। आपसे अपेक्षा है आप अधिकारीयों की गलती सामने लाए। आपने जो नोटीस दिया २०११ में १२ नोटीस दे रहे हैं तो आप इंटररेस्ट वसूल नहीं कर सकते. बिकॉज इट वॉज यूअर मिस्टेक डॅड यूअर नॉट सर्व्ह द नोटीस तो लॉस्ट तो हुआ ही है। अभी जो काम चल रहा है वह बराबर चल रहा है। लेकिन अभी भी यह बात एक साल हो गया है। यह भी कर आकारणी पुस्तिका भरनी चाहिए और कर आकारणी पुस्तिका संविधान के हिसाबसे बननी चाहिए तो अभी तक बनी नहीं। इतने लोग देनेवाले हैं पूरे भाईंदर का एरिया कमर्शियल, ओपन लॅन्ड टॅक्स जबतक इन चार्ज कव्हर नहीं होगा तब तक आपको मालूम कैसे पडेगा किससे टॅक्स लेनेका है किससे नहीं लेने का है। आपसे आग्रह है की कर आकारणी पुस्तिका बिनस सारा वादविवाद व्यर्थ है। आप स्ट्रिक ऑर्डर किजीए कैसे भी करके कर आकारणी पुस्तिका तयार किजीए। तभी हमको मालूम पडेगा कितना नुकसान हुआ है।

मा. आयुक्त :-

कॉम्प्युटर सॉफ्टवेअर जो तयार किया है उसमें आपने जो मुद्दा लिया कर आकारणी पुस्तिका का वह भी उसमें फेरबदल किया है। पहले मॅन्युअली काम करते थे। हर चीज का हार्ड कॉपी रखना पडता था। अभी कॉम्प्युटर राईज कर रहे हैं। तो कॉम्प्युटर का प्रिन्ट लेके उसका बाइन्ड करेंगे और उसको सर्टिफाय करवा लेंगे तो आपके मुद्दे का निराकरण हो जाएगा।

नगरसचिव :-

आजच्या महासभेकरीता सन्मा. डॉ. नयना मनोज वसानी ह्यांची लक्षवेधी आलेली आहे. सदरची लक्षवेधी मी मा. महापौरांना सुपुर्द करतो.

नरेंद्र मेहता :-

मा. महापौर मॅडम बोलायला दिल्याबद्दल आपले आभार. कायद्यात कुठे बदल होऊ नये. प्रेमनाथ पाटील साहेबांनी जो विषय आता मांडला. प्रेमनाथ पाटील साहेब विसरले असतील म्हणून त्यांना आठवण करून देतो. ह्या मिरा भाईंदर मध्ये ऑक्युपेशन सर्टिफिकेट घेण्यासाठी ६-६ ते १२-१२ महिने ओ.सी. भेटत नाहीत त्याला वेगवेगळी कारणे असतील. आपला मुळ हेतू होता की जे अनधिकृत इमारती आहे. त्यांना शास्ती लावावी. ज्यांनी ओ.सी. घेतले नाही त्यासाठी कायद्यात वेगळी तरतूद आहे. ओ.सी. घेतली नाही. म्हणून आपण काय कारवाई करायला पाहिजे. पण शास्ती त्यांना लावता येणार नाही. म्हणून माझ्या माहितीप्रमाणे

भगवती शर्माने तो विषय महासभेत आणला होता. एखादी बिल्डींग अधिकृत असतील तर त्याचा भुर्दंड लोकांना पडू नये. कारण बिल्डरने ओ.सी. घेतले नाही. एखादी लिगल बिल्डींग असेल त्याला शास्ती लावू नये असा निर्णय झालेला आहे. त्याच्यात बदल करू नये म्हणून माहिती देतो. आपण आर्किटेक्टचे सर्टिफिकेट घेतो. बिल्डींग लिगल आहे म्हणून शास्ती लावण्यांत येऊ नये. ह्या लोकांनी ओ.सी. घेतली नाही म्हणून ह्या लोकांकडून अनामत रक्कम अॅडव्हान्स भरून घेतो. ओ.सी. घेतल्यावर ते रिफंडेबल करतो. ती अमाऊन्ट लाखो रुपयामध्ये आहे. म्हणजे आपण तरतूद केलेली आहे. त्याव्यतिरीक्त आपल्याला वेगळी काय कारवाई करायला पाहिजे. ओ.सी. घेतली नाही म्हणून वेगळी तरतूद आहे. त्याप्रमाणे साहेब आपण कारवाई करावी. आता राहिला प्रश्न ओप लॅन्ड टॅक्समध्ये परवानगी दिल्यानंतर ओपन लॅन्ड टॅक्स लावायला सुरु करतो. जिथपर्यंत त्याला कर आकारणी होत नाही. तिथपर्यंत ओपन लॅन्ड टॅक्स चालू असला पाहिजे. त्यामधून आपण सोपा मार्ग काढला होता की, ज्यावेळी आपण कर आकारणी करतात जी काही आपली अॅरियर्स असेल ते बिलामध्ये समावेश झाला पाहिजे. आणि मग ते नागरीकांना बिल्डरकडून घ्यावे की काय तो त्यांचा विषय ह्यासाठी चर्चा पण झाली. परंतु इम्प्लीमेंट काही होत नाही. बिल्डर निघून जातात. लोकप्रतिनिधी येतात, बोलतात ह्याची कर आकारणी करा. बिल्डरनी हा कसा भरला मग आपण कर आकारणी करत नसतो. सावंत साहेबांनी अनेक इमारतीला मागची थकबाकी असताना नविन कर आकारणी केलेली आहे. एक बाजूला आपण निल बिल देतो आणि दुसऱ्या बाजूने बोलणार आमचे बाकी आहे. हे दोन्ही चालू शकत नाही. उदा. ह्या शहरामध्ये डी.बी. रिअॅलिटी, बालाजी असे मोठमोठे कॉम्प्लेक्स आहेत. त्यांचे पण लाखे रुपये बाकी आहेत ना. मला वाटत नाही. मोठ्या कॉम्प्लेक्सला ५० लाख, ६० लाख बोलले तर ती रक्कम छोटी होणार आहे. आज विषयपण आणला आहे. मलप्रवाह कर काही भागातून कमी कराव. शेवटी उत्पन्नाची बाजू वाढली पाहिजे. खर्च कमी करून चालणार नाही. आपण कोणावर एक्स्ट्रा भुर्दंड टाकत नाही. कोणत्या प्रकारची कारवाई ह्या महानगरपालिकेमार्फत केली नाही की आमचे ५० लाख, ४० लाख बाकी आहेत. परंतु ज्याचे ५०० रुपये बाकी आहेत. त्यांच्यावर कारवाई झाली. ज्याचे २००० बाकी अशा लोकांवर देखील कारवाई झाली. परंतु ज्यांचे ५ लाख, ५० लाख, २५ लाख बाकी आहेत त्यांच्यावर कारवाई झाली नाही. बिल्डर येतो तो आपला हिशोब संगनमत करतो. नविन कर आकारणी करून घेतो. मागची पाटी पुसली, अशाप्रकारे हे कामकाज चालू आहे. आजही त्यांना विचारले तर त्यांच्याकडे अॅक्युरेट लिस्ट नाही. २००८ पासून अनेक कॉम्प्लेक्स चालू आहेत. काहीचे पझेसन झाले आहेत. काहीचे नाही झाले. पण कर आकारणी अजून झालेली नाही. उदा. दोन बिल्डींगला आपण कर आकारणी केली. १० बिल्डींगचे कॉम्प्लेक्स ८ आहे. पण त्याचे काही सिस्टमच नाही. मग १० चे पाठवायचे की ८ चे पाठवायचे अशी काही प्रक्रिया आपल्याकडे नाही. मला वाटते आपला मोठा रेव्हेंयु व्हेस्ट होत चालला आहे. त्याच्यावर कोणाचे लक्ष नाही. आपल्याला विनंती राहिल इनलिगल इमारतीवर शास्ती लावा, ओ.सी. घेतली नाही त्याच्यावर शास्ती लावता कामा नये.

भगवती शर्मा :-

मा. महापौर मॅडम प्रश्न एकदम सही है। जिन बिल्डरों ने विभिन्न कारणोंसे ओ.सी. नहीं ली, जिससे इनलिगल कंस्ट्रक्शन नहीं है। बहोतसे ऐसे कॉम्प्लेक्स है जिसके अंदर में उन्होंने बिल्डींग बनाई बाद में कुछ बिल्डींग बनाई, कुछ की ओ.सी. ली, कुछ की पेन्डींग थी वह बाद में उस बिल्डरने लेली। बहोतसे प्रकरण ऐसे भी हैं उन बिल्डरों ने दुसरी जगह काम चालू किया यहाँ पे पजेशन दे दिया। पजेशन देने के बाद के अंदर के अंदर में वहाँ पे सोसायटी बहोत जगह के अंदर बनी। उसके बाद बिल्डर ओ.सी. की प्रक्रिया को फिलअप करता नहीं। वह काफी टाईम रहता है। यहाँ नॉन अॅक्युपेशन चार्ज लगाना शुरू हो जाता है। जिस समय के अंदर में ओ.सी. के प्रक्रिया के लिए आता है। बहोतसे नगरसेवक ऐसे हैं जो उसके पिछे लगते हैं। क्योंकि वॉर्ड के लोग उनके पिछे लगते हैं की हमारी ओ.सी. नहीं आयी। वो उसको फूल फिलअप करते हैं किसकी एन.ओ.सी. फायर इन एन.ओ.सी. वहाँ पे जाके एक मुद्दा अटक जाता है की उन बिल्डींगों में नॉन अॅक्युपेन्सी चार्ज लगा है। अब वो वहाँ के रहनेवाले बेचारे कैसे भरेंगे। बहोत सी ओ.सी. उनकी कारण से भी आप के पास अटकी है। बिल्डर किधर जाके अलग नाम से कंस्ट्रक्शन करने लग गया। बिल्डर वहाँ पे पाठपुरावा करता नहीं है। निर्दाश जो रहिवासी है जो कॉम्प्लेक्स वाले, सोसायटीवाले है। वह उसका परिणाम भूगत रहे हैं। रेव्हेंयु भी कम नहीं होनी चाहिए। लेकिन अनावश्यक टॅक्स किसी रहिवासी के उपर नहीं लगनी चाहिए। अगर ऐसे प्रकरण आपके आसपास किधर आते हैं और बिल्डर कही काम चालू करते हैं मैं यह नहीं बोल रहा हूँ की उनका रेव्हेंयु माफ करीए।

प्रभात पाटील :-

माझा एक मुद्दा आहे शिक्षण, आरोग्य, पाणी, रस्ते, गटार, दिवाबत्ती हे महानगरपालिकेचे सर्वात मोठे ध्येय आहे. सर्वानाच माहित आहे की, गेल्या आठवड्यात शाळा सुरु झाल्या. आपल्या पालिकेच्या मराठी माध्यमाच्या शाळा देखील सुरु झाल्या. दोन विषय आहेत की, मी गेली २२-२३ वर्षे इथे आहे सांगायला अतिशय वाईट वाटते की, आपण शाळा चालू होताना कधीही मुलांच्या हातात गणवेश दिलेले नाही. ह्यावर्षी सुध्दा दिले नाही. ते का होत नाही. मला माहित नाही. पण ह्यावर्षी देखील मुलांना गणवेश मिळाले नाहीत. जी शासनाकडून पुस्तक येतात ती देखील त्यांच्या हातात मिळाली नाहीत. आपण पुस्तक देत नाहीत. परंतु शासनाकडची पुस्तक त्यांच्या हातात पडली आहे की नाही हा मोठा मुद्दा आहे. दुसरी गोष्ट अशी आहे आपण दोन प्रस्ताव आपल्या बजेटमध्ये आणि एक ऐतिहासिक विषय म्हणून आपण दोन विषय बजेटच्या आधी पारीत

केले होते. एक आपण स्वतः आठवीचे वर्ग चालू करतो. त्यासाठी आपण संपूर्ण मिरा भाईंदर शहरामधल्या सातवीतून पास झालेल्या विद्यार्थ्यांचे दाखले रोखून ठेवले आहेत. ते विद्यार्थी नविन शाळेत जाऊ शकत नाही आणि आपण देखील शाळा ओपन केल्या नाहीत. आपण कोणाच्या भावनांशी खेळतो. जे विद्यार्थी त्यांचे भविष्य आणि भवितव्य घडवण्यासाठी आपण शाळा चालवतो. लाखो रूपये खर्च करतो. शाळा चालू होऊन आठवडा झाला. आपण त्याच्यात काय प्रयत्न केले. मला माहित नाही. त्यांच्या भविष्याला आपण खिळ घालतो. हा मुद्दा लक्षात ठेवावा. दुसरा मुद्दा म्हणजे आपण सेमी इंग्रजीचा निर्णय घेतला होता त्याचे काय चालू आहे. मॅडम, सगळ्यात मोठा विषय आहे. ह्या देशाचे नागरीक घडवण्याचा आणि जो नागरीक त्या शाळेवर आपल्या प्रशासनाचे पूर्ण दुर्लक्ष आहे. आपले प्रशासन अधिकारी शाळा सुरू व्हायच्या तोंडावर इथून निघून जातात आणि नविन अधिकारी येतो. ज्याला इकडे प्रस्थापित व्हायला बराच काळ जावा लागतो. हा मुद्दा देखील लक्षात घेतला पाहिजे की ज्या दिवशी शाळा चालू होणार आपल्याला नविन शिक्षण अधिकारी मिळाले. मध्यंतरी पिक्वर आला होता शिक्षणाचे काय? मी तर एवढच बोलून की मिरा भाईंदर शाळेच्या शिक्षणाचा बट्ट्याबोळच आहे. ह्या विद्यार्थ्यांची जर जडण-घडण झाली नाही तर त्यांचे पाप आपल्या माथ्यावर येईल. हे मला इथे नमूद करावेसे वाटते. आता आपले अधिकारी उत्तर देतील. हि प्रोसीजर चालू आहे. वरातीमागून घोडे काय कामाचे. अशा वेळेला मा. आयुक्त साहेब हे अधिकार आपल्या हातात का घेत नाही? संपूर्ण महाराष्ट्रामध्ये शिक्षण मंडळ बरखास्त झाले त्या शिक्षण मंडळाचे काय झाले. त्याचे अधिकार कोणाला दिले. हा विषय महासभेमध्ये आला का? ह्याचा पूर्ण दोष प्रशासनाने आपल्या माथी घ्यावा. आठवीच्या वर्गाचे आणि मुलांच्या युनिफॉर्मचे काय होणार त्याचे उत्तर द्यावे.

डॉ. आसिफ शेख :-

सन्मा. महापौर मॅडम, सन्मा. सदस्या प्रभातताई पाटीलने जो विषय मांडला आहे तो अत्यंत महत्वाचा विषय आहे. शाळेमधूनच देशाचे चांगले नागरीक तयार होत असतात. परंतु मिरा भाईंदर महानगरपालिकेमध्ये नगरपरिषदेपासून बघतो. नगरपरिषदेच्या वेळी देखील लक्ष नव्हते. आणि आता महानगरपालिका स्थापन झाल्यावर देखील पालिकेचे दुर्लक्ष झालेले आहे. शिक्षण खात्याचा बोजवारा उडाला म्हणण्यापेक्षा बट्ट्याबोळ झाला आहे अशा भाषेत देखील खंत व्यक्त केली तरी ती अतिशयोक्ती होणार नाही. १ ली मे ७ वी पर्यंत विद्यार्थी शिकत आहेत. आम्ही हा विषय तीन वर्षांपासून धरलेला आहे. परंतु प्रशासन का उदासिन आहे ते समजायला येत नाही. शहरामध्ये जे गोरगरीब विद्यार्थी आहेत त्या गोरगरीब विद्यार्थ्यांच्या शिक्षणाचा आशा स्थान आपल्या महानगरपालिकेच्या शाळा आहेत. खाजगी शाळेत जे शिक्षक असते त्या दर्जाचे शिक्षण आपल्या महानगरपालिकेच्या शाळेत मिळत नाही. शाळा चालू होऊन एक आठवडा झाला. मुलांना अजून गणवेश मिळाले नाहीत. ज्या सुविधा द्यायला पाहिजेत त्या मिळाल्या नाहीत. ह्याच्या अगोदर शिक्षण अधिकारी मोहिते होते त्यांची बदली झाली. नविन शिक्षण अधिकारी देशमुख आलेले आहेत. आपल्याला महानगरपालिकेचे शिक्षणामध्ये अमुलाग्र बदल करायचे आहेत. मनपाचे शिक्षण सुधारायचे आहे. ७ वी चे विद्यार्थी पास झाले त्यांना खाजगी शाळेमध्ये प्रवेश मिळालेला नाही. आपली भूमिका अशी आहे की, ज्या सराऊन्डीगमध्ये ज्या खाजगी शाळा आहेत त्याटिकाणी आपल्या ७ वी च्या विद्यार्थ्यांना ८ वीच्या विद्यार्थ्यांनी प्रवेश घेतला पाहिजे. परंतु खाजगी शाळेने मा. आयुक्तांना, प्रशासन अधिकाऱ्यांना स्पष्ट भाषेमध्ये लेखी पत्र दिलेले आहे की आमच्याकडेच विद्यार्थी जास्त असल्यामुळे आम्ही पालिकेच्या विद्यार्थ्यांना सामावून घेऊ शकत नाही. आपण त्याची स्वतः व्यवस्था करावी. शासनाचे निर्देश आहेत स्पष्ट आदेश आहेत. जी.आर. निघाले आहेत की मनपामध्ये जर प्राथमिक शाळा चालू झाल्या असतील आणि माध्यमिक शाळा चालू करायच्या असतील तर शासनाची कोणत्याही प्रकारची परवानगीची आवश्यकता नाही. तरी देखील आपण का उदासीन आहोत कळत नाही. आपले ११०० ते १२०० कोटीची बजेट आहे. आणि शिक्षण विभागाकडे आपल्या विद्यार्थ्यांना दर्जेदार शिक्षण देण्यासाठी आपल्याकडे निधी उपलब्ध नाही. महासभेने ठराव केलेला आहे. आम्ही मागच्या महासभेत ठराव केलेला आहे. आम्ही मागच्या महासभेत १०० कोटींची तरतूद करायला सांगितले आहे. तरी तरतूद झाली नाही. मराठी माध्यमचे २८२ विद्यार्थी आहेत. त्यांना अजूनही प्रवेश मिळाला नाही. ऊर्दूचे २२१ विद्यार्थी आहेत. हिन्दी मिडीयमचे ३०० विद्यार्थी आहेत, गुजराती मिडीयमचे १०००-१२०० विद्यार्थी आठवीच्या शिक्षणापासून वंचित आहेत. आपल्या प्रशासन अधिकाऱ्यांनी सातवीच्या मुख्याध्यापकांना सांगितले आहे की, त्यांना एल.सी. देऊन टाका आणि मोकळे करा. म्हणजे त्या विद्यार्थ्यांनी बालमजूरीवर जायचे का? प्रशासनावर गुन्हा दाखल होण्याची तुम्ही वाट बघता का? शासनाचा नियम आहे की, आपण आपल्या स्तरावर आपली कॅपेसिटी आहे. आपल्याकडे फंड आहे. पण आपण शाळा सुरू करत नाही. मा. आयुक्त साहेब आपल्याकडे का उदासिनता आहे कळत नाही. प्रशासनाने खुलासा करावा की आतापर्यंत काय केल.

मा. महापौर :-

आसिफ शेख साहेब बसून घ्या. प्रशासन त्याचा खुलासा देईल.

लियाकत शेख :-

मॅडम हा ज्वलंत विषय आहे. त्यामुळे ह्याचा खुलासा झाला पाहिजे.

डॉ. आसिफ शेख :-

टाणे महानगरपालिका आयुक्तांनी तसेच नवी मुंबई महानगरपालिका आयुक्तांनी शिक्षण मंडळ बरखास्त करून नविन शिक्षण समिती स्थापन केलेली आहे. आणि त्याची जबाबदारी उपायुक्त दर्जाच्या

अधिकाऱ्यांना दिली आहे. त्याप्रमाणे आपण काय पुढचे करणार की नाही. ९ वी ते १२ वी पर्यंत पूर्ण करायचे आहे. त्यासाठी इन्फ्रास्ट्रक्चर उभे करायचे आहे. त्याच्यावर प्रशासन लक्षच देत नाहीत. आपल्याकडे अतिरिक्त आयुक्त आहेत सगळे आहे पण कामच होत नाही.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलतो की, सन्मा. आसिफ शेख साहेब बोलतात सेमी इंग्रजी आणि आठवीचे वर्ग दोन विषय आहेत त्यांच्यावर सभागृहाला मी माहिती देऊ इच्छितो की सेमीच्या दृष्टिने पूर्ण तयारी करून कार्यवाही चालू केलेली आहे. १९० शिक्षकांचे ट्रेनींग घेतले त्याप्रमाणे सेमी इंग्रजी सगळीकडे कार्यरत झालेले आहे. दुसरा मुद्दा आठवीच्या वर्गाबाबत त्याचा पण पूर्ण आढावा घेऊन तसेच शाळांचा आढावा घेऊन त्याचा प्रस्ताव शासनाकडे पाठवला आहे. त्यासाठी शासनाच्या परवानगीची आवश्यकता आहे. राज्यस्तरावर ह्याची मिटींग झाली. तेव्हा संचालकांनी सांगितले की मनपा क्षेत्रामध्ये कुठल्याही प्रकारे आठवीचे वर्ग सुरु करताना आमच्याकडे प्रस्ताव पाठवा. त्याप्रमाणे प्रस्ताव शासनाकडे दाखल केलेला आहे. त्याची परवानगी मिळाल्यानंतर निश्चित चालू करणार.

डॉ. आसिफ शेख :-

आपण चुकीची माहिती सभागृहाला देत आहात. शासनाचा जी.आर. आहे त्याच्यात शासनाचे स्पष्ट जी.आर. आहेत त्याच्यात शासनाच्या परवानगीची आवश्यकता नाही.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

मी चुकीचे अजीबात बोलत नाही. पूर्ण जाणीवपूर्वक बोलतो माहिती घेऊन बोलतो. शिक्षण अधिकारी राज्यस्तरावर मिटींगला गेले होते. त्यांना स्पष्ट सुचना दिल्या होत्या. त्यांनी आम्हांला रिपोर्ट केला. मा.आयुक्तां सोबत चर्चा झाली. शक्यतो त्यांनी नाही म्हटले तरी आपला प्रस्ताव जाऊ द्या. त्यांची मानसिकता आहे की, राज्यस्तरावर मनपा क्षेत्रामध्ये ८ वी चे वर्ग चालू करण्यांत येऊ नये. आपल्या मनपा क्षेत्रामध्ये त्याची गरज पाहता आम्ही आमचा प्रस्ताव पाठवला आहे.

रोहिदास पाटील :-

मा. महापौर मॅडम प्रश्न असा आहे तुमचा प्रस्ताव जाईल. पण आता जी ७ वी ची मुलं पास झाली आहेत त्यांना ८ वी त प्रवेश कुठे द्यायचा.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

आपल्याला गव्हर्नमेंटची परवानगी येत नाही आपण चालू करू शकत नाही.

डॉ. आसिफ शेख :-

मा. आयुक्त साहेब आपण दिशाभूल करता ह्या विषयावर दिपक सावंत ह्यांनी माझ्या समोर शिक्षण उप-संचालकांना फोन लावला. त्यांनी सांगितले की आमच्या परवानगीची अजिबात आवश्यकता नाही.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

सन्मा. सदस्य जेव्हा मा. आयुक्त आणि अतिरिक्त आयुक्त बोलतात तेव्हा दिपक सावंत ह्यांनी काय बोलले त्याला महत्व राहत नाही. जे रेकॉर्डवर आम्ही बोलतो त्यानंतर बाकीच्या गोष्टी खाजगीत चालल्या आहेत. त्याला काही व्हॅल्यू नाही. शासनाकडे प्रस्ताव पाठवला आहे. शासनाचा प्रस्ताव मान्य झाल्यानंतर शाळा चालू करण्यांत येईल.

डॉ. आसिफ शेख :-

शासनाच्या परवानगीची आवश्यकता नाही. आमच्याकडे जी.आर. आहे. तुम्हाला कोणत्या शिक्षण अधिकाऱ्यांने सांगितले आहे.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

मोहिते नावाचे शिक्षण अधिकारी.

डॉ. आसिफ शेख :-

नविन शिक्षण अधिकारी आले आहेत त्यांच्या बरोबर आमची चर्चा झाली. त्यांनी पण सांगितले अजिबात गरज नाही.

(सभागृहात गोंधळ)

निलम ढवण :-

साहेब राज्य शासनाच्या वतीने इथे सर्व सन्मा. सदस्यांना घर तिथे प्रत्येक व्यक्ती साक्षर होण्यासाठी अभियान चालू केले. आणि शाळाबद्दल विविध माहिती दिली गेली ती दिशाभूल होती का? जर शासनाने अजूनही परमिशन किंवा शाळासंदर्भात सिरियस नसेल. तर ही फक्त प्रशिक्षण देण्याची दिशाभूल होती का? त्याबाबतीत सिरियस का नाहीत.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

मॅडम ८ वी चे वर्ग चालू करण्याच्या दृष्टिने प्रयत्न चालू आहेत. तोपर्यंत आपल्याला मुलांच्या काही अडचणी असतील तर ह्या ठिकाणी बसून खाजगी शाळेत समावेश करू.

प्रभात पाटील :-

ती जी ८ वी ची मुलं म्हणता आसिफ शेख म्हणतात खाजगी शाळा प्रवेश देत नाहीत. आतापर्यंत अस झाल नाही. आपली मुल खाजगी शाळेत गेले आहेत. त्यांच्या ह्या मताशी मी सहमत नाही. परंतू आपल्याकडे ७

वी तून पास मुलांचे दाखले आपण रोखले आहेत. कारण आपल्या शाळा होतात म्हणून. मला एवढेच म्हणायचे आहे की शाळा सुरु होऊन आठवडा झाला आणि आपण कुठेच तयारीला लागलो नाही. आपण अजून प्राथमिक चर्चेत आहोत की त्यांची परमिशन येईल आणि आपण चालू करू.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

आपण शाळा चालू करण्याच्या दृष्टिने प्रयत्नशिल आहोत. परवानगी येत नाही तोपर्यंत आपण त्या मुलांना प्रवेश देण्यासाठी मदत करणार आहोत. दाखले रोखले नाहीत.

प्रभात पाटील :-

दाखले दिले नाहीत. तुम्ही कन्फर्म करा. अनिता पाटील तुम्ही ह्या विषयावर बोला. तुमच्या भागातले दाखले रोखले आहेत.

निलम ढवण :-

जून महिन्यात शाळा चालू होतात. त्याच्यापूर्वी ह्याची दखल घेतली गेली पाहिजे होती. बाकी काही गोष्टी सिरियस फॉलोअप होतो. त्या गोष्टी करून घेतल्या जातात. मुलांच्या शिक्षणांसाठी एवढे सिरियस का नाहीत.

प्रभात पाटील :-

मॅडम मी त्या क्षेत्रात खालच्या लेवलवर काम केले आहे. अनधिकृत शाळा देखील बंद केल्यानंतर त्या मुलांचे नुकसान होऊ देत नाही. त्यांना शासन दरबारी मदत केली जाते. त्यांना शाळेत पाठवलं जात. साहेब आपण आठवीचे वर्ग चालू करा. आपल्या विद्यार्थ्यांना काही होणार नाही. परंतु त्यांचे वय वाया जाऊ देऊ नका.

सुहास रकवी :-

शितोळे साहेबांना एक विनंती आहे त्यांनी नविन आलेल्या शिक्षण अधिकाऱ्यांची आठवण करून द्या. त्यांनी आसिफ शेखना आमच्यासमोर माहिती दिली होती. दिपक सावंत सुध्दा फोनवर बोलत होते. तेव्हा तुम्ही सुध्दा होते. एखाद्या संबंधित अधिकाऱ्याकडे जायचे त्यांनी दिलेली माहिती खरी समजायची की खोटी समजायची. ते तुम्ही सांगा. साहेब त्यांनी अगदी हा प्रश्न जीवंत आणि ज्वलंत आहे तर त्यांच्यावर निर्णय घ्या हे ते पोटतिडकीने बोलत होते. तेव्हाच सावंत साहेबांनी फोन लावून दिला आणि तुम्ही म्हणता हि दिशाभूल आहे. तुम्ही त्या शिक्षण अधिकाऱ्याला सांगा की ह्या विषयावर त्यांना काय माहिती आहे. जी.आर. निघाला आहे का? त्या जी.आर. प्रमाणे आपण शाळा सुरु करू शकतो का? त्या संबंधित ते आपल्याला माहिती देतील.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

मा. आयुक्तांच्या दालनात झालेली चर्चा आहे तीच आपल्याला सांगितली.

सुहास रकवी :-

तुमच्या दालनात चर्चा झाली. तत्पुर्वी आसिफ शेख, प्रभात ताई मी स्वतः होतो. आणखी नगरसेवक होते. मग त्यावेळेला माहिती देतात ती खरी की आताची माहिती खरी.

डॉ. आसिफ शेख :-

सन्मा. महापौर किंवा सर्व लोक प्रतिनिधी म्हणा. कमीत कमी २-३ वर्षांपासून ह्या विषयाच्या मागे आहेत. अतिरिक्त आयुक्तांची जबाबदारी एवढी निश्चीत नसते. मा.आयुक्तांनी खुलासा करावा. मा. आयुक्तांनी सर्व अधिकार आपल्या अधिकाऱ्यांना दिलेले असतात. मा.आयुक्तांना आम्ही भेटलो चर्चा झालेली आहे. काल पालक आणि विद्यार्थी भेटले. मा.आयुक्तांनी स्पष्ट सांगितले आहे की, आचारसंहिता संपल्यावर मी ताबडतोब मानधनावर शिक्षकांची भरती करण्यासाठी जाहिरात काढतो. परंतु अद्याप जाहिरात काढली नाही, का काढली नाही. १२०० विद्यार्थ्यांसाठी काय करणार? ते शिक्षणापासून वंचित राहिले तर त्याची जबाबदारी कोणाची आहे. प्रशासन म्हणून तुमची आहे ना. तुम्ही जबाबदारी घेतली पाहिजे.

मा. आयुक्त :-

ह्यामध्ये आपण दोन गोष्टी म्हटल्या आहेत. आठवा वर्ग सुरु करावा. आठवा वर्ग सुरु करताना आपली पटसंख्या किती आहे. नियम असा आहे की ५०० मीटरच्या परिसरामध्ये जर पर्यायी व्यवस्था असेल तर तिथे शाळा सुरु करण्यांत येऊ नये. मिरा भाईंदर शहरामध्ये सर्वांना माहित आहे ५०० मीटरच्या परिसरामध्ये आठवा वर्ग असलेल्या त्या खाजगी असो अनुदानित असो विना अनुदानित असो ज्या शाळा आहे त्या या नियमाला अपवाद करून नंतर आठवा वर्ग सुरु करण्यासाठी शासनाच्या परवानगीची आवश्यकता आहे. त्याचा प्रस्ताव सादर केलेला आहे. ह्या प्रस्तावाला मी स्वतः पाठपुरावा करत आहे. हा पाठपुरावा पूर्ण झाल्यानंतर पुढची कारवाई करण्यांत येईल. आपला हा मुद्दा की परवानगीची आवश्यकता नाही. तर परवानगीची आवश्यकता का आहे. मी आपल्याला सांगितले मला वाटते त्याने आपले समाधान होईल. दुसरा मुद्दा आपण म्हटले शिक्षकाची भरती शासनाचे अलीकडचे आदेश आहेत की, आपल्या ठाणे जिल्ह्यामध्ये काही अतिरिक्त शिक्षक झाले आहेत आणि नविन भरती करताना ती भरती सुरु करण्यापूर्वी अतिरिक्त शिक्षकाचे वर्गीकरण झाले. आणि त्यामध्ये आपल्याला आवश्यक जी संख्या आहे ती पूर्ण झाली तर भरती करण्याची आवश्यकता नाही. आपल्या ठाणे जिल्ह्यामध्ये जवळपास तीन हजार अतिरिक्त शिक्षक आहेत, अशी आमची माहिती आहे. ती तीन हजार शिक्षक कोणत्या मनपा क्षेत्रामध्ये द्यावे किंवा कोणत्या तालुक्यामध्ये द्यावे. पंचायती क्षेत्रामध्ये द्यावे, त्याचे सुध्दा काम

चालू आहे. ते पूर्ण झाल्याशिवाय आपल्याला भरती करता येत नाही. ती झाल्यानंतरच ॲडव्हटार्इज काढता येईल. आपण मिटींग घेतली. मिटींगमध्ये मी ऑलरेडी सांगितले होते पण ह्या ज्या गोष्टी आहेत त्याची पूर्तता झाल्याखेरीज पुढे पाऊल टाकता येत नाही. हे सुध्दा आपण मान्य करा.

डॉ. आसिफ शेख :-

मानधनावर आपण भरती करू शकतो. महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम अन्वये मा.आयुक्तांना अधिकार आहेत की सहा महिन्यांच्या पिरेडप्रमाणे आपण मानधनावर भरती करू शकतो. त्याप्रमाणे भरती करा. आणि १२०० विद्यार्थ्यांचे कल्याण करा. ते प्रवेशापासून वंचित आहेत. त्यांनी बालमजूरीवर जायचे का? खुलासा करा. विषय संपला.

मा. महापौर :-

आजच्या सभेकरीता सन्मा. सदस्या श्रीम. नयना वसानी ह्यांची लक्षवेधी आलेली आहे ती मी स्विकारत आहे.

सुरेश म्हात्रे :-

मा. महापौर मॅडम ह्यांचा खुलासा करा. मा. आयुक्तांना पाठीशी घालता.

लियाकत शेख :-

ह्याचा खुलासा झाला पाहिजे.

सुरेश म्हात्रे :-

आम्ही लोकांसाठी भांडतो.

जुबेर इनामदार :-

मी ह्या विषयावर उपायुक्तांना संपर्क केला होता. सातवीचे दाखले देण्यांत आलेले नाहीत. शाळांनी अशी भूमिका कुठल्या आधारावर घेतली. कुठल्या अधिकाऱ्यांनी त्यांना सुचना केल्या की त्यांनी दाखले देऊ नये. शाळा चालू होऊन १५ दिवस होऊन गेले असताना त्यांना कुठल्या शाळेमध्ये प्रवेश मिळेल. हा विषय शहराच्या भविष्याला निगडीत आहे.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

मुलांच्या प्रवेशाला काही अडचण आली तर त्यांना मदत करून निश्चित प्रवेश मिळवून देऊ.

जुबेर इनामदार :-

हे तुम्ही पुढचे बोलता. ही जी भूमिका घेण्यांत आली ती कोणाच्या आदेशावर घेण्यांत आली.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

मी आता शिक्षण अधिकाऱ्यांशी चर्चा केली असे काही सांगितले नाही दाखले देण्यांत यावे असे सांगून टाकले आहे.

प्रभात पाटील :-

प्राथमिक शिक्षण सातवीत संपते. तेव्हा सातवीचा रिझल्ट आणि दाखला बरोबर दिला जातो. मग कोणाच्या तरी सांगण्यावरून थांबवल असेल. आपली पुढे प्रोसीजरच नाही. मग दाखले का थांबले.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

आपल्याकडे आठवीचे प्रस्तावित चालले होते. म्हणून त्यांनी प्रयत्न केला.

प्रभात पाटील :-

मला तेच सांगायचे आहे आपण त्यांचे दाखले थांबवले त्यांच्या कल्याण्यासाठीच थांबवलेत पण त्याची तयारीपण व्हायला पाहिजे होती.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

तयारी आहे ना. शासनाकडे प्रस्ताव दिलेला आहे. शासनाकडे तीन महिन्यांपासून चालू होते.

मा. महापौर :-

मॅडम मी स्वतः त्यांच्याशी बोलले. त्यावेळी ते बोलले की, ह्या वेळेला कदाचित परवानगी भेटणार आहे. त्यासाठीच थांबले असतील. मार्चमध्ये गणवेश आणि पुढचे शिक्षण ह्यासाठी मिटींग घेतली.

प्रभात पाटील :-

मला तेच म्हणायचे आहे की, होणार आहे म्हणून दाखले थांबवले मी नाही म्हणत नाही. साहेब ते होणार आहे तर आपली देखील तेवढी तयारी पाहिजे होती. आणि जरी आज नाही आहे आपण थोडीशी इनेसिटीव्ह घ्या. थोडी रिस्क घ्या. वर्ग चालू करा. कोणीही परवानगी नाकारणार नाही. विद्यार्थ्यांच्या भविष्याचा प्रश्न आहे. शासनसुध्दा विचार करते. अनधिकृत शाळेतल्या मुलांना मोकळे सोडले जात नाही. त्यांचा अभ्यासक्रमपण चालू झाला आहे.

लियाकत शेख :-

मा.महापौर मॅडम गेल्या वर्षी १ ली ते ७ वी विद्यार्थी ऑक्टोबर नोव्हेंबरमध्ये साहित्य पुरविण्यांत आले होते. ह्यावर्षी डिसेंबरपर्यंत मिळेल अशी आम्ही अपेक्षा बाळगू का? अजून पर्यंत टॅडरींग झाले नाही. वर्क ऑर्डर झालेली नाही. वर्क ऑर्डर झाल्यानंतर २-३ महिने तयार करायला लागतात. मग मुलांना ते साहित्य कधी भेटेल त्याचा खुलासा कोण करणार आहे.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

गेल्यावर्षी निश्चित विलंब झालेला होता. पण ह्यावर्षी एवढा विलंब होणार नाही. शाळा सुरु व्हायच्या अगोदर घायची आमची भूमिका होती. लोकसभेची आचारसंहिता आडवी येऊ नये म्हणून त्यापूर्वीच प्रोसेस चालू केली. परंतू काही गोष्टीमध्ये टेंडर कमी आलेले आहेत. ते आपण रि-टेंडर करतो. बाकीच्या गोष्टीचा पाठपूरावा चालू आहे. टेंडरींगचे रिपोर्ट आले की त्यांना आम्ही वर्क ऑर्डर देतो. जुलैमध्ये त्यांना साहित्य देऊ.

निलम ढवण :-

गेल्यावर्षी एप्रिल महिन्यात महासभा झाली होती. त्यावेळी देखील हा विषय असाच निघाला होता. मागच्या वर्षी पण हीच अवस्था झाली होती.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

मागच्या वर्षी विलंब झाला होता. ह्या वर्षी एवढा होणार नाही. पुस्तक, वहा वाटप झालेले आहे.

लियाकत शेख :-

मा. आयुक्त साहेब आताच आपण सांगितले की, ५०० मिटर एरियामध्ये असलेल्या शाळांना नंतर वेगळे नियम लागू होतात. आपल्याला वेगळी परवानगी घ्यायला लागेल. ५०० मिटरमध्ये बऱ्याच शाळा आहेत. परंतू त्या आपल्याला अॅडमिशन देण्यासाठी कारण मराठी मिडियमचे विद्यार्थी आहेत आणि आता ९० ते ९५ टक्के इंग्रजी मिडियमच्या शाळा आहेत. त्या विद्यार्थ्यांना ८ ते १० दिवस विलंब झालेला आहे. आता त्याच्यासाठी दाखले देणार, पत्र देणार, शिक्षण मंडळ सभापती, आयुक्त, उपायुक्त जे कोणी पत्र देतील त्यांची दाद लावत नाही. तर अशा विद्यार्थ्यांच्या भविष्याचे काय? आपली ठोस भूमिका काय असणार. कृपया सभागृहाला माहिती द्यावी.

मा. आयुक्त :-

आपण जो मुद्दा सांगितला की बाकीच्या इंग्लिश मिडियमच्या शाळा आहेत आणि आपल्या मराठी मिडियमच्या शाळा आहेत. आपण सगळा आढावा असा घेतला की भाषानिहाय ही इंग्रजी, हिंदी, मराठी, ऊर्दू चारही शाळेचा आपण आढावा घेतला. आढावा घेतल्यानंतर आपल्याला असे दिसले त्यामध्ये काही ठिकाणी दोन्ही शाळा सुरु करणे आवश्यक आहे. म्हणून ५०० मिटरची अट शिथिल करा किंवा ते शिथिल करणे शक्य नसेल तर आहे त्या शाळेमध्ये आमचे विद्यार्थी सामावून घेतले जातील. त्याला परवानगी द्या. असा आपला प्रस्ताव आहे. हे करित असताना काही विद्यार्थी वंचित राहिले असतील किंवा राहण्याची शक्यता निर्माण झाली असेल. त्यासाठी विशेष प्रयत्न करून एकही विद्यार्थी प्रवेशाविना राहणार नाही ह्याची दक्षता घेण्यांत येईल.

लियाकत शेख :-

मा. आयुक्त साहेब ह्यांच्यात आपल्याला आर.टी.आई. खाली अधिकार दिले आहेत की आम्ही कुठल्याही शाळेत जाऊन अॅडमिशन घेऊ शकतो. म्हणजे आपल्या मनपाला म्हणा किंवा स्थानिक संस्थेला म्हणा.

मा. आयुक्त :-

ह्याच आधारावर मी म्हटलेले आहे की, जितके आपले काम होते त्याच्या नियमाचा आधार घेऊन कोणालाही वंचित ठेवले जाणार नाही ह्याची मी आपल्याला ग्वाही देतो.

लियाकत शेख :-

त्याच्यात एक टेक्नीकल मुद्दा आहे. त्याच्यात एक क्लॉज लिहिली आहे. अटीशर्ती देताना त्यांच्यात लिहिले आहे ज्या अल्पसंख्यांक शाळा आहेत त्यांना त्या तरतूदी लागू नाहीत. इथे ८० टक्के शाळा त्याच पध्दतीच्या आहेत. २० टक्के शाळेत त्याचे पुर्नःवसन कसे करणार. त्याचे अवलोकन करून त्याचा अभ्यास करावा.

जुबेर इनामदार :-

मा. आयुक्त महोदय आपण परवानगीसाठी प्रस्ताव पाठवलेला आहे. जी.आर. आम्ही वाचला नाही. चर्चेमध्ये दिपक सावंत साहेबांचे नांव येते. एक चांगल्या वातावरणात ती चर्चा झाली असेल माहिती घेतली असेल. विषय असा आहे. परवानगी मागितलेली प्रस्ताव पाठवला आहे. जी.आर.मध्ये प्रस्ताव पाठवा, असा उल्लेख असेल. आर्थिक परिस्थिती कमकुवत असते म्हणून ते मनपाच्या शाळेत मुलांना पाठवतात. मनपाच्या शाळेमध्ये प्रथा आहे. एका वर्गामध्ये ५ वी चा विद्यार्थी, ६ वी चा विद्यार्थी एका वर्गामध्ये २-३ वर्ग चालवतो. ह्या परिस्थितीत तसे चालवणार. ७ वी व ८ वी चा चालवणार त्या दृष्टिकोनातून मा.आयुक्त महोदय विचार करावा आणि ते होत असेल तर ह्या वर्षापासून ते चालू करावे. दाखले दिले गेलेले नाहीत. शाळेचे प्रवेश झाले. शाळा चालू होऊन १५ दिवस झाले. आपल्याला जे करता येईल ते केले पाहिजे.

शिल्पा भावसार :-

मा. महापौर मॅडम, मा. आयुक्त महोदय आपणांस एक नम्र विनंती आहे की, आपल्या मिरा भाईंदरच्या ज्या खाजगी शाळा आहेत. त्यांच्यावर आपल्या शिक्षण मंडळाचा जरापण दबदबा नाही. मागे महासभेत एक नियम आलेला की एकही मुलगा शिक्षणापासून वंचित राहीला नाही पाहिजे. जी मुल गरिब असतील किंवा अनाथ असतील अशा मुलासाठी आपल्या शिक्षण मंडळाकडून लेटर लिहून दिले त्या शाळेसाठी लिहून दिले की, ह्याच्या फीजमध्ये कमी करा किंवा ह्यांच्याकडून डोनेशन घेऊ नका. तर ते शाळेवाले आपल्या शिक्षण मंडळाची इज्जत करत नाही. ते लेटर आपल्यासमोर कचरा पेटीत टाकून देतात. आणि सांगतात अशी लेटर

आम्ही खूप बघीतले. पालकांना सांगतात तुम्ही अशी रेफरेन्स लेटर आणले तर आम्ही तुम्हाला उभे करणार नाही. आणि प्रायव्हेट शाळेत त्या बाईला अक्षरशा रडायला लावतात. एवढी वर्ष तिने फीज भरली. ज्यांची ३-३ मुले एका शाळेत शिकतात तर आपण त्यांना रिक्वेस्ट करतो की १ किंवा २ मुलांवी ५०-५० टक्के किंवा ७५ टक्के किंवा २५ टक्के जे काही तुम्ही मदत करू शकत असाल ती तुम्ही करा. ते त्यांचे ऐकत नाही. आपले तिकडे का वजूद राहत नाही. मला ह्याची खंत वाटते.

मा. महापौर :-

ठीक आहे. लक्षवेधी सुरुवात करा.

नयना वसानी :-

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलते. माझा लक्षवेधीचा विषय शाळांशी संबंधीत आहे. दिनांक १०/०६/२०१४ रोजी दैनिक पुण्य नगरीमध्ये आपल्या मिरा भाईंदर शिक्षण विभागाने मनपा क्षेत्रातील आपली शाहू विद्यालय मराठी माध्यम, पेणकरपाडा आणि किंग जॉर्ज स्कूल इंग्रजी माध्यम कनकिया पोलिस स्टेशन समोर ह्या दोन शाळा अनधिकृत असल्याचे मनपा शिक्षण विभागाने म्हटले आहे. माझा हा प्रश्न आहे की, ह्या दोन शाळा आपण १० जून २०१४ ला ह्या शाळा अनधिकृत केल्या. १० ते १२ तारखेला सगळ्या शाळा सुरु होतात. त्यांच्या अॅडमिशनची प्रक्रिया पूर्ण झालेली असते तेव्हा ही यादी आपल्याला लवकर जाहिर का करता येत नाही. म्हणजे ह्यांच्यासाठी ७ तारखेला वर्तमानपत्राने प्रशासनला एक प्रश्न विचारला आहे की, अद्यापही प्रशासनाने अनधिकृत शाळेची माहिती जाहिर केली नाही. हे ७ तारखेला दैनिक पुण्य नगरीमध्ये प्रसिध्द झाल्यानंतर आपली मनपा जागी झाली आहे. आणि १० तारखेला यादी जाहिर केली आहे. तर ही यादी आपल्याला लवकर का जाहिर करता येत नाही.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

सन्मानगरसेविका म्हणतात त्याप्रमाणे वृत्तपत्रात आलेल्या बातमी नंतरच प्रशासनाने अनधिकृत शाळेची यादी पब्लिश केलेली आहे. मान्य आहे. त्याप्रमाणे संबंधित शाळांना नोटीस दिलेली आहे. कुठल्या प्रकारे प्रवेश देऊ नये म्हणून त्यांना लेखी कळवले आहे. शाळांना परवानगी दिलेलीच नव्हती. त्यामुळे त्या अनधिकृत आहे हे निश्चीत. ह्या ठिकाणी पालकांनी जर ऐकले नाही त्यांच्यावर आर.टी.आई. अन्वये कारवाई करणार आहोत.

नयना वसानी :-

साहेब त्या शाळा १० तारखेला अनधिकृत जाहिर केल्या आहेत आणि शाळांचा प्रवेश जो आहे तो शाळांचा निकाल लागल्यावर लगेच एप्रिल किंवा मे पर्यंत होतो. तर त्या मुलांचे आपण काय करणार? एका शाळेमध्ये कमीत कमी दोन हजार विद्यार्थी आहेत. आपण दैनिक पुण्य नगरी ह्यांच्यामध्ये अनधिकृत शाळेची यादी जाहिर केलेली आहे. आता छत्रपती शाहू विद्यालय पेणकरपाडा हे अशा विस्तारामध्ये आहे. तिकडे सगळेच पालक वर्तमानपत्र वाचत नाही. तर त्या शाळेच्या बाहेर असे काही नोटीस लावले आहे की, की ही शाळा अनधिकृत जाहिर केली आहे इथे अॅडमिशन घेऊ नये. सगळ्याच पालकांना ते कळत नाही.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

त्यांना नोटीस दिलेली आहे.

नयना वसानी :-

साहेब शाळांना नोटीस दिलेली आहे. शाळा सांगणार आहे का? आमची शाळा अनधिकृत आहे.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

त्या दोन शाळा बाबतीतच मी बोलतो.

नयना वसानी :-

मनपातर्फे बाहेर कुठली नोटीस लावली का? ही शाळा अनधिकृत आहे. तिथे पालकांनी प्रवेश घेऊ नये.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

सुचना स्वागतार्थ आहे तिकडे बोर्ड लावण्यांत येईल.

नयना वसानी :-

ह्या दोन शाळा ज्यास अनधिकृत जाहिर केल्या त्या एक दिवसात अस्तित्वात आल्या नाहीत. ह्या शाळेमध्ये ७ वी पर्यंतच्या इयत्ता चालू आहेत. त्या सात वर्षात आपण त्यांच्याकडून पाण्याचे बिल, मालमत्ता कर वसूल केले ती सात वर्ष प्रशासन झोपले होते का?

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

ह्या दोन शाळांची माहिती मिळाली बरोबर आहे. विलंब झाला. त्याच्या व्यतिरिक्त शिक्षण अधिकाऱ्यांना सुचना दिल्या ह्यांच्या व्यतिरिक्त कुठे अनधिकृत शाळा आहेत का खात्री करा.

नयना वसानी :-

१८/०६/२००९ रोजीच्या मा. महासभेमध्ये २३ शाळा अनधिकृत जाहिर केल्या होत्या. ११ शाळेची मान्यतेसाठी प्रस्ताव होते. त्यांना मान्यता दिली. त्याच्यातल्या १२ राहिल्या. त्यातील ह्या दोनच अनधिकृत जाहिर केल्या. ज्या १० शाळा होत्या त्या मान्यताप्राप्त आहेत का? त्याची यादी आपल्याकडे आहे का? त्यांना आपण मान्यता दिली नाही तर ०५ वर्षात त्या १० शाळेवर काय कारवाई केली.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

त्या अनुषंगाने चौकशी करण्याचे शिक्षण अधिकाऱ्यांना सांगण्यांत आले आहे.

नयना वसानी :-

साहेब चौकशी करून चालत नाही. आपले अधिकारी फक्त शाळांना नोटीसा देतात. आपण त्यांच्यावर गुन्हा दाखल करतो का? एफ.आय.आर. दाखल करतो का? त्याची मला कॉपी द्या.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

अनधिकृत शाळा असतील तर त्यांच्यावर फौजदारी गुन्हे दाखल करण्यांत येतील.

नयना वसानी :-

मी भाईदर पोलिस स्टेशनला गेले असताना मला असं सांगण्यांत आले की, आमच्याकडे मनपाचे पत्र येते की ही शाळा अनधिकृत आहे. परंतू जोपर्यंत अधिकारी स्वतः येऊन जोपर्यंत इकडे एफ.आय.आर. दाखल करत नाही. आम्ही एफ.आय.आर. दाखल करत नाही. आपण किती शाळांवर एफ.आय.आर. दाखल केली.

मा. आयुक्त :-

ह्यामध्ये गतवर्षी दोन एफ.आय.आर. दाखल केलेले होते. एफ.आय.आर. दाखल करण्याची प्रक्रिया फार वेळ खारू आहे. तरी आपल्या अधिकाऱ्यांनी सकाळपासून संध्याकाळपर्यंत एफ.आय.आर. दाखल केलेले आहे. ह्या वेळेस आपण जो सर्व्हे केला. सर्व्हे मध्ये आपण जेव्हा म्हणतो दोन शाळा अनधिकृत आहे. त्यांचे फक्त बोर्ड लावले होते म्हणून त्यांना अनधिकृत डिक्लेअर केले. त्यांच्याकडे कोणतीही परवानगी नव्हती. ह्याच्या नंतर देखील त्यांनी प्रवेश घेतला किंवा शाळा सुरु ठेवल्या तर त्यांच्यावर फौजदारी कारवाई करण्यांत येईल. ह्यापुढे त्याची व्यापक प्रसिध्दी दिलेली आहे. न्यूजपेपरमध्ये दिलेले आहे. शाळांची यादी प्रसिध्द केलेली आहे. नगरसेवकांना माहिती दिलेली आहे. शाळेसमोर बोर्ड लावण्याची देखील कारवाई करण्यांत येईल आणि मिरा भाईदर शहरामध्ये असलेल्या सगळ्या शाळांची पुर्नःतपासणी करण्यांत येईल. त्यांच्यात कोणी अनधिकृत आढळले तर त्यांच्यावर फौजदारी स्वरूपाची कारवाई करण्यांत येईल.

नयना वसानी :-

सर एवढी वर्ष ज्या अधिकाऱ्यांनी ह्या शाळेला पाठीशी घातले त्यांच्यावर आपण काय कारवाई करणार? माझी अशी मागणी आहे की त्यांना त्वरीत निलंबित करा.

रोहिदास पाटील :-

मा. महापौर मॅडम अनधिकृत शाळा अतिशय गांभिर्याचा, जिद्दाळ्याचा विषय आहे. शहरातल्या अनेक अनधिकृत शाळा दरवर्षी आपण बोलतो ही एक वास्तविकता होती हे ही तुम्हाला विसरता येणार नाही. अधिकारी नविन येतील. नेते नविन येतील. एक वेळ ह्या शहराची अशी गरज होती की कुठे तरी शाळा पाहिजेत त्या पध्दतीने त्या शाळा सुरु झाल्या. माझे ह्या व्यासपिठाला असे म्हणणे आहे की, त्या दोन शाळा आहेत त्यांना अधिकृत कसे करता येईल. त्यासाठी मा. महापौरांनी, मा.आयुक्तांनी लिड घ्यावे. आणि त्या अधिकृत करण्यासाठी प्रयत्न करावा. जर मा.आयुक्तांनी सांगितले असेल त्यांच्यावर मी फौजदारी करू शकतो तर मनपाच्या ज्या अनधिकृत आहेत त्यांच्यावर कोणावर फौजदारी करणार? मा.आयुक्तांवर करणार की शिक्षण अधिकाऱ्यावर करणार. मी खात्रीने सांगतो आपल्या शाळांना परवानगी नाही आहे. ह्याच्यातले गांभिर्य लक्षात घ्या. मुलांच्या हिताच्या दृष्टिने ज्या गोष्टी आवश्यक आहेत त्या आवश्यक आहेत. मी अनधिकृत शाळेचे समर्थन करत नाही. त्यांना कायद्याने काय मदत करता येईल ती करावी. जर त्यांच्यावर कारवाई केली असेल तर आपल्यावर कोण कारवाई करणार ते सांगा.

नयना वसानी :-

मा.महापौर मॅडम, मला लक्षवेधीमध्ये असे उत्तर देण्यांत आले आहे की, ज्या मुलांना प्रवेश मिळाला नसेल त्यांना अन्यत्र प्रवेशासाठी आम्ही सहकार्य करू. तर माझे एवढेच म्हणणे आहे की, जेवढ्या शाळा आहेत. त्यांच्यावर जो फौजदारी गुन्हा दाखल केलेला आहे. त्या शाळांची लिस्ट जाहिर करावी. आणि आपण किती मुलांना प्रवेश दिला आहे त्याची माहिती द्यावी.

मा. अतिरिक्त आयुक्त :-

ठीक आहे. आपल्या सुचनेवर निश्चीत कारवाई केली जाईल.

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. १, दि. ११/१२/२०१३ व दि. ११/०२/२०१४ (दि. ११/१२/२०१३ रोजीची तहकुब सभा) रोजीच्या मा. महासभांचे इतिवृत्तांत कायम करणे.

प्रशांत दळवी :-

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलतो, आपण ह्या इतिवृत्तांला मंजुरी देत आहोत परंतू आपल्या विषयाचा अनुपालन अहवाल येत नाही.

नगरसचिव :-

पुढच्या सभेला देऊ.

प्रशांत दळवी :-

आता आपण ह्याला मंजुरी देतो. ह्याच्याप्रमाणे मिरारोड रेल्वे स्टेशनचे सुशोभिकरण आहे. काशिमिरा नाक्याचे छत्रपति शिवाजी महाराजांचे पुतळ्याचे उंचीकरण आहे. ह्या ठरावात म्हटले आहे. आठवीचे वर्ग सुरु

करायचे आहेत त्याच्यात सुचनेसह ठराव मंजूर केलेला आहे की आठवीचे वर्ग सुरु करावे अन्यथा संबंधित अधिकाऱ्यांवर कडक कारवाई करण्यांत येईल. आपल्याकडे अनुपालन अहवाल येत नाही. आपण काही करत नाही. दोन-चार महत्वाचे विषय आहेत. मिरारोड स्टेशनबाहेर सुशोभिकरण करणे, आरक्षण क्र. १८४ विकसीत करणे काहीच होत नाही. आपण सभागृहामध्ये त्याला मंजुरी देतो कारवाई होत नाही.

मा. महापौर :-

दुसऱ्या महासभेत तुम्हाला येईल.

मर्लिन डिसा :-

सचिव साहेब पान नं २७,२८,७२ ह्याच्यात काही करेक्शन आहेत मी लिहून देते.

निलम ढवण :-

पान क्र. ८७ प्रकरण ७८ ला सर्व आरक्षण क्र. दिले आहेत. त्याच्यामध्ये २१४ आरक्षण पालिकेकडे हॅन्ड ओव्ही झाले आहे.

सत्यवान धनेगावे :-

आरक्षण क्र. २१४ पार्टली हॅन्ड ओव्हर झालेले आहे. पूर्ण एरिया आपल्याकडे आली नाही.

निलम ढवण :-

त्याच्यावर जो खर्च दाखवला आहे. म्हणजे विकसीत करण्यासाठी आपल्या ताब्यातच आले नाही ते त्याच्यात मेन्शन केले आहे.

मा. आयुक्त :-

ताब्यात येण्याची प्रक्रिया सुरु असते काही क्षेत्र ताब्यात आलेले आहे. त्या क्षेत्रावर विकास करता येईल आणि जे क्षेत्र आलेले नाही ते येत्या आर्थिक वर्षात ताब्यात येईल असे आपण गृहित धरलेले आहे. त्यासाठी केलेले आहे. जर वर्षा अखेर ताब्यात आलेच नाही तर खर्च केले जाणार नाही.

निलम ढवण :-

त्याच्यात कार्यक्रम वगैरे करायचे असेल त्याला पालिकेची परवानगी नसते. २१४ वर विविध कार्यक्रम आयोजित केले जातात. त्याची पालिकेतर्फे परमिशन दिली जात नाही.

मा. आयुक्त :-

त्याच्यावर लक्ष घातले जाईल. किती जागा आपल्या ताब्यात आलेली आहे त्या जागेचे संरक्षण करणे, विकास करणे जी जागा ताब्यात आलेली नाही ती जागा ताब्यात घेण्यासाठी प्रयत्न करणे. आणि हे पूर्णपणे झाल्यानंतर किंवा आपल्याला एक हिस्सा ताब्यात आलेला असेल तर त्याचा विकास करण्यांत येईल. त्याच्यावर जी परवानगी द्यायची आहे ती आपल्यामार्फतच दिली जाईल. परस्पर दिली जाणार नाही ह्याची दक्षता घेण्यांत येईल.

निलम ढवण :-

साहेब त्याच्यातली अर्धी आपल्याकडे आली आहे का?

मा. आयुक्त :-

नेमकी टक्केवारी उपलब्ध नाही.

निलम ढवण :-

अर्धी जर असेल तर त्याचे भाडे किंवा इतर जे काही इन्कम आहे तो जमिनीचा मालक आहे त्याची परमिशन घेतली जाते. त्यांना भाडं दिलं जाते.

मा. आयुक्त :-

आपल्या ताब्यात आली नसेल तर त्यांना अधिकार आहेत. आपल्या ताब्यात आली असेल.

निलम ढवण :-

जेव्हा असेल तेव्हा २१४ ताब्यात मेन्शन करा.

मा. आयुक्त :-

२१४ आमचा प्रस्ताव नव्हता. तो महासभेने ठरावामध्ये नमूद केलेला आहे. त्यामुळे तो इतिवृत्तांतामध्ये आलेला आहे.

निलम ढवण :-

ह्याच्यात खर्च दाखवला जाणार नाही. जर आपल्याकडे नाहीच आहे.

मा. आयुक्त :-

मी भूमिका स्पष्ट केली ह्या आरक्षणापैकी जी जागा आपल्या ताब्यात आली असेल त्या जागेचे संरक्षण करणे. त्या जागेचा विकास करणे आणि ती जागा आपल्या ताब्यात घेऊन आपल्या माध्यमातून त्याचा वापर करणे किंवा वापर परवानगी देणे. ह्याची काळजी घेतली जाईल. जी जागा आपल्या ताब्यात आलेली नाही. तोपर्यंत त्या जागेवरचे अधिकार त्या मालकाचे असतात. त्या मालकाकडून ती जागा हस्तांतरीत करण्यासाठी प्रयत्न करण्यांत येतील. परंतु त्याचा अर्थ असा नाही की, आपल्या ताब्यात आलेल्या जागेवर आपण खर्च करू नये. आपल्याला तो खर्च करता येईल आणि तो जर पर्टीक्युलर ब्लॉक असेल तो सरसकट क्षेत्र असेल, आरक्षणामध्ये असेल तर त्याचा देखील आपल्याला करता येईल. त्यांच्यावर खर्च देखील करता येईल.

निलम ढवण :-

आपण खर्च करणार पण त्याचे भाडे मालक खाणार तर पालिकेला काय इन्कम आहे. पालिका खर्च करते तर त्याच्यातून काही तर इन्कम आले पाहिजे. ते पालिकेकडे का येत नाही.

मा. आयुक्त :-

त्याच्यावर खर्च करताना आपला जो मुद्दा आहे. खर्च करू नये. तेच तेच मुद्दे परत सांगतो. ह्या आरक्षणापैकी जी जागा आपल्या ताब्यात आली असेल त्या जागेवर आपल्याला खर्च करण्याचा अधिकार आहे. आणि त्या जागेचा वापर करण्याचा अधिकार देखील आपल्याला आहे. त्या वापरासाठी आपल्याला जो काही खर्च करावा लागेल तो खर्च आपण योग्य प्राधिकरण माझ्या अधिकारात असेल तर माझ्या अधिकाऱ्यामध्ये, मा. स्थायी समितीच्या अधिकारात असेल तर स्थायी समितीच्या मान्यतेने किंवा मा.महासभेच्या अधिकारात असेल तर महासभेच्या मान्यतेने खर्च करण्यांत अडचण येवू नये. जी जागा आपल्या ताब्यात नाही त्याच्यावर मनपातर्फे कुठलाही खर्च केला जाणार नाही हे मी इथे करू इच्छितो.

ध्रुवकिशोर पाटील :-

दि. ११/१२/२०१३ व दि. ११/०२/२०१४ (दि. ११/१२/२०१३ रोजीची तहकुब सभा) रोजीच्या मा. महासभांचे इतिवृत्तांत कायम करणे. मा. महासभांच्या इतिवृत्तांतामध्ये मा. सदस्यांनी सुचविलेल्या दुरुस्त्यांसह इतिवृत्तांत कायम करण्यांत येत आहे.

जुबेर इनामदार :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

मा. महापौर :-

ठराव सर्वानुमते मंजूर करण्यांत येत आहे.

प्रकरण क्र. १ :-

दि. ११/१२/२०१३ व दि. ११/०२/२०१४ (दि. ११/१२/२०१३ रोजीची तहकुब सभा) रोजीच्या मा. महासभांचे इतिवृत्तांत कायम करणे.

ठराव क्र. ०२ :-

दि. ११/१२/२०१३ व दि. ११/०२/२०१४ (दि. ११/१२/२०१३ रोजीची तहकुब सभा) रोजीच्या मा. महासभांचे इतिवृत्तांत कायम करणे. मा. महासभांच्या इतिवृत्तांतामध्ये मा. सदस्यांनी सुचविलेल्या दुरुस्त्यांसह इतिवृत्तांत कायम करण्यांत येत आहे.

सुचक :- श्री. ध्रुवकिशोर पाटील अनुमोदन :- श्री. जुबेर इनामदार

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही /-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. २, भारतरत्न इंदिरागांधी रुग्णालय येथील तात्पुरत्या ठोक मानधनावरील वैद्यकीय अधिकारी व इतर कर्मचा-यांना मुदतवाढ देणे बाबत.

ध्रुवकिशोर पाटील :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील मिरारोड येथील वैद्यकीय विभागांतर्गत भारतरत्न इंदिरागांधी रुग्णालय नागरीकांच्या सोईसुविधांसाठी आवश्यक अधिकारी/कर्मचा-यांसह सुस्थितीत कार्यरत असणे गरजेचे आहे. रुग्णालयासाठी शासन मंजूर पदानुसार १६ अधिकारी/कर्मचारी कार्यरत आहेत. शासन निर्णय क्र. जाबप्र-२००१/सीआर-९३/जाबक/आ-४, दि. २३/१२/२००२ अन्वये सुचविलेल्या आकृतीबंध शहरी आरोग्य सेवेचा विचार करता तसेच केंद्र शासनाच्या आरोग्य कुटूंब कल्याण मंत्रालयाने Indian Public Health standards नुसार सुचविलेल्या मानकांचा विचार करता सदर कर्मचारी वर्ग अतिशय अपुरा आहे. अपुऱ्या कर्मचारी वर्गामार्फत आरोग्य सेवा दिल्यास त्यामध्ये गुणवत्ता लावणे शक्य होणार नाही. Indian Public Health standards नुसार भारतरत्न इंदिरा गांधी रुग्णालयासाठी पुढील प्रमाणे स्थायी पदांची आवश्यकता आहे.

अ.क्र.	पदनाम	पदसंख्या	वेतनश्रेणी	ग्रेड वेतन
१.	वैद्यकीय अधिकारी	०२	१५६००-३९,१००	५४००
२.	अधिपरिचारीका	१६	९३००-३४८००	४२००
३.	शस्त्रक्रिया सहाय्यक/परिचर	०२	५२००-२०२००	१८००

सदर पदनिर्मिती करून सदर पदास मा. महासभा दि. २०/०९/२०११, ठराव क्र. ५४ ने पदनिर्मिती प्रस्ताव शासनास पाठवून मान्यता मिळणेबाबत व शासन मान्यता मिळेपर्यंत सदर पदे करार तत्वावर भरणेस व त्यासाठी येणाऱ्या खर्चास मा. महासभेने मंजूरी दिलेली आहे. त्याचप्रमाणे दि. १९/१०/२०११ रोजी शासनास “आय.पी.एच.एस.” नुसार आवश्यक पदनिर्मितीचा प्रस्ताव पाठविण्यात आलेला आहे. मा. महासभा ठराव क्र. ५४, दि. २०/०९/२०११ नुसार भारतरत्न इंदिरागांधी रुग्णालयात पदनिर्मितीस मंजूरी दिली आहे. भारतरत्न इंदिरागांधी रुग्णालयात खालील प्रमाणे १६ वैद्यकीय अधिकारी/अधिपरिचारीका यांना मा. स्थायी समिती सभा

दि.२८/०८/२०१३, ठराव क्र. ७४ अन्वये सेवेत एक दिवसाचा तांत्रिक खंड देऊन पुढील ०६ महिन्यांसाठी मुदतवाढ आदेश देण्यात आले आहे.

अ.क्र.	अधिकारी/कर्मचाऱ्यांचे नाव	पदनाम	ठोक मानधनावरील मुदत संपण्याची दिनांक
१.	डॉ. विजया प्रभागार अहिरे	वैद्यकीय अधिकारी	१६/०३/२०१४
२.	श्रीम. स्नेहा राणे	अधिपरिचारीका	०५/१२/२०१३
३.	श्रीम. स्विडल फर्नांडिस	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
४.	श्रीम. नेहा निलेश वनमाळी	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
५.	श्रीम. अंजली अविनाश यादव	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
६.	श्रीम. वैशाली दिपेश ठाकरे	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
७.	श्रीम. राधिका मनिष चौधरी	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
८.	श्रीम. लिडीया अंतोन करास	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
९.	श्रीम. उज्वला दिनेश सोनावणे	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
१०.	श्रीम. जया नरेश पेडणेकर	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
११.	श्रीम. संघवी विशाल चौधरी	अधिपरिचारीका	०६/०९/२०१३
१२.	श्रीम. लविना स्टीफन डाबरे	अधिपरिचारीका	०९/०३/२०१४
१३.	श्रीम. जेविता परेरा	अधिपरिचारीका	०९/०३/२०१४
१४.	श्रीम. रेखा रमेश कडू	अधिपरिचारीका	०९/०३/२०१४
१५.	श्रीम. सय्यद सकिना चांदबाशा	शस्त्रक्रिया सहाय्यक	२२/०४/२०१४
१६.	श्री. शिवाजी व्यंकटराव वाकोरे	शस्त्रक्रिया सहाय्यक/परिचर	२२/०१/२०१४

मा. महासभा दि. २०/०९/२०११, ठराव क्र. ५४ नुसार मंजूरी दिलेल्या वरील पदनिर्मिती प्रस्तावास शासनाकडून आद्याप मंजूरी प्राप्त झालेली नसल्याने ठरावाच्या अनुषंगाने वैद्यकीय अधिकारी, अधिपरिचारीका, शस्त्रक्रियागृह सहाय्यक/परिचर ठोक मानधनावर कार्यरत असल्याने वरील प्रमाणे ठोक मानधनावरील मुदत संपल्यानंतर प्रत्येकवेळी मुदत संपल्यानंतर ०१ दिवसाचा तांत्रिक खंड देऊन शासनाकडील पदनिर्मितीचा प्रस्ताव मंजूर होईपर्यंत ही सभा मुदतवाढ देऊन सदर प्रस्तावास मा. महासभा आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देत आहे.

जुबेर इनामदार :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

नरेंद्र मेहता :-

मा. आयुक्त महोदय हा जो विषय सादर केला आहे. त्यांची मुदत कधी संपली आहे त्याची माहिती द्यावी. कोणत्या कायद्या अंतर्गत ह्यांना मुदतवाढ देऊ शकतो. हे आपण कुठेही म्हटले नाही. तर त्याची माहिती दिली तर बरे होईल.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

मा. महापौर मॅडमच्या परवानगीने बोलतो, ह्यापूर्वी महासभेने मंजूरी दिलेली आहे.

नरेंद्र मेहता :-

कधी पर्यंत.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

जो पर्यंत कायम शासनाकडून मंजूर होत नाही तो पर्यंत दिलेली आहे. ६ महिन्यासाठी मा. महासभेची मंजूरी घेतलेली आहे.

नरेंद्र मेहता :-

मा. आयुक्त महोदय एवढे सगळ्यांना माहित आहे कोणालाही आपण विदारुट ब्रेक वांरवार मानधनावर घेतल तर भविष्यात त्यांना कायम करायला लागते. स्थायी समितीला ६ महिन्याचा अधिकार आहे. त्यानंतर महासभा किंवा कुठलाही समितीला त्याला मुदतवाढ द्यायचा अधिकार नाही. ही कायद्यात तरतूद आहे.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

महासभेला अधिकार आहे.

नरेंद्र मेहता :-

कुठल्या कायद्यात आहे दाखवा.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

हॉस्पिटल चालू करण्या संदर्भात.....

नरेंद्र मेहता :-

आपण रितसर प्रोसेस करा. त्यांना २ दिवस, ३ दिवस ब्रेक द्यायचा असेल तर ब्रेक देऊन करा. आम्ही कुठे नाही बोललो.

मा. महासभा दि. २३/०६/२०१४ (दि. ११/०६/२०१४ ची तहकुव सभा)

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

मध्यंतरी ब्रेक दिला.

नरेंद्र मेहता :-

कधी ह्याच्यात आपण काही म्हटले नाही.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

प्रत्येक ६ महिन्याला.

नरेंद्र मेहता :-

ब्रेक दिल्यानंतर मुदतवाढ कशाला देअर इन अ न्यू अपॉइन्टमेंट.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

साहेब आहे. त्याच्यात बघा.

नरेंद्र मेहता :-

ब्रेक दिल्यानंतर नविन अपॉइन्टमेंट करायला लागेल ना.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

ज्यांना ब्रेक देतो त्यांनाच पुन्हा घेतो. ज्या व्यक्तीला आपण घेतो त्यांनाच ब्रेक देतो.

नरेंद्र मेहता :-

मग ह्याला मुदतवाढ शब्द वापरता येईल का? ब्रेक दिला म्हणजे त्याला बरखास्त केले. मग आता तुम्ही सांगा परत घेण्यासाठी त्याला मुदत वाढ कसली. मा. आयुक्त महोदय आम्ही नक्कीच मुदतवाढ देऊ. शहराची गरज आहे. उदा. आपण कॉम्प्युटर ऑपररेटर आता होते, काय त्यांना परमनन्ट करत नाही. त्यांना काढले तर दुसरीकडे नोकरी नाही. त्यांना कुठेतरी दिलासा द्या. त्यांना हे तरी माहित होऊ द्या की माझा हा टेम्पररी जॉब आहे. ते असा विचार करतात की, मी इकडे परमनन्ट होणार आहे. आणि शेवटी सभागृहाला हा निर्णय घ्यावा लागेल की त्यांना इथे परमनन्ट करा. नंतर तुम्ही बोलणार आम्ही घेणार नाही. प्रभातताई, सेना, काँग्रेस सगळ्यांनी सांगितले कॉम्प्युटर ऑपररेटरना परमनन्ट करा. तुम्ही करता की नाही करतात. कायद्याला पण अडचणीत टाकले. काढताही येत नाही, घेताही येत नाही. अशा प्रकारे करायची आवश्यकता काय? तुम्ही रितसर मागणी करा ना की, असे असे आपण केले होते. आपल्याकडे स्टाफ पॅटर्न मंजुर झालेला नाही. म्हणून आपल्याला एक वर्ष ठेका पध्दतीने घ्यावे लागेल. ह्याच्यात मुदतवाढीचा प्रश्नच येत नाही.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

आपण त्यांना एक दिवसाचा तांत्रिक खंड देऊन त्यांना मुदतवाढ

नरेंद्र मेहता :-

खंड दिला मग आमचे काम संपले.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

त्यांनाच मुदतवाढ ना.

नरेंद्र मेहता :-

कोणत्या कायद्यात तरतूद आहे ते मला दाखवा.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

कायद्यात तरतूद नसली तरी महासभेला अधिकार आहेत. सदरचा प्रस्ताव शासनाला पाठवला आहे.

नरेंद्र मेहता :-

आपण उपायुक्त मला ते पान उघडून दाखवा तरी. की ह्या कलमाव्दारे आहे.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

सहा महिन्याचे अधिकार.

नरेंद्र मेहता :-

सहा महिने संपले ना.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

स्टॅडींगची संपल्यानंतर महासभेची अंतिम मंजूरी देते. मुळ ठराव जेव्हा मंजूर केला तेव्हा स्पष्ट लिहिले आहे. ज्यावेळी आपण ५० बेडचे हॉस्पिटल कार्यान्वित करण्या संदर्भात महासभेने तुम्हाला जे काही कर्मचारी कमी पडत असतील त्या संदर्भात पुन्हा प्रस्ताव टाकला होता. त्यात मेडीकल ऑफिसर, नर्सस त्यासंदर्भात परमनन्ट मंजूर होईल तोपर्यंत त्यांना मुदतवाढ देण्यांत येईल.

नरेंद्र मेहता :-

कुठल्या कायद्यात तरतूद आहे ते पान दाखवा.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

महासभेचा ठराव झाला ना.

नरेंद्र मेहता :-

जो पर्यंत पद मंजूर होत नाही तिथपर्यंत आपल्याला ह्यांना मानधनावर घेता येते ते कुठे आहे मला दाखवा. तात्पुरता शब्द बरोबर आहे की सहा महिने आपल्याला घेता येईल. तुमचे म्हणणे आहे महासभेला अधिकार आहे ते कोणत्या कलमात आहे ते दाखवा तरी. आपल्याकडे लॉ ऑफिसर आहेत.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

महासभेला अधिकार आहे. मुदत वाढ शब्द नसला तरी.

नरेंद्र मेहता :-

मला दाखवा महासभेनं घरी कायदे बनवले का? कायद्यात आहे का?

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

मग कसे करायचे तुम्ही सांगा.

नरेंद्र मेहता :-

तो भाग वेगळा.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

असे नसते ना. आपल्याला हॉस्पिटलसाठी ठेवायचे आहे.

नरेंद्र मेहता :-

मी सांगेल तसे काम करणार का? कायद्याप्रमाणे करणार ना. मी बोलणार तशी महानगरपालिका चालणार आहे का? कायद्याप्रमाणे चालेल ना.

जुबेर इनामदार :-

पानपट्टे साहेब घेणे गरजेचे आहे. मुदतवाढ देता आहे नाही हा विषय विरोधी पक्ष नेत्यांनी मांडला तसा होऊ शकतो. फक्त शब्द रचना बदलायची आहे. तो बदला.

नरेंद्र मेहता :-

जुबेर इनामदारजी ह्या शहराची गरज बघता आपण मानधनावर घ्या तो आमचा विषय नाही. माझा विषय आहे. आपण अशाच प्रकारे कॉम्प्युटर ऑपरिटरना घेतले. आता होते का? आपण अनेक वेळा ठराव करतो. मुदतवाढ, मुदतवाढ तेच चालत राहिले आहे. आता असे झाले आहे की, आपण त्यांना ठेऊही शकत नाही आणि काढूही शकत नाही. आता त्यांचे वय ३३ वर गेले आहे. ३३ वर तुम्हाला अपॉइन्टमेंट करता येणार नाही. मग ह्या सगळ्या बाबी सुटणार कशा. हे लोक ह्या आशेवर आहेत की, उद्या महानगरपालिकेमध्ये परमनंट होऊ.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

डॉक्टर मिळत नाही.

नरेंद्र मेहता :-

माझा विषय तो नाही. तुम्ही त्यांना ब्रेक देऊन ६ महिन्याची निविदा मागवायला पाहिजे. हा संपवा दुसरा सहा महिन्यांनी मागवा ते संपवा तिसरा सहा महिन्यांनी मागवा. ह्यांनाच कन्टीन्ड्यू करता येत नाही ना.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

साहेब कर्मचारी मिळत नाही.

नरेंद्र मेहता :-

उदा. सांगतो, खांबित साहेबांची अपॉइन्टमेंट कशी झाली. खांबित साहेबांना मानधनावर घेतले ते कोर्टात गेले. शेवटी आपल्याला त्यांना परमनंट करायला लागले. मी त्यांना दोष देत नाही. ही वॉज अपॉइन्टमेंट ऑन द टेम्पररी बेसीस मानधनावर. नंतर मी गेले तीन वर्षापासून आहे. चार वर्षापासून आहे. आपल्याला हो सांगायला लागेल मग आपल्याला त्यांना परमनंट करायला लागेल, मग ह्यांना पण आम्ही हेच करायचे का?

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

दुसरा पर्याय नाही.

नरेंद्र मेहता :-

कोर्टात गेले तर काय होईल ते सांगा. तुम्ही तुमची अडचण सांगता आम्ही मान्य करतो. पण अगोदर सहा महिने अपॉइन्टमेंट करून परत रितसर हा आला असता तर हा प्रश्न उत्पन्न झाला असता का? मा. आयुक्त महोदय कोणी वेळेवर निर्णय घेत नाही. सगळ्यांना ग्रॅन्टेड धरलेले आहे. की आपण जाऊन मा. महापौर आयदर विरोधी पक्षनेता कन्हव्हेयस करून आपले काम करून घेऊ. शेवटी आमचे दुर्भाग्य आहे की, शहराची गरज बघता, आम्हाला करावेच लागते. आम्ही विरोध केला तर हे बोलतील उद्यापासून हॉस्पिटल बंद हे आम्हांला करता येत नाही. नंतर भविष्यात आम्ही भोगायचे. मग ह्यांना परमनंट करा ना.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

साहेब, शासनाचा पद मंजुराचा प्रस्ताव मंजूर झाला नाही. तो आल्याशिवाय त्यांना कसे परमनंट करता येईल.

प्रभात पाटील :-

मा. महापौर मॅडम एका ठिकाणी पदनिर्मितीचा प्रस्ताव मंजूर होत नाही. त्याचवेळेला वन विभागाची पद मंजूर होतात. आणि ९-९, १०-१० वर्ष संगणक चालकाशिवाय इथे पान हलत नाही. नुसती ट्रान्सफर केली साहेब किती रडारड झाली. मी हा ऑपरिटर सोडणार नाही. मला तो ऑपरिटर नको. इतकी निकड असताना आपण त्या कॉम्प्युटर ऑपरिटरच्या बाबतीत गेले ९ ते १० वर्ष काही निर्णय घेत नाही. आपण किती लोकांच्या भावनांशी खेळतो. एका विभागाची पद मंजूर होतात. आरोग्य सारख्या सेन्सेटीव्ह विषय तिकडे पद मंजूर होत

नाही. कॉम्प्युटर ऑपरेटर वय उलटून चालले आहे. त्यांच्या घरची परिस्थिती एवढी गंभीर आहे ते कुठे जाणार. त्यांच्याकडे आपण पूर्ण दुर्लक्षित आहोत.

निलम ढवण :-

मा. महापौर मॅडम त्याचप्रमाणे मागच्या महासभेमध्ये बांधकाम विभागाचे अभियंता संदर्भात आपण चर्चा केली होती आणि पुढच्या महासभेत हा विषय घेतला जाईल असे सांगितले परंतु त्याबाबत देखील काही सिरियस वाटत नाही. कारण गेल्या वर्षीची देखील आमच्या नगरसेवक निधीची कामे अजूनही पेन्डींग आहेत. पुरेसे अभियंते नसल्यामुळे ही सगळी कामे अशी अडकून पडलेले आहेत. एका अभियंत्यांकडे ४ ते ५ प्रभागाचा चार्ज दिला जातो. अभियंते वाढवण्यामध्ये का सिरियस नाही. काम पेन्डींग ठेऊन मिरा भाईंदरचा कसा विकास करणार.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

अॅक्टमध्ये तरतूद नसेल तर महासभेला अधिकार आहेत.

नरेंद्र मेहता :-

कोणते अधिकार. अधिकार घरी बनवले का?

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

अॅक्टमध्ये तरतूद नसेल तर महासभेला अधिकार आहेत म्हणून हा निर्णय घेतला.

भगवती शर्मा :-

साहेब, ह्यांच्या अगोदर काही केले नाही का?

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

ह्यांच्या अगोदर बऱ्याच नेमणूका झाल्या आहेत.

नरेंद्र मेहता :-

मा. आयुक्त महोदय उपायुक्तांचे अशाप्रकारे उत्तर देणे की आम्ही अनेक वेळेला केले आहे म्हणून करू का? आम्ही दुरुस्ती करायला सांगतो.

भगवती शर्मा :-

मा. महापौर मॅडम पदनिर्मिती करू. परमंनन्ट करू. ती वेगळी गोष्ट आहे. पण ह्यांच्या अगोदर सन्मा. सदस्य महापौर होते त्यावेळी असे प्रस्ताव मंजूर केलेले आहेत. तुम्ही त्यांना सांगा.

नरेंद्र मेहता :-

असे कुठले प्रस्ताव मंजूर झाले. डायसवर बोलतात ऑन रेकॉर्ड बोलतात सांगा कुठले प्रस्ताव मंजूर झाले. मी मा. महापौरांनी विषय आणला म्हणून मी त्यांना दोष देत नाही. प्रशासनांनी विषय दिला त्यांचे कर्तव्य झाले. तुम्ही तीन महिन्यांत मंजूर केले असते मग त्यांना दोषी ठरवायचे का? त्यांचा दोष नाहीच आहे.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

आपण स्टॅडींगची मंजूरी घेतली.

नरेंद्र मेहता :-

तुम्ही मंजूर करा.

भगवती शर्मा :-

इसके पहले भी कोई पद मंजूर करने के लिए भेजे है। नगररचना और महत्वपूर्ण विभाग के हैं। उनके २०१०-११ कभी से भेजे है। पता नहीं आजतक क्यूं मंजूर नहीं हो रहे। और हमारे वृक्ष प्राधिकरण के २०१३ में भेजे है। २०१४ में मंजूर हो गए। उस पॅटर्न के अंदर में बाकी के जो प्रस्ताव हैं मैं मा. आयुक्त महोदय से निवेदन करना चाहूँगा उस तरीके से जाके पदनिर्मिती कर देंगे तो अपनी जो सब समस्या बंद हो जाएगी।

नरेंद्र मेहता :-

मा. महापौर मॅडम माझे तेवढेच म्हणणे आहे की, ह्याप्रकारे पुढे होता कामा नये. आपल्याकडे अनेक कायद्यात तरतूद आहे. त्याप्रमाणे आपण घेऊ शकतो. आता त्याचे म्हणणे आहे ब्रेक दिला आहे. ब्रेक दिला आहे तर हॉस्पिटल बंद आहे का? नक्कीच ब्रेक दिला नाही. ऑन रेकॉर्ड दिला असेल ऑफ रेकॉर्ड चालू असेल, अशाप्रकारचे करू नका. भविष्यात आम्हाला सगळ्यांना भोगायला लागेल.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

शासनाकडे प्रस्ताव आहे लवकर होईल.

नरेंद्र मेहता :-

मा. आयुक्त महोदय, एका बाजूला प्रस्ताव एका बाजूला मंजूर पद आहेत आम्ही आपल्याकडे अनेकदा चर्चा केली. स्टाफची कमी आहे. आपण मंजूर करत नाही. दुसऱ्या बाजूला मानधन, मानधन चालले आहे. तर आपल्याला विनंती राहिल जी पद भरायची असतील आवश्यकता असेल तर आपण आजच्या आज निर्णय घ्यावा आणि ह्यापुढे असे होता कामा नये, अशी आपणांस विनंती.

डॉ. राजेंद्र जैन :-

मा. आयुक्त महोदय इंदिरा गांधी हॉस्पिटल में जो कन्सलटन्ट है। उनका जो मानधन आता है, उसमे मेरे पास एक जानकारी आयी उसमे किसी को लाख मिल रहा है, किसी को देढ लाख, किसी को ६० हजार,

किसी को २५ हजार आप लोग बोलते हैं की कम पगारसे देने के कारण से डॉक्टर नहीं मिलते उसमे लाख, देढ लाख महिने का देते हैं। उसमे परमनन्त कर सकते हैं।

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

वह सॅक्शन पोस्ट नहीं है।

प्रशांत केळूसकर :-

मा. महापौर मॅडम माझ्या प्रभागात मा. आयुक्त साहेबांनी एक आरोग्य केंद्र उघडले. पद मंजूरी करून तिथे डॉक्टर ठेवू. ह्यासाठी आरोग्य केंद्राची स्थापना केली. आरोग्य केंद्राचे बांधकाम झाले परंतु तिकडे अजून डॉक्टर आणि परिचारिका कोणीच नाही. आरोग्य केंद्र तसेच बंद पडले आहे.

निलम ढवण :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील मिरारोड येथील वैद्यकीय विभागांतर्गत भारतरत्न इंदिरागांधी रुग्णालय नागरीकांच्या सोईसुविधांसाठी आवश्यक अधिकारी/कर्मचाऱ्यांसह सुस्थितीत कार्यरत असणे गरजेचे आहे. रुग्णालयासाठी शासन मंजूर पदानुसार १६ अधिकारी/कर्मचारी कार्यरत आहेत. शासन निर्णय क्र. जाबप्र-२००१/सीआर-९३/जाबक/आ-४, दि. २३/१२/२००२ अन्वये सुचविलेल्या आकृतीबंध शहरी आरोग्य सेवेचा विचार करता तसेच केंद्र शासनाच्या आरोग्य कुटूंब कल्याण मंत्रालयाने Indian Public Health standards नुसार सुचविलेल्या मानकांचा विचार करता सदर कर्मचारी वर्ग अतिशय अपुरा आहे. अपुऱ्या कर्मचारी वर्गामार्फत आरोग्य सेवा दिल्यास त्यामध्ये गुणवत्ता लावणे शक्य होणार नाही. Indian Public Health standards नुसार भारतरत्न इंदिरा गांधी रुग्णालयासाठी पुढील प्रमाणे स्थायी पदांची आवश्यकता आहे.

अ.क्र.	पदनाम	पदसंख्या	वेतनश्रेणी	ग्रेड वेतन
१.	वैद्यकीय अधिकारी	०२	१५६००-३९,१००	५४००
२.	अधिपरिचारीका	१६	९३००-३४८००	४२००
३.	शस्त्रक्रिया सहाय्यक/परिचर	०२	५२००-२०२००	१८००

सदर पदनिर्मिती करून सदर पदास मा. महासभा दि. २०/०९/२०११, ठराव क्र. ५४ ने पदनिर्मिती प्रस्ताव शासनास पाठवून मान्यता मिळणेबाबत व शासन मान्यता मिळेपर्यंत सदर पदे करार तत्वावर भरणेस व त्यासाठी येणाऱ्या खर्चास मा. महासभेने मंजूरी दिलेली आहे. त्याचप्रमाणे दि. १९/१०/२०११ रोजी शासनास “आय.पी.एच.एस.” नुसार आवश्यक पदनिर्मितीचा प्रस्ताव पाठविण्यात आलेला आहे. मा. महासभा ठराव क्र. ५४, दि. २०/०९/२०११ नुसार भारतरत्न इंदिरागांधी रुग्णालयात पदनिर्मितीस मंजूरी दिली आहे. भारतरत्न इंदिरागांधी रुग्णालयात खालील प्रमाणे १६ वैद्यकीय अधिकारी/अधिपरिचारीका यांना मा. स्थायी समिती सभा दि.२८/०८/२०१३, ठराव क्र. ७४ अन्वये सेवेत एक दिवसाचा तांत्रिक खंड देऊन पुढील ०६ महिन्यांसाठी मुदतवाढ आदेश देण्यात आले आहे.

अ.क्र.	अधिकारी/कर्मचाऱ्यांचे नाव	पदनाम	टोक मानधनावरील मुदत संपण्याची दिनांक
१.	डॉ. विजया प्रभागर अहिरे	वैद्यकीय अधिकारी	१६/०३/२०१४
२.	श्रीम. स्नेहा राणे	अधिपरिचारीका	०५/१२/२०१३
३.	श्रीम. स्विडल फर्नांडिस	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
४.	श्रीम. नेहा निलेश वनमाळी	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
५.	श्रीम. अंजली अविनाश यादव	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
६.	श्रीम. वैशाली दिपेश ठाकरे	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
७.	श्रीम. राधिका मनिष चौधरी	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
८.	श्रीम. लिडीया अंतोन करास	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
९.	श्रीम. उज्वला दिनेश सोनावणे	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
१०.	श्रीम. जया नरेश पेडणेकर	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
११.	श्रीम. संघवी विशाल चौधरी	अधिपरिचारीका	०६/०९/२०१३
१२.	श्रीम. लविना स्टीफन डाबरे	अधिपरिचारीका	०९/०३/२०१४
१३.	श्रीम. जेविता परेरा	अधिपरिचारीका	०९/०३/२०१४
१४.	श्रीम. रेखा रमेश कडू	अधिपरिचारीका	०९/०३/२०१४
१५.	श्रीम. सय्यद सकिना चांदबाशा	शस्त्रक्रिया सहाय्यक	२२/०४/२०१४
१६.	श्री. शिवाजी व्यंकटराव वाकोरे	शस्त्रक्रिया सहाय्यक/परिचर	२२/०१/२०१४

मा. महासभा दि. २०/०९/२०११, ठराव क्र. ५४ नुसार मंजूरी दिलेल्या वरील पदनिर्मिती प्रस्तावास शासनाकडून आद्याप मंजूरी प्राप्त झालेली नसल्याने ठरावाच्या अनुषंगाने वैद्यकीय अधिकारी, अधिपरिचारीका, शस्त्रक्रियागृह सहाय्यक/परिचर टोक मानधनावर कार्यरत असल्याने वरील प्रमाणे टोक मानधनावरील मुदत संपल्यानंतर प्रत्येकवेळी मुदत संपल्यानंतर ०१ दिवसाचा तांत्रिक खंड देऊन शासनाकडील पदनिर्मितीचा प्रस्ताव मंजूर होईपर्यंत ही सभा मुदतवाढ देऊन सदर प्रस्तावास मा. महासभा आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देत आहे. तसेच

जे.एन.एन.यु.आर.एम. अभियानांतर्गत भुयारी गटार योजनेचे काम प्रगतीपथावर आहे. तसेच २० द.ल.ली. पाणी पुरवठ्याची कामे हाती घेतलेली आहेत. तसेच पाणी पुरवठा योजनेतील कामे सुध्दा हाती घ्यावयाची आहे. त्याकरीता मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेकडे पुरेसा अभियंता वर्ग नाही. भुयारी गटार योजना/पाणी पुरवठा कामांचा अनुभव असणारे ०३ अभियंते १) श्री. विलास चव्हाण २) श्री. सुरेन्द्र ठाकरे ३) श्री. किशोर देशमुख महाराष्ट्र जीवन प्राधिकरणातून प्रतिनियुक्तीवर घेण्यात आलेले आहेत. सदर कामे पूर्ण करण्यासाठी त्यांची आवश्यकता लागणार आहे. तरी अभियंत्यांना १ वर्षाची मुदतवाढ देण्यात यावी व सदर कार्यपूर्ती न झाल्यास प्रशासन जबाबदार असेल असा ठराव मांडण्यात येत आहे.

प्रशांत केळूसकर :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

जुबेर इनामदार :-

सुचना घ्या, क्लब करून घ्या.

भगवती शर्मा :-

विषय दिल्यानंतर विषयाचे वेगवेगळे ठराव होऊ शकतात. आम्ही जो ठराव मांडला आहे तो इंदिरा गांधी रुग्णालयात मानधनावर जे ठेवले आहेत त्यांना मुदतवाढ देण्यासाठी ह्या प्रस्तावामध्ये वेगवेगळ्या डिपार्टमेंटमध्ये कार्यरत असलेले पद आहेत ते घेत आहेत. त्यांना घेऊ शकतात का? मंजुरी देऊ शकतात? ते ठरावामध्ये क्लब करा. लास्टला आहेत त्यांचा समावेश करा.

नरेंद्र मेहता :-

एम.जी.पी. चे तीन कर्मचारी आहेत. काम अजून पेन्डींग आहे. तर त्यांना एक वर्षाची मुदतवाढ द्या अशी आमची सुचना आहे.

ध्रुवकिशोर पाटील :-

आमच्या ठरावात त्यांनी जे तीन कर्मचारी सांगितले आहेत ते अॅड करा. त्यांची सुचना घ्या.

मा. महापौर :-

ठराव सुचनेसह मंजूर करत आहे.

प्रकरण क्र. ०२ :-

भारतरत्न इंदिरा गांधी रुग्णालय येथील तात्पुरत्या ठोक मानधनावरील वैद्यकीय अधिकारी व इतर कर्मचाऱ्यांना मुदतवाढ देणे बाबत.

ठराव क्र. ०३ :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील मिरारोड येथील वैद्यकीय विभागांतर्गत भारतरत्न इंदिरागांधी रुग्णालय नागरीकांच्या सोईसुविधांसाठी आवश्यक अधिकारी/कर्मचाऱ्यांसह सुस्थितीत कार्यरत असणे गरजेचे आहे. रुग्णालयासाठी शासन मंजूर पदानुसार १६ अधिकारी/कर्मचारी कार्यरत आहेत.

शासन निर्णय क्र. जाबप्र-२००१/सीआर-९३/जाबॅक/आ-४, दि. २३/१२/२००२ अन्वये सुचविलेल्या आकृतीबंध शहरी आरोग्य सेवेचा विचार करता तसेच केंद्र शासनाच्या आरोग्य कुटूंब कल्याण मंत्रालयाने Indian Public Health standards नुसार सुचविलेल्या मानकांचा विचार करता सदर कर्मचारी वर्ग अतिशय अपुरा आहे. अपुऱ्या कर्मचारी वर्गामार्फत आरोग्य सेवा दिल्यास त्यामध्ये गुणवत्त लावणे शक्य होणार नाही. Indian Public Health standards नुसार भारतरत्न इंदिरा गांधी रुग्णालयासाठी पुढील प्रमाणे स्थायी पदांची आवश्यकता आहे.

अ.क्र.	पदनाम	पदसंख्या	वेतनश्रेणी	ग्रेड वेतन
१.	वैद्यकीय अधिकारी	०२	१५६००-३९,१००	५४००
२.	अधिपरिचारीका	१६	९३००-३४८००	४२००
३.	शस्त्रक्रिया सहाय्यक/परिचर	०२	५२००-२०२००	१८००

सदर पदनिर्मिती करून सदर पदास मा. महासभा दि. २०/०९/२०११, ठराव क्र. ५४ ने पदनिर्मिती प्रस्ताव शासनास पाठवून मान्यता मिळणेबाबत व शासन मान्यता मिळेपर्यंत सदर पदे करार तत्वावर भरणेस व त्यासाठी येणाऱ्या खर्चास मा. महासभेने मंजूरी दिलेली आहे. त्याचप्रमाणे दि. १९/१०/२०११ रोजी शासनास “आय.पी.एच.एस.” नुसार आवश्यक पदनिर्मितीचा प्रस्ताव पाठविण्यात आलेला आहे.

मा. महासभा ठराव क्र. ५४, दि. २०/०९/२०११ नुसार भारतरत्न इंदिरागांधी रुग्णालयात पदनिर्मितीस मंजूरी दिली आहे. भारतरत्न इंदिरागांधी रुग्णालयात खालील प्रमाणे १६ वैद्यकीय अधिकारी/अधिपरिचारीका यांना मा. स्थायी समिती सभा दि.२८/०८/२०१३, ठराव क्र. ७४ अन्वये सेवेत एक दिवसाचा तांत्रिक खंड देऊन पुढील ०६ महिन्यांसाठी मुदतवाढ आदेश देण्यात आले आहे.

अ.क्र.	अधिकारी/कर्मचाऱ्यांचे नाव	पदनाम	ठोक मानधनावरील मुदत संपण्याची दिनांक
१.	डॉ. विजया प्रभागर अहिरे	वैद्यकीय अधिकारी	१६/०३/२०१४
२.	श्रीम. स्नेहा राणे	अधिपरिचारीका	०५/१२/२०१३
३.	श्रीम. स्विडल फर्नांडिस	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४
४.	श्रीम. नेहा निलेश वनमाळी	अधिपरिचारीका	२२/०१/२०१४

अ.क्र.	अधिकारी/कर्मचाऱ्यांचे नाव	पदनाम	ठोक मानधनावरील मुदत संपण्याची दिनांक
५.	श्रीम. अंजली अविनाश यादव	अधिपरिचारीका	२२/०९/२०१४
६.	श्रीम. वैशाली दिपेश ठाकरे	अधिपरिचारीका	२२/०९/२०१४
७.	श्रीम. राधिका मनिष चौधरी	अधिपरिचारीका	२२/०९/२०१४
८.	श्रीम. लिडीया अंतोन करास	अधिपरिचारीका	२२/०९/२०१४
९.	श्रीम. उज्वला दिनेश सोनावणे	अधिपरिचारीका	२२/०९/२०१४
१०.	श्रीम. जया नरेश पेडणेकर	अधिपरिचारीका	२२/०९/२०१४
११.	श्रीम. संघवी विशाल चौधरी	अधिपरिचारीका	०६/०९/२०१३
१२.	श्रीम. लविना स्टीफन डाबरे	अधिपरिचारीका	०९/०३/२०१४
१३.	श्रीम. जेविता परेरा	अधिपरिचारीका	०९/०३/२०१४
१४.	श्रीम. रेखा रमेश कडू	अधिपरिचारीका	०९/०३/२०१४
१५.	श्रीम. सय्यद सकिना चांदबाशा	शस्त्रक्रिया सहाय्यक	२२/०४/२०१४
१६.	श्री. शिवाजी व्यंकटराव वाकोरे	शस्त्रक्रिया सहाय्यक/परिचर	२२/०९/२०१४

मा. महासभा दि. २०/०९/२०११, ठराव क्र. ५४ नुसार मंजूरी दिलेल्या वरील पदनिर्मिती प्रस्तावास शासनाकडून आद्याप मंजूरी प्राप्त झालेली नसल्याने ठरावाच्या अनुषंगाने वैद्यकीय अधिकारी, अधिपरिचारीका, शस्त्रक्रियागृह सहाय्यक/परिचर ठोक मानधनावर कार्यरत असल्याने वरील प्रमाणे ठोक मानधनावरील मुदत संपल्यानंतर प्रत्येकवेळी मुदत संपल्यानंतर ०१ दिवसाचा तांत्रिक खंड देऊन शासनाकडील पदनिर्मितीचा प्रस्ताव मंजूर होईपर्यंत ही सभा मुदतवाढ देऊन सदर प्रस्तावास मा. महासभा आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देत आहे.

तसेच जे.एन.एन.यु.आर.एम. अभियानांतर्गत भुयारी गटार योजनेचे काम प्रगतीपथावर आहे. तसेच २० द.ल.ली. पाणी पुरवठ्याची कामे हाती घेतलेली आहेत. तसेच पाणी पुरवठा योजनेतील कामे सुध्दा हाती घ्यावयाची आहे. त्याकरीता मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेकडे पुरेसा अभियंता वर्ग नाही. भुयारी गटार योजना/पाणी पुरवठा कामांचा अनुभव असणारे ०३ अभियंते १) श्री. विलास चव्हाण २) श्री. सुरेन्द्र ठाकरे ३) श्री. किशोर देशमुख महाराष्ट्र जीवन प्राधिकरणातून प्रतिनियुक्तीवर घेण्यात आलेले आहेत. सदर कामे पूर्ण करण्यासाठी त्यांची आवश्यकता लागणार आहे. तरी अभियंत्यांना १ वर्षाची मुदतवाढ देण्यात यावी व सदर कार्यपूर्ती न झाल्यास प्रशासन जबाबदार असेल असा ठराव मांडण्यात येत आहे.

सूचक :- श्री. ध्रुवकिशोर पाटील अनुमोदक :- श्रीम. निलम ढवण
ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही /-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ३, भाईंदर (पूर्व) जैसलपार्क चौपाटी येथे दशक्रिया विधी शेडचे नुतनीकरण करणे कामाच्या खर्चास प्रशासकिय व आर्थिक मान्यता देणे.

ध्रुवकिशोर पाटील :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात भाईंदर (पूर्व) जैसलपार्क खाडी किनारी महानगरपालिकेने दशक्रिया या विधी करीता शेड बांधलेली आहे. सदर शेडचे नुतनीकरण करणे कामास महाराष्ट्र कोस्टल झोन मॅनेजमेंट ऑथरिटी यांच्याकडून मंजूरी मिळालेली आहे. सदर कामासाठी रु. ५६,५४,९८६/- एवढा खर्च अपेक्षित असून सदर कामाच्या अंदाजपत्रकास प्रशासकिय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे.

रोहिदास पाटील :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

प्रभात पाटील :-

त्याच्यामध्ये हॉल, रूम, बाथरूम म्हटले आहे असे त्याच्यात कनेक्शन आहे का? पाणी साठवण्याची टाकी.

प्रकरण क्र. ०३ :-

भाईंदर (पूर्व) जैसलपार्क चौपाटी येथे दशक्रिया विधी शेडचे नुतनीकरण करणे कामाच्या खर्चास प्रशासकिय व आर्थिक मान्यता देणे.

ठराव क्र. ०४ :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात भाईंदर (पूर्व) जैसलपार्क खाडी किनारी महानगरपालिकेने दशक्रिया या विधी करीता शेड बांधलेली आहे. सदर शेडचे नुतनीकरण करणे कामास महाराष्ट्र कोस्टल झोन मॅनेजमेंट ऑथरिटी यांच्याकडून मंजूरी मिळालेली आहे.

सदर कामासाठी रु. ५६,५४,९८६/- एवढा खर्च अपेक्षित असून सदर कामाच्या अंदाजपत्रकास प्रशासकिय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे.

सुचक :- श्री. ध्रुवकिशोर पाटील अनुमोदन :- श्री. रोहिदास पाटील
ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही /-
महापौर
मिरा भाईदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४, केंद्र शासनाच्या जेएनएनयुआरएम योजने अंतर्गत बसेस खरेदी व जेईएफ ५ अंतर्गत प्रकल्प अहवाल बनविणे अवलोकनार्थ.

नरेंद्र मेहता :-

आम्हाला अवलोकन मान्य नाही. मिरा भाईदर महानगरपालिकेने केंद्र शासनाच्या जे.एन.एन. यु.आर. एम. योजनेअंतर्गत बस खरेदी करणेकरीता व बस डेपो विकसीत करणे व अत्याधुनिक उपकरणे कार्यान्वयीत करणेकरीता निविदा मागविण्यात आलेल्या होत्या. या पात्र निविदाधारकांना महानगरपालिकेने दि. ५/०३/२०१४ रोजी कार्यादेश दिलेले आहेत. बस खरेदी करण्यापूर्वी प्रशासनाने मा. स्थायी समितीची मंजूरी घेणे आवश्यक होते. तसेच सदर विषय हा शहराशी निगडित असल्याने या सर्व योजनेची व बस चालविण्याचे धोरण निश्चित करणेकामी मा. महासभेची अंतीम मंजूरी घेणे आवश्यक होते. अश्या प्रकारची कोणतीही मंजूरी प्रशासनाकडून घेतलेली नसल्याने सदर अवलोकनार्थ ठेवण्यात आलेला विषय नामंजूर करण्यात येत आहे असा ठराव मांडण्यात येत आहे.

प्रशांत केळूसकर :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

ध्रुवकिशोर पाटील :-

हा विषय अवलोकनाला सादर केलेला आहे. ह्याच्यामध्ये ठराव होऊ शकत नाही. मा. आयुक्त साहेब खुलासा करा.

राजेंद्र जैन :-

पाटील साहेब अवलोकन का मतलब क्या है देख के राय जानना।

ध्रुवकिशोर पाटील :-

स्टॅडींग कमिटी मे जो भी सब्जेक्ट अवलोकन मे आते है उसके ठराव नही होते.

नरेंद्र मेहता :-

मा. महापौर मॅडम वरील हेडमध्ये म्हटले आहे. आपल्याला जी काही माहिती दयायची असते मग विनंती अर्ज असू द्या. शासनाचे परिपत्रक हे अवलोकन म्हणजे माहिती तिकडे हे पाठवायला पाहिजे. ज्यावेळी अजेंड्यावर वियय आला तर त्या विषयावर निर्णय व्हायला पाहिजे. आम्ही तो निर्णय दिलेला आहे. प्रशासनाला जो योग्य वाटेल तो निर्णय घ्या, आम्ही आमच्या सदबुध्दीप्रमाणे वाटले ते दिलेले आहे. कारण विषय पत्रिकेवर नंबर पडला आहे. माहितीसाठी घ्यायचे होते तर वरती टाकायला पाहिजे. जसे तसे शासनाचे पत्र देतो इतर काही माहिती तसे घ्यायला पाहिजे होतं.

भगवती शर्मा :-

मा. महापौर मॅडम हम कुछ सदस्य है जिनको तांत्रिक ज्ञान कम है जैसे इस विषय पे ठराव हो सकता है या नही हो सकता। इसके पहले भी हमने सदन में मागणी किया है की हमको पाठशाला के लिए दौरे पे भेज दिजिए। ताकि हम लोग ज्ञान का अनुभव प्राप्त कर सकते है। मा. आयुक्त साहेब आपके पास प्रस्ताव प्रलंबित है। आप महासभा में डिक्लेअर करीए। आपको ज्ञान है की ठराव कर सकते है। हमको ज्ञान नही है। आज आप खुले मन से घोषणा कर दो मेरी तरफ से दौरे के लिए मंजुरी है।

राजेंद्र जैन :-

मेरा विरोध है।

मा. आयुक्त :-

आपल्या देशात सर्वात मुंबई महानगरपालिका मोठी आहे. ३० हजार कोटीचे बजेट आहे. तिथे सुध्दा आपण दौरा करू शकतो.

उदित नारायण सिंग :-

मा. आयुक्त साहेब मुंबई महानगरपालिकेचे सदस्य जिकडे दौरा करतात तिकडे आम्ही दौरा करणार.

मा. आयुक्त :-

प्रत्येक सभासदाला प्रशिक्षणाची आवश्यकता आहे. ह्या मताचा मी सुध्दा आहे. मी सुध्दा इथे येण्यापूर्वी प्रशिक्षण घेतले आहे. भारतामध्ये जिकडे चांगली अर्बन बॉडी आहे. त्याठिकाणी दौरा करण्यासाठी माझी काही हरकत नाही त्याला संमती देण्यांत येत आहे.

मा. महापौर :-

विषय मंजुर करण्यांत येत आहे.

प्रकरण क्र. ०४ :-

केंद्र शासनाच्या जे.एन.एन.यु.आर.एम. योजनेअंतर्गत बसेस खरेदी व जेईएफ ५ अंतर्गत प्रकल्प अहवाल बनविणे अवलोकनार्थ.

ठराव क्र. ०५ :-

मिरा भाईदर महानगरपालिकेने केंद्र शासनाच्या जे.एन.एन.यु.आर.एम. योजनेअंतर्गत बस खरेदी करणेकरीता व बस डेपो विकसीत करणे व अत्याधुनिक उपकरणे कार्यान्वयीत करणेकरीता निविदा मागविण्यात आलेल्या होत्या. या पात्र निविदाधारकांना महानगरपालिकेने दि. ५/०३/२०१४ रोजी कार्यादेश दिलेले आहेत.

बस खरेदी करण्यापूर्वी प्रशासनाने मा. स्थायी समितीची मंजूरी घेणे आवश्यक होते. तसेच सदर विषय हा शहराशी निगडित असल्याने या सर्व योजनेची व बस चालविण्याचे धोरण निश्चित करणेकामी मा. महासभेची अंतीम मंजूरी घेणे आवश्यक होते. अश्या प्रकारची कोणतीही मंजूरी प्रशासनाकडून घेतलेली नसल्याने सदर अवलोकनार्थ ठेवण्यात आलेला विषय नामंजुर करण्यात येत आहे असा ठराव मांडण्यात येत आहे.

सुचक :- श्री. नरेंद्र एल. मेहता अनुमोदक :- श्री. प्रशांत केळुसकर
ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही /-

महापौर

मिरा भाईदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ५, मिरा भाईदर महानगरपालिकेच्या सार्वजनिक मालमत्ता देखभाल, दुरुस्ती करणेकरीता वार्षिक मुदतीच्या निविदा मागविणे व खर्चास प्रशासकिय / आर्थिक मान्यता देणे बाबत.

ध्रुवकिशोर पाटील :-

मिरा-भाईदर महानगरपालिका क्षेत्रातील सार्वजनिक, तसेच विकास योजनेतील रस्त्याखालून विविध यंत्रणांच्या केबल्स, पाईप लाईन इ. टाकण्यात आलेल्या आहेत व येत आहेत. संबंधित यंत्रणाकडून, नविन केबल्स टाकणे, जलवाहिनी टाकणे त्याची दुरुस्ती करणे इत्यादीसाठी आवश्यक परवानगी घेऊन व शुल्क भरून खोदण्यात येतात. सदर दुरुस्ती शुल्कातून बाधित रस्ते दुरुस्ती केले जातात. यासोबत अतीवृष्टीमुळे पडणारे खडे देखिल महानगरपालिकेकडे विविध यंत्रणामार्फत रस्ते दुरुस्तीसाठी जमा केलेल्या रक्कमेतून, दुरुस्ती करून घेण्यात येतात. सन २०१४-१५ या वर्षाकरिता प्रभाग समिती निहाय अर्थसंकल्पातील तरतुदीनुसार रस्ते देखभाल, दुरुस्ती, पुर्नपृष्ठीकरण करणे, गतिरोधक बसविणे, रस्त्यावर थर्मोप्लास्टिक पट्टे मारणे इ. कामासाठी वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास प्रशासकिय/ आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे. तसेच फुटपाथ / नाले / गटारे या वरील साफसफाई साठी बसविण्यात येणारी लोखंडी/ फायबर/ क्रॉक्रीटची झाकणे, गटारावरील स्लॅब दुरुस्ती, कर्बस्टोन, पेव्हर ब्लॉक, वॉटर टेबल, चेकर्ड लादी दुरुस्तीसाठी अर्थसंकल्पातील तरतुदीप्रमाणे वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास व खर्चास प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे. महानगरपालिकेच्या असलेल्या मालमत्ता मध्ये मुख्य कार्यालय इमारत, इतर कार्यालयीन इमारती, प्रभाग कार्यालये, समाजमंदीर, बालवाड्या, स्मशानभूमी, उद्याने, मैदाने, तळी विहीरी दुरुस्ती, शाळा इमारती, शौचालय दुरुस्ती, नामफलक यांची किरकोळ दुरुस्त्यासाठी देखील वार्षिक दर मागवून कंत्राटदार निश्चित केल्यास सर्व कामे तातडीने आवश्यकतेनुसार करून घेता येतात. यासाठी सन २०१४-१५ या वर्षाच्या अर्थसंकल्पात विविध लेखाशिर्षात तरतुदी करण्यात आलेल्या आहेत. तसेच मिरा भाईदर महानगरपालिकेच्या मंजूर विकास योजनेत विविध आरक्षणे असून आरक्षणाच्या जागा ताब्यात येत आहेत. ताब्यात आलेल्या जागेना पक्के कुंपणभित्त घालून जागेचे संरक्षण करणे आवश्यक आहे. यासाठी निविदा मागवून दर निश्चित केल्यास आवश्यकतेप्रमाणे जागेना कुंपणभित्ती घालता येतील. यासाठी देखील अर्थसंकल्पात तरतुद करण्यात आलेली आहे. तरी सदर तरतुदीमधुन वरील कामांसाठी वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास व खर्चास प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे.

जुबेर इनामदार :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

नरेंद्र मेहता :-

मा. महापौर मॅडम सदर विषयात कोणत्या हेडखाली काय रक्कम आहे कुठे कशी वापरणार काही दाखवले नाही. म्हणजे बजेटमध्ये किती आणि आर्थिक प्रशासकीय किती. सगळे क्लब करून टाकले आहे. म्हणजे रस्ता काय, गटार रिपेअरींग, इमारत रिपेअरींग काय, झाकण काय त्याचे विस्तारपूर्व पालन व्हावे. १) मिरा-भाईदर महानगरपालिका क्षेत्रातील सार्वजनिक, तसेच विकास योजनेतील रस्त्याखालून विविध यंत्रणांच्या केबल्स, पाईप लाईन इ. टाकण्यात आलेल्या आहेत व येत आहेत. संबंधित यंत्रणाकडून, नविन केबल्स

टाकणे, जलवाहिनी टाकणे त्याची दुरुस्ती करणे इत्यादीसाठी आवश्यक परवानगी घेऊन व शुल्क भरून खोदण्यात येतात. सदर दुरुस्ती शुल्कातून बाधित रस्ते दुरुस्ती केले जातात. यासोबत अतीवृष्टीमुळे पडणारे खडे देखिल महानगरपालिकेकडे विविध यंत्रणामार्फत रस्ते दुरुस्तीसाठी जमा केलेल्या रक्कमेतून, दुरुस्ती करून घेण्यात येतात. मान्सूनला सुरुवात होणार असल्याने शहरातील रस्ते व्यवस्थित करणे इ. कामे युध्दपातळीवर करावयाची असल्याने तसेच संबंधीत बांधकाम विभागाने सन २०१४-१५ या वर्षाकरीता प्रभाग समिती निहाय अर्थसंकल्पातील तरतुदीनुसार रस्ते देखभाल, दुरुस्ती, पुर्नपृष्ठीकरण करणे, गतिरोधक बसविणे, नामफलक दुरुस्ती, रस्त्यावर थर्मोप्लास्टिक पट्टे मारणे इ. कामासाठी वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास प्रशासकिय/ आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे. २) फुटपाथ / नाले / गटारे या वरील साफसफाई साठी लोखंडी/ फायबर/ क्रॉक्रीटची झाकणे बसविणे, गटारावरील स्लॅब दुरुस्ती, कर्बस्टोन, पेव्हर ब्लॉक, वॉटर टेबल, चेकर्ड लादी दुरुस्तीसाठी अर्थसंकल्पात रु. २.५० कोटीची तरतुद आहे. सदर तरतुदीच्या मर्यादेत वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यात व खर्चास प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे. ३) महानगरपालिकेच्या विविध सार्वजनिक इमारती दुरुस्तीसाठी रु. २०.०० लक्ष तरतुद असून स्मशानभूमी दुरुस्तीसाठी रु. २०.०० लक्ष, शाळा इमारती दुरुस्तीसाठी रु. २०.०० लक्ष, सार्वजनिक शौचालय व मुतारी दुरुस्तीसाठी रु. ८०.०० लक्ष, तलाव, विहिरी दुरुस्तीसाठी / सफाईसाठी रु. ५०.०० लक्ष उद्यान व मैदाने दुरुस्तीसाठी रु. ५०.०० लक्ष तरतुद असून सदर कामांसाठी अर्थसंकल्पीय रकमेच्या मर्यादेत वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे. ४) मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या मंजूर विकास योजनेत विविध आरक्षणे असून आरक्षणाच्या जागा ताब्यात येत आहेत. सदर जागेना पक्के कुंपणभित बांधणे आवश्यक आहे. त्यासाठी उद्यान विकास, मैदान विकास, शाळा बांधकामे या लेखाशिर्षाखाली तरतुदी करण्यात आल्या आहेत. सदर तरतुदीमधून खर्चास व वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे.

प्रशांत केळूसकर :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

निलम ढवण :-

मा. महापौर मॅडम, प्रत्येक वेळेला झाकण, रस्ते ह्याअर्थी विकासासाठी आर्थिक, प्रशासकिय मंजुरी दिली जाते. त्यानंतर ते ठेकेदार त्या पध्दतीने काम व्यवस्थित करतात की नाही हे सन्मा.सदस्यांना विचारले तर बरं होईल. आपण लोकांचा पैसा ह्या गोष्टीसाठी खर्च करतो आणि त्या सुविधा त्या लोकांना मिळतात का? त्या सुविधा ठेकेदाराकडून मिळत नाही. तर पहिल्यांदा ठेकेदाराची चौकशी करा. प्रत्येक वेळेला आपण पालिकेचा खर्च करून प्रशासकिय आर्थिक मंजुरी देतो. परंतु तिथली झाकण टाकली जात नाही. आता पावसाळा आहे. लहान मुले शाळेत जात असतात. जेष्ठ नागरीक असतात त्याच्यातून जाणे मुश्किल होते. कधी ती त्या आकाराची नसतात. आणतो म्हणून सांगणार पुन्हा त्यांचा पत्ता नसतो. त्याची पहिल्यांदा चौकशी करा. त्यानंतरच त्याचे पेमेंट किंवा पुढची प्रोसिजर करत जा. त्यासंदर्भात त्या ठेकेदारांना सांगितले की झाकण उडाली आहेत ती टाका किंवा त्याचे फ्रेम बनवा तर ते वेळोवेळी हेच उत्तर देतात की आमचे पेमेंट मिळत नाही. त्यामुळे लेट होते. मग हि काम कशी करायची. आपण मंजुरी देतो आणि ही कामं का अडकतात? अशा ठेकेदारांना देऊच नका. आता ही नवघर पट्ट्याला फेरी मारली तर आम्ही वेळोवेळी फ्रेम बदलायला सांगितल्या. अद्यापही तिथे पडल्या नाहीत ह्याची दखल घ्या.

मा. महापौर :-

ठराव सर्वानुमते मंजूर करण्यांत येत आहे.

प्रकरण क्र. ०५ :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या सार्वजनिक मालमत्ता देखभाल, दुरुस्ती करणेकरीता वार्षिक मुदतीच्या निविदा मागविणे व खर्चास प्रशासकिय / आर्थिक मान्यता देणेबाबत.

ठराव क्र. ०६ :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील सार्वजनिक, तसेच विकास योजनेतील रस्त्याखालून विविध यंत्रणांच्या केबल्स, पाईप लाईन इ. टाकण्यात आलेल्या आहेत व येत आहेत. संबंधित यंत्रणाकडून, नविन केबल्स टाकणे, जलवाहिनी टाकणे त्याची दुरुस्ती करणे इत्यादीसाठी आवश्यक परवानगी घेऊन व शुल्क भरून खोदण्यात येतात. सदर दुरुस्ती शुल्कातून बाधित रस्ते दुरुस्ती केले जातात. यासोबत अतीवृष्टीमुळे पडणारे खडे देखिल महानगरपालिकेकडे विविध यंत्रणामार्फत रस्ते दुरुस्तीसाठी जमा केलेल्या रक्कमेतून, दुरुस्ती करून घेण्यात येतात.

सन २०१४-१५ या वर्षाकरिता प्रभाग समिती निहाय अर्थसंकल्पातील तरतुदीनुसार रस्ते देखभाल, दुरुस्ती, पुर्नपृष्ठीकरण करणे, गतिरोधक बसविणे, रस्त्यावर थर्मोप्लास्टिक पट्टे मारणे इ. कामासाठी वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास प्रशासकिय/ आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे.

तसेच फुटपाथ / नाले / गटारे या वरील साफसफाई साठी बसविण्यात येणारी लोखंडी/ फायबर/ क्रॉक्रीटची झाकणे, गटारावरील स्लॅब दुरुस्ती, कर्बस्टोन, पेव्हर ब्लॉक, वॉटर टेबल, चेकर्ड लादी दुरुस्तीसाठी अर्थसंकल्पातील तरतुदीप्रमाणे वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास व खर्चास प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे.

महानगरपालिकेच्या असलेल्या मालमत्ता मध्ये मुख्य कार्यालय इमारत, इतर कार्यालयीन इमारती, प्रभाग कार्यालये, समाजमंदीर, बालवाड्या, स्मशानभूमी, उद्याने, मैदाने, तळी विहीरी दुरुस्ती, शाळा इमारती, शौचालय दुरुस्ती, नामफलक यांची किरकोळ दुरुस्त्यासाठी देखील वार्षिक दर मागवून कंत्राटदार निश्चित केल्यास सर्व कामे तातडीने आवश्यकतेनुसार करून घेता येतात. यासाठी सन २०१४-१५ या वर्षाच्या अर्थसंकल्पात विविध लेखाशिर्षात तरतूदी करण्यात आलेल्या आहेत. तसेच मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या मंजूर विकास योजनेत विविध आरक्षणे असून आरक्षणाच्या जागा ताब्यात येत आहेत. ताब्यात आलेल्या जागांना पक्के कुंपणभित्त घालून जागेचे संरक्षण करणे आवश्यक आहे. यासाठी निविदा मागवून दर निश्चित केल्यास आवश्यकतेप्रमाणे जागांना कुंपणभित्ती घालता येतील. यासाठी देखील अर्थसंकल्पात तरतूद करण्यात आलेली आहे. तरी सदर तरतूदीमधुन वरील कामांसाठी वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास व खर्चास प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे.

सुचक :- श्री. ध्रुवकिशोर पाटील अनुमोदक :- श्री. नरेंद्र मेहता
ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही /-
महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ६, मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात सर्वधर्मिय उत्सवातर्गत सणांसाठी विविध व्यवस्था करणे कामी खर्चास प्रशासकीय आर्थिक मान्यता देणे बाबत.

ध्रुवकिशोर पाटील :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात साजरे होणाऱ्या उत्सव व कार्यक्रमांसाठी खालील प्रमाणे खर्च अपेक्षित आहे.

अ.क्र.	सणाचे/ उत्सवाचे नांव	अंदाजित खर्च
१	श्री गणेशोत्सव, माघी/ साखर चौथ गणेश विसर्जन व्यवस्था	७०.०० लक्ष
२	रमजान ईद/ बकरी ईद	३.०० लक्ष
३	कार्तिक पौर्णिमा	४.०० लक्ष
४	छट पूजा/ दशमादेवी उत्सव	३.७५ लक्ष
५	गणगौर उत्सव	५.०० लक्ष
६	वेलंकनी उत्सव	४२.५० लक्ष
७	नवरात्र विसर्जन	१०.०० लक्ष
८	गुरुनानक जयंती	५.०० लक्ष
९	महावीर जयंती	३०.०० लक्ष
१०	१५ ऑगस्ट, २६ जानेवारी, १ मे रोजी ची व्यवस्था	३.०० लक्ष
११	अर्थिक गणना/ पल्स पोलिओ/ जनता दरबार व्यवस्था	७.०० लक्ष
१२	श्रीगणेशोत्सव, नवरात्र, माघी गणपती, छटपूजा, दशमादेवी उत्सव, साखरचौथ गणपती दरम्यान करावयाच्या अतिरिक्त उपाययोजना	
अ	लाकडी तराफे व्यवस्था	१४.०० लक्ष
ब	फोर्क लिफ्ट व्यवस्था	३.०० लक्ष
क	हायड्रॉलिक क्रेन व्यवस्था	३.०० लक्ष
ड	बोटीची व्यवस्था	१६.०० लक्ष

तसेच आंबेडकर जयंती, हनुमान जयंती व इतर जयंती साजऱ्या करण्यास वरीलप्रमाणे खर्चास व वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास तसेच आवश्यक निधी उपलब्ध करून घेण्यास प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे.

अशरफ शेख :-

माझे अनुमोदन आहे.

भगवती शर्मा :-

कोई भी धर्म का कोई भी मागणी करे कोई लाख पचास हजार के होंगे उनको भी समाविष्ट किया जाए।

अशरफ शेख :-

रमझान ईद, बकरी ईद उत्सवासाठी होणाऱ्या खर्चास रु. तीन लक्ष मान्यतेकरीता विषय पटलावर आहे. त्यामध्ये ईद-ए-मिलाद, मोहरम, बोहरी व ख्वाजा समाजाच्या सणासाठी तसेच दर्ग्यांचे ऊरुस विविध व्यवस्था करणेकामी तसेच प्रशासकिय व आर्थिक मंजूरी बाबतच्या विषयाचा समावेश करून विषय पटलावर घेण्यांत यावा व ह्या सणाच्या खर्चास ५० लाख इतकी आर्थिक व प्रशासकिय मान्यता देण्यांत यावी. तसेच

निविदा काढताना प्रभाग निहाय निविदा करण्यांत यावे. जेणेकरून स्थानिक नागरीकांना सोयीस्कर होईल व प्रशासनामार्फत संबंधित ठेकेदारांना नियंत्रण ठेवले जाईल अशी मी सुचना मांडत आहे.

प्रशांत दळवी :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात साजरे होणाऱ्या उत्सव व कार्यक्रमांसाठी खालील प्रमाणे खर्च अपेक्षित आहे.

अ.क्र.	सणाचे/ उत्सवाचे नांव	अंदाजित खर्च
१	श्री गणेशोत्सव, माघी/ साखर चौथ गणेश विसर्जन व्यवस्था	७०.०० लक्ष
२	रमजान ईद/ बकरी ईद	३.०० लक्ष
३	कार्तिक पौर्णिमा	४.०० लक्ष
४	छट पूजा/ दशमादेवी उत्सव	१०.०० लक्ष
५	गणगौर उत्सव	५.०० लक्ष
६	वेलंकनी उत्सव	४२.५० लक्ष
७	नवरात्र विसर्जन	१०.०० लक्ष
८	गुरुनानक जयंती	५.०० लक्ष
९	महावीर जयंती	४०.०० लक्ष
१०	१५ ऑगस्ट, २६ जानेवारी, १ मे रोजी ची व्यवस्था	३.०० लक्ष
११	अर्थिक गणना/ पल्स पोलिओ/ जनता दरबार व्यवस्था	७.०० लक्ष
१२	छत्रपती शिवाजी महाराज जयंती	५.०० लक्ष
१३	बाबासाहेब आंबेडकर जयंती	५.०० लक्ष
१४	महाराणा प्रताप जयंती	५.०० लक्ष
अ	लाकडी तराफे व्यवस्था	१४.०० लक्ष
ब	फोर्क लिफ्ट व्यवस्था	३.०० लक्ष
क	हायड्रॉलिक क्रेन व्यवस्था	३.०० लक्ष
ड	बोटीची व्यवस्था	१६.०० लक्ष

सार्वजनिक बांधकाम विभागाने सदर कामाच्या निविदा मागविताना इलेक्ट्रीक सिटी कामाकरीता पी. डब्ल्यूच्या लायसन्सची अट काढून टाकण्यात यावी. त्याचप्रमाणे आवश्यक असल्यास निविदा मागविताना रोजंदारी/ ठेका पध्दतीने काम करित असलेल्या ठेकेदारास निविदा भरण्यास प्रवेश द्यावा. तसेच इतर आवश्यक नसलेल्या अटी व शर्ती शिथिल कराव्यात. जेणेकरून निविदा भरताना स्पर्धा निर्माण होवून महानगरपालिकेचा आर्थिक फायदा होईल असे पाहावे. उपरोक्त कामाकरीता वरीलप्रमाणे खर्चास व वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास तसेच आवश्यक निधी उपलब्ध करून घेण्यास प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे असा ठराव मांडण्यात येत आहे.

प्रशांत केळूसकर :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

प्रेमनाथ पाटील :-

सदर ठरावात उपसुचना मांडीत आहे की, डोंगरी - तारोडी येथे श्री. धारावी मातेचे पांडवकालीन मंदिर आहे. आगरी कोळी बांधवांची ग्रामदेवता असून त्याठिकाणी दरवर्षी महाशिवरात्रीचा उत्सव मोठ्या प्रमाणात साजरा होत असून धारावी मातेचे दर्शन घेण्याकरिता आगरी कोळी व इतर समाजातील हजारो संख्येने भक्तगण येत असतात. तरी श्री. धारावी माता मंदिर, डोंगरी-तारोडी उत्सवाकरिता दरवर्षी रु. १५ लक्ष इतकी रक्कम अनुदान म्हणून देण्यात यावी.

मदन सिंग :-

माझे अनुमोदन आहे.

नरेंद्र मेहता :-

हनुमान जयंती आणि ईद बाबत ज्या सुचना मांडल्या आहेत. त्या समावेश करून क्लब करा.

शिल्पा भावसार :-

ईस्ट आणि वेस्टच्या धक्क्यावर पुष्कळ गुजराती लोक दशामा घरी आणतात. त्या उत्सवात खुप पब्लिक जमा होते. त्याच्यात पैशाची वाढ करून घ्यावी अशी माझी सुचना आहे.

मर्लिन डिसा :-

मॅडम ख्रिसमस कार्निवल साठी ४० लाख समावेश करण्यांत यावे.

मा. महापौर :-

ठराव क्लब करून सुचनेसह मंजूर करण्यांत येत आहे.

प्रकरण क्र. ०६ :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात सर्वधर्मिय उत्सवातंगत सणांसाठी विविध व्यवस्था करणे कामी खर्चास प्रशासकीय आर्थिक मान्यता देणेबाबत.

ठराव क्र. ०७ :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात साजरे होणाऱ्या उत्सव व कार्यक्रमांसाठी खालील प्रमाणे खर्च अपेक्षित आहे.

अ.क्र.	सणाचे/ उत्सवाचे नांव	अंदाजित खर्च
१	श्री गणेशोत्सव, माघी/ साखर चौथ गणेश विसर्जन व्यवस्था	७०.०० लक्ष
२	रमजान ईद/ बकरी ईद	३.०० लक्ष
३	कार्तिक पौर्णिमा	४.०० लक्ष
४	छट पूजा/ दशमादेवी उत्सव	१०.०० लक्ष
५	गणगौर उत्सव	५.०० लक्ष
६	वेलंकनी उत्सव	४२.५० लक्ष
७	नवरात्र विसर्जन	१०.०० लक्ष
८	गुरुनानक जयंती	५.०० लक्ष
९	महावीर जयंती / पर्युषण	४०.०० लक्ष
१०	१५ ऑगस्ट, २६ जानेवारी, १ मे रोजी ची व्यवस्था	३.०० लक्ष
११	अर्थिक गणना/ पल्स पोलिओ/ जनता दरबार व्यवस्था	७.०० लक्ष
१२	श्रीगणेशोत्सव, नवरात्र, माघी गणपती, छटपूजा, दशमादेवी उत्सव, साखरचौथ गणपती दरम्यान करावयाच्या अतिरिक्त उपाययोजना	
१३	छत्रपती शिवाजी महाराज जयंती	५.०० लक्ष
१४	बाबासाहेब आंबेडकर जयंती	५.०० लक्ष
१५	महाराणा प्रताप जयंती	५.०० लक्ष
अ	लाकडी तराफे व्यवस्था	१४.०० लक्ष
ब	फोर्क लिफ्ट व्यवस्था	३.०० लक्ष
क	हायड्रॉलिक क्रेन व्यवस्था	३.०० लक्ष
ड	बोटीची व्यवस्था	१६.०० लक्ष

सार्वजनिक बांधकाम विभागाने सदर कामाच्या निविदा मागविताना इलेक्ट्रीक सिटी कामाकरीता पी. डब्ल्यूच्या लायसन्सची अट काढून टाकण्यात यावी. त्याचप्रमाणे आवश्यक असल्यास निविदा मागविताना रोजंदारी/ ठेका पध्दतीने काम करित असलेल्या ठेकेदारास निविदा भरण्यास प्रवेश द्यावा. तसेच इतर आवश्यक नसलेल्या अटी व शर्ती शिथिल कराव्यात. जेणेकरून निविदा भरताना स्पर्धा निर्माण होवून महानगरपालिकेचा आर्थिक फायदा होईल असे पाहावे.

उपरोक्त कामाकरीता वरीलप्रमाणे खर्चास व वार्षिक दराच्या निविदा मागविण्यास तसेच आवश्यक निधी उपलब्ध करून घेण्यास प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देण्यात येत आहे असा ठराव मांडण्यात येत आहे.

सुचक :- श्री. ध्रुवकिशोर पाटील अनुमोदक :- श्री. प्रशांत दळवी

सदर ठरावात सन्मा. सदस्य श्री. प्रेमनाथ पाटील यांनी खालीलप्रमाणे सुचना मांडली आहे.

सदर ठरावात उपसुचना मांडीत आहे की, डोंगरी - तारोडी येथे श्री. धारावी मातेचे पांडवकालीन मंदिर आहे. आगरी कोळी बांधवांची ग्रामदेवता असून त्याठिकाणी दरवर्षी महाशिवरात्रीचा उत्सव मोठ्या प्रमाणात साजरा होत असून धारावी मातेचे दर्शन घेण्याकरिता आगरी कोळी व इतर समाजातील हजारो संख्येने भक्तगण येत असतात. तरी श्री. धारावी माता मंदिर, डोंगरी-तारोडी उत्सवाकरिता दरवर्षी रु. १५ लक्ष इतकी रक्कम अनुदान म्हणून देण्यात यावी.

सदर ठरावात सन्मा. सदस्या श्रीम. असेन्ला मॅडोन्सा परेरा यांनी खालीलप्रमाणे सुचना मांडली.

हनुमान जयंती उत्सवाकरिता व भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती करिता देखील अनुदान देण्यांत यावे. तसेच इतर कोणत्याही धर्माची रु. एक लाख, पन्नास हजार रक्कमेची मागणी असेल त्यांना देखील यामध्ये समाविष्ट करण्यात यावे.

सदर ठरावात सन्मा. सदस्य श्री. मोहम्मद फरिद सिद्दीक कुरेशी यांनी खालीलप्रमाणे सुचना मांडली आहे.

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील सर्वधर्मिय उत्सवांतर्गत सणांसाठी व्यवस्था करणे कामी खर्चास प्रशासकीय आर्थिक मान्यता देणे गोषवा-यातील मध्ये अ. क्र. २ मध्ये नमूद रमजान ईद / बकरी ईद उत्सवासाठी होणा-या खर्चास रुपये ३ लक्ष नुसार आर्थिक मान्यतेकरीता विषय पटलावर आहे.

त्यामध्ये ईद-ए-मिलाद/मोहरम/बोरी व खोजा समाजाचे सणासाठी तसेच दर्गाचे उरुस विविध व्यवस्था करणेकामी खर्चास प्रशासकीय व आर्थिक मंजुरीबाबतचा विषयाचा समावेश करून विषय पटलावर घेण्यात यावा व या सणांच्या खर्चास रु. ५० लक्ष इतकी आर्थिक व प्रशासकीय मान्यता देण्यात यावी. तसेच निविदा काढताना प्रभागनिहाय निविदा काढण्यात याव्यात जेणेकरून स्थानिक नागरीकांना सोयीस्कर होईल व प्रशासनामार्फत संबंधीत ठेकेदारावर नियंत्रण ठेवले जाईल, अशी मी सुचना मांडत आहे.

सदर ठरावात सन्मा. सदस्या श्रीम. मर्लिन मर्विन डिसा यांनी खालीलप्रमाणे सुचना मांडली.

मिरा भाईंदर क्रिसमस कार्निवल करिता ४० लक्ष ही रक्कम समाविष्ट करावी.

सदर ठरावात सन्मा. सदस्या श्रीम. शिल्पा भावसार यांनी खालीलप्रमाणे सुचना मांडली.
दशामा देवीसाठी जो खर्च आहे तो पब्लिक सार्वजनिक जास्त असून हा खर्च कमी आहे ते ७ लाख पर्यंत असावा अशी विनंती.

ठराव सुचनेसह सर्वानुमते मंजूर

सही /-

महापौर

मिरा भाईदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ७, सन्मा. सदस्य श्री. बर्नड आल्बर्ट डिमेलो यांचा दिनांक ०६/०६/२०१४ रोजीच्या पत्रान्वये दिलेला प्रस्ताव. मिरा भाईदर महानगरपालिकेमार्फत लागू केलेल्या भुमीगत गटार योजनेच्या करातुन मुर्धा-डोंगरी-उत्तन या परिसरातील करदात्यांना सुट देणेबाबत.

बर्नड डिमेलो :-

मिरा-भाईदर महानगरपालिकेमार्फत भाईदर (प.) व भाईदर (पूर्व) तसेच मिरारोड या ठिकाणी भुमीगत गटार योजनेचे काम गेल्या दोन वर्षांपासुन सुरु असुन सदरचे काम पूर्णत्वाच्या मार्गावर असुन अंतिम टप्प्यामध्ये आहे. मिरा भाईदर शहराकरिता सुरु असलेल्या भुमीगत गटार योजनेचा लाभ हा मुर्धा-डोंगरी-उत्तन या परिसरातील करदाते यांना मिळालेला नाही कारण सदर योजना या भागासाठी मनपाने लागू केलेली नाही तरीसुध्दा मुर्धा-डोंगरी-उत्तन या परिसरातील करदात्याकडुन मनपा सदर कर वसुल करीत आहे व ही बाब नैसर्गिक न्यायाला अनुसरुन नाही व एकप्रकारे हा तेथील करदात्यावर अन्याय होत आहे. स्थानिक करदात्यावर होणारा अन्याय लक्षात घेऊन मा. महापौर महोदया आमदार श्री. गिल्बर्ट मेन्डोन्सा व विधान परिषद सदस्य श्री. मुझफ्फर हुसेन यांनी मा. आयुक्तांकडे लेखी पत्र देऊन सदरचा कर मुर्धा-डोंगरी-उत्तन परिसरातील करदात्यांना कमी करणेकरिता मागणी केलेली आहे. तरी दि. १५/०२/२०११ च्या महासभेमध्ये पारित केलेल प्रकरण क्र. १०८ व ठराव क्र. ९४ या ठरावातुन सदरच्या करातुन मुर्धा-डोंगरी-उत्तन या परिसरातील करदात्यांना १०० % सुट देणेकरिता आजच्या महासभेमध्ये मी अनुसूची “ड” प्रकरण २ नियम २ अन्वये प्रस्ताव सदरचा मांडत आहे.

जुबेर इनामदार :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

फरिद कुरेशी :-

अनुसूची 'ड' प्रकरण २ नियम 'ज' अन्वये मिरा-भाईदर महानगरपालिकेमार्फत लागू केलेल्या भुमीगत गटार योजनेच्या मल:निसरण करातुन मुर्धा-डोंगरी-उत्तन या परिसरातील करदात्यांना सुट देणेबाबत प्रस्ताव सदरच्या मा. महासभेमध्ये आहे. तसेच मिरा-भाईदर महानगरपालिकेमार्फत शहरामध्ये विविध ठिकाणी भुमीगत गटार योजनेचे काम गेल्या दोन वर्षांपासुन सुरु असुन ते अंतिम टप्प्यामध्ये आहे. मात्र सुरु असलेले भुमीगत गटार योजनेचा लाभ हा मिरा गावठण, काशी गांव, अग्रवाल कॉम्प्लेक्स पासुन ते हर्मिटेज कॉम्प्लेक्स या परिसरातील करदाते यांना मिळालेला नाही व योजनेचा लाभ प्रस्तावितही नाही. तरीसुध्दा या परिसरातील करदात्याकडुन मनपा सदरबाबत कर वसुल करीत आहे व ही बाब नैसर्गिक न्यायाना अनुसरुन नाही. तरी सदर प्रस्तावामध्ये मिरा गावठण, काशी गांव, अग्रवाल कॉम्प्लेक्स पासुन ते हर्मिटेज कॉम्प्लेक्स पर्यंतचा परिसर मिरा-भाईदर महानगरपालिकेमार्फत लागू केलेल्या मल:निसरण कर वगळण्यात यावा, अशी मी सुचना मुळ ठरावात मांडत आहे.

अशरफ शेख :-

माझे अनुमोदन आहे.

प्रेमनाथ पाटील :-

मा. महापौर मॅडम खारीगांव, गोडदेव, नवघर ह्याठिकाणी अंडरग्राऊंड ड्रेनेजचे पाईप सिस्टिम आहे. त्यांना पण ह्या करामधून सूट देण्यांत यावी.

शरद पाटील :-

मा. महापौर मॅडम ह्या सगळ्या सुचना येत आहेत. ह्याचे उपभोगते जे नाहीच आहेत. त्या सगळ्यांना माफ करा.

रोहिदास पाटील :-

मा. महापौर मॅडम ह्यांच्यात दुरुस्तीचा शब्द असा आहे की ज्याठिकाणी ते उपभोगते नाही जी एरिया आपण वगळतो त्यांना टॅक्समधून वगळले पाहिजे. मग कोणतेही गांव असू दे कोणतीही एरिया असू दे.

मा. महापौर :-

जिथे पण गावठण एरिया आहे आणि ज्यांना ज्याचा लाभ नाही त्यांना हा कर लावण्यांत येणार नाही.

प्रेमनाथ पाटील :-

मा. महापौर मॅडम, खारीगांवच, बी.पी.रोड, नवघर रोड त्यांनापण त्यांच्यातून वगळण्यांत यावे.

प्रभात पाटील :-

नवघर रोड, बी.पी.रोड गावठण नाही पण तिथे ती सुविधा नाही आणि होणार पण नाही.

मा. महापौर :-

तुम्ही सुचना दिली आहे ना. तुमची सुचना घेण्यांत येईल.

नरेंद्र मेहता :-

सदरचा विषय आपण प्रशासनामार्फत सादर केला असता तर कदचित ह्या शहरवासियांना कुठेतरी सुट मिळाली असती. कर कायद्याप्रमाणे जी काही आपल्याला सूट द्यायची असेल, रद्द करायची असेल ती २० फेब्रुवारीच्या आतमध्ये झाली पाहिजे. तरच ते इम्प्लीमेंट करता येते. आता अर्थसंकल्पाला मान्यता झाली आता ती तूट आपल्याला करून देता येणार नाही. ही आमची खात्री आहे. दरवेळी सभागृहामध्ये आपण शहरवासियांना आपण आश्वासन देतो की आम्ही रद्द करणार आणि ते होत नाही. मला मा.आयुक्तांना विचारायचे आहे की जो ठराव मांडला आहे. ते कमी होऊ शकते का? त्याचा आपण खुलासा केला तर बाकी आपल्याला सोपे होईल.

मा. आयुक्त :-

कुठल्याही कराचे प्रस्ताव आहेत त्याची “ज” च्या प्रस्तावामध्ये चर्चा होत नाही. तो प्रशासनाचा प्रस्ताव नाही. ती सभागृहाची भावना आहे किंवा सभागृहाने दिलेली सुचना आहे. त्याबरोबरच महापालिकेचे आर्थिक हीत विचारात घेता सरसकट माफ करता येणार नाही. आता आपण पाण्याचे काही ठिकाणी कमी देतो. ती सुध्दा अडचण निर्माण होईल. ह्याचा निर्णय तपासून घेण्यांत येईल. आज मी माझे भाष्य ह्यासाठी स्पष्ट करू इच्छित नाही की त्याचे इम्प्लीकेशन्स काय काय होती. त्याच्या अभ्यास करून नंतरच निर्णय घेतला जाईल.

भगवती शर्मा :-

इस सभागृह में पहली बार भी सन्मा. बर्नड डिमेलोने उत्तन, डोंगरी, मुर्धा, राई, मोर्वा का उल्लेख किया था। उसमे कुछ सदस्योने भाईदर गांवठण की चर्चा की थी। सन्मा. प्रेमनाथ पाटील ने जो एरिया कहाँ उसका समावेश होना चाहिए। लेकिन बार बार चर्चा करने के बाद प्रशासन ने ध्यान न देते हुए कभी विषय नहीं लिया। क्योंकि हरबार यह कहते है की हमारे उपर आर्थिक बोजा आएगा। लेकिन मैं सभी सन्मा.सदस्य से निवेदन करना चाहूंगा प्रशासन नहीं देगा तो हम चूप बैठकर जनता के उपर अन्याय नहीं होने देंगे। मा. आमदार गिल्बर्ट मेंडोसा ने आपसे तीन बार पत्रव्यवहार किया। तीनों बार दिपक सावंतजी ने कहाँ की बजेट में तरतूद नहीं है। सभागृह के सभी सदस्य एक राय प्रगट की है की जिनको सुविधा नहीं दि जा रही उनको उस कर से छूट मिलनी चाहिए। सबकी एक ही मागणी है। मेरा सन्मा.महापौर मॅडम से निवेदन है इसको भले ही इस वर्ष के लिए एक्झम्प्शन नहीं चाहिए लेकिन छ महिना दे सकते हे तो उसके उपर गंभीरता से विचार किया जाए। कोई रास्ता हो जो दो साल से टॅक्स भर रहे है। हमारी कोई मागणी नहीं कोई करदाताओं की मागणी नहीं है की जो वसूल किया टॅक्स वापिस दिया जाए। लेकिन इन सदस्य की जो माँगनी हे उसके उपर गंभीरता से विचार करे मैं पूर्ण विश्वास करूंगा की आप इसमे पूर्ण तरह से छूट प्रदान करेंगे।

नरेंद्र मेहता :-

प्रशासनानी हा विषय दिला होता. माहितीसाठी सांगतो यांना आणि मंजुर केला होता. आणि सरकारकडे भांडून आम्ही ते रद्द करावयाला लावले. प्रशासनाने जर विषय दिला की मलप्रवाह ह्या शहरात लावा. त्यावेळी आम्ही ठराव मांडलेला की ज्या भागात ही सुविधा नाही त्यांना हा कर लावू नये. ठराव नं.९४ त्यामध्ये ठरावावर मतदान झाले. भाजप/सेना ही भूमिका मांडली. ह्याच्यावर हा लावलेला कर अन्यायकारक असून ज्यांना ही सुविधा भविष्यात नाही. त्यावेळी मतदान झाले. मा. महापौर साहेब, सन्मा. सदस्य भगवती शर्मा ह्या सर्वांचे त्या ठरावाच्या बाजूने मतदान आहे की कर लावण्यांत यावे. आम्ही हे सांगितले होते की कर लावू नये. ठरावाची मागची कॉपी सुध्दा मी आणलेली आहे. ह्या ठरावात कर लावू नये आणि तरी कुठल्याही प्रकारे बहुमताच्या जोरावर हा कर लादला गेला. वारंवार आम्ही सांगितले की त्यांच्यावर हा कर लादण्यांत येऊ नये. उत्तन, राई, मुर्धा, मोर्वा, चेना, वर्सोवा त्यांना ह्या प्रोजेक्टमध्ये सुविधा नाही. त्यावेळी कोणी ऐकले नाही. त्यावेळी बहुमताच्या जोरावर हा ठराव केला आणि परत हा विषय आलेला आहे. त्याचवेळी हा निर्णय घेतला असता तर रितसर त्या लोकांना सूट भेटली असती. हा भुर्दंड त्यांच्यावर आला नसता. आमची पहिलीपण भूमिका होती आतापण तिच भूमिका आहे. त्याच्यावर कर लादण्यांत येऊ नये. आता बजेट मंजुर झालेला आहे. इन्कम बाजू ज्यावेळेला कमी होतात खर्च बाजू देखील कमी व्हायला पाहिजे. आपण ज्या आर्थिक व प्रशासकिय मान्यता दिली ती कुठल्या हेडखाली ते कमी करणार त्या सगळ्या बाबींचा विचार होऊन हा रितसर विषय सादर करावा अशी माझी विनंती राहिल त्याच्यावर मी ठराव मांडत आहे.

भगवती शर्मा :-

साहेब आपने कौन सा ठराव लाया पता नहीं। जो ठराव मे हमने कहाँ था की २० फरवरी के पहले नहीं ला सकते उसके उपर हमने मतदान किया था। जो प्रशासनसे जवाब मांगा जा रहा था की इस कर में छूट दे सकते है की नहीं दे सकते। बजेट में तरतूद है की नहीं। बजेट में तूट होगी की नहीं। सन्मा. सदस्य ने आयुक्त की भूमिका पहलेसे ही लगा दि है। इस शहर में जो कर के बोज से है जिनको आज हम वंचित करना चाहते है। आप उन लोगो के लिए वापिस वही भूमिका निभा रहे है। प्रशासन कभी भी गोषवारा नहीं

देगा। आज यह विषय आया है। आप से फिर से निवेदन करता हूँ की राजनिती न करते हुए इस विषय पे जैसे आपने एल.बी.टी. के विषय पे जो भूमिका सोची है वैसे इसके बारे में सोचिए।

नरेंद्र मेहता :-

मिरा भाईदर महानगरपालिकेकडून जवाहरलाल नेहरू नॅशनल अर्बन रिनीव्हल मिशन अंतर्गत भाईदर (पूर्व) व भाईदर (पश्चिम) तसेच मिरारोड या ठिकाणी भूमीगत गटार योजनेचे काम चालू आहे. सदर काम अंतिम टप्प्यात आहे. या योजनेचा लाभ सर्वसाधारणपणे भाईदर (प.), भाईदर (पूर्व) येथील नागरीकांना होणार आहे. मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ मध्ये कलम १२९ (बब) नुसार मलप्रवाह सुविधा लाभ कर लागू करण्याची तरतुद आहे. उक्त तरतुदीनुसार महानगरपालिकेने दि. १५/०२/२०११ रोजी प्रकरण क्र. १०८, ठराव क्र. ९४ ने मलप्रवाह सुविधा लाभ कर सन २०११-१२ या वर्षापासून कर योग्य मुल्याच्या आठ टक्क्या प्रमाणे महानगरपालिकेतील सर्व मालमत्तांवर आकारण्यास सुरुवात केलेली आहे. मालमत्ता सुविधा कर लागू करणे संबंधी मा. महासभामध्ये दि. १५/०२/२०११ रोजी विषय ठेवला असता या विषयाचा ठराव मांडताना राई, मुर्धा, मोर्वा, उत्तन, पाली, डोंगरी इत्यादी गावांमधील मालमत्तांना हा कर आकारण्यात येवू नये असा आमच्या पक्षाने ठराव मांडला होता. परंतु सदर ठरावास त्यावेळेच्या सत्ताधारी पक्षाने आमच्या पक्षाने केलेल्या ठरावास बहुमताने नामंजुर करून ठरावास मंजुरी घेतलेली होती. आज सादर केलेल्या ठरावास सुचक श्री. बर्नट डिमेलो व अनुमोदक श्री. जुबेर इनामदार यांनी त्यावेळी त्यावेळच्या ठरावास विरोध दर्शविलेला होता. परंतु उशीरा का होईना सन्मा. सदस्यांना लोकांच्या भावना व अडचणी समजून आल्या असून आमच्या पक्षाने त्यावेळी केलेल्या ठरावाचे महत्व आता समजलेले आहे. म्हणजे असे म्हणता येईल “देर आये, दुरुस्त आये।” तरी सदर सन्मा. सदस्यांचे आम्ही अभिनंदन करत आहोत. परंतु प्रत्येक वेळेस अश्याप्रकारे उत्तन येथील रहिवाश्यांची फसवणूक करणे योग्य नाही. घनकचरा प्रकल्प असो किंवा इतर शास्ती प्रकारचे कोणतेही प्रश्न असोत जर सन्मा. सदस्यांना खरोखरच या प्रकाराच्या कामाची कळकळ होती तर सदर विषय हा अधिनियमातील तरतुदीप्रमाणे २० फेब्रुवारीच्या आत मंजुर करून घेणे आवश्यक होते. परंतु ह्या वरून असे दिसून येते की, जनतेच्या हितासाठी नव्हे तर त्यांच्या फसवणूकीसाठी सत्ताधारी अश्याप्रकारे विषय घेत आहेत. सध्याची योजनेतील लाभाथर्यांची वस्तुस्थिती पाहता मुर्धा ते मोर्वा, डोंगरी ते उत्तन परिसर, व चेणा घोडबंदर येथील नागरीकांना या योजनेचा लाभ होत नाही. तरी सध्या लागू असलेला मलप्रवाह सुविधा लाभ कर वरील गावातील मालमत्तांना सन २०१४-१५ या वर्षापासून आकारू नये. तसेच मिरा भाईदर शहरात भुयारी गटार योजना रद्द करण्यात येत आहे. तसेच मालमत्ता करामध्ये या परिसरातील नागरीकांना अधिनियमातील तरतुदीप्रमाणे शास्ती कराची आकारणी केली जात आहे. ही शास्ती कराची आकारणी यापुढे कर विभागाने करू नये असा ठराव मांडण्यात येत आहे. गरज भासल्यास सदर ठरावास शासनाकडून मंजुरी घेण्यात यावी.

दिनेश जैन :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

नरेंद्र मेहता :-

आपको क्लब करने मे इज़्ज़ी होगा। उत्तन, राई, मुर्धा, मोर्वा त्यांचाही ठराव झाला होता. त्यांच्यावर शास्ती लावावी. जुनी घर आहेत ते आपले परिवार कुटुंब वाढल्या कारणाने थोडे फार वाढी करता ठराव मांडला गेला होता तो ठराव काँग्रेस पक्षाकडून मांडला गेला होता. त्याच्यावर शास्ती लावण्यांत येवू नये. तरी आपल्या मनपातर्फे शास्ती लावण्यांत येते. ती वगळण्यांत यावी तसेच तसेच जे.एन.एन.यू.आर.एम. प्रोजेक्ट तीन वर्षांच्या आत संपला पाहिजे होता तरी सात वर्ष झाली तरी संपला नाही परंतु लोक आजही मलप्रवाह कर भरतात आणि अजून तीन वर्ष होणार नाही. म्हणून शहरात हा मलप्रवाह कर जिथ पर्यंत सुरू होत नाही वगळण्यांत यावे, असा आम्ही ठराव मांडतो.

ध्रुवकिशोर पाटील :-

मा. महापौर मॅडम विरोधी पक्षनेते बोलतात काय आणि करतात काय. जर त्यांना खरच इच्छा असती तर ज्यावेळी स्टॅडींगमध्ये प्रशासनाने अर्थसंकल्प दिला त्यावेळी हा कर त्यांनी माफ केला असता पण तुम्ही माफ केला नाही. ज्यावेळी आम्ही विषय आणला त्यामुळे आता इलेक्शन आले आहे. आपण ह्या शहरामध्ये घुसू या आणि क्रेडीट घेऊ या. मेहता साहेब तुम्हाला करायचा असता तर स्टॅडींगमध्ये हा कर माफ केला असता पण तुम्ही केला नाही.

नरेंद्र मेहता :-

मा. आयुक्त साहेब खरोखरच आपल्याला ट्रेनिंगची आवश्यकता लागेल. आम्ही उद्या स्टॅडींगमध्ये घेतो आणि मिरा भाईदरचे सगळे कर माफ करून टाकतो. आम्हांला काही हरकत नाही जे होत नाही ते आम्हांला करायची आवश्यकता नाही. जे नियमात आहे तेच आम्ही करणार. स्टॅडींगला करायचे असते तर आम्ही अनेक कर माफ केले असते. हा महासभेचा अधिकार आहे. आम्ही केल्याने होणार असेल तर आम्ही उद्या करतो.

(सभागृहात गोंधळ)

बर्नड डिमेलो :-

मला वाटते आमच्या गावावर सुरुवाती पासून दोन तीन आयुक्त गेले. प्रत्येक आयुक्तांना हा प्रश्न विचारला की ज्यावेळी आपल्याला प्रोजेक्ट दाखविण्यात आला त्यावेळी पण मी विचारतो ह्या एरियाचे काय? अगोदरच्या आयुक्तांनी देखील त्याचे उत्तर दिले नव्हते. आता विरोधी पक्षनेत्याचे म्हणणे पूर्ण शहराला आहे जो

पर्यंत चालू होत नाही तोपर्यंत पूर्ण बंद करावं. म्हणजे त्यांना तेच करायचे आहे की, हे बंद होऊ नये, आमचे एवढेच मत आहे की, जिथे कोट्यावधी खर्च करून शहरामध्ये जे प्लान उपभोग घेणार त्यांना ते लागू असावे जे उपभोग घेणारच नाही त्यांना त्या योजनेतून सूट द्यावी. किंवा त्याला वगळावं. ही मागणी असल्या कारणाने पूर्ण शहराचं बंद करावे तुम्हीच उत्तर दिले होते बजेटमध्ये जमणार नाही मला वाटते इकडीची तिकडची भाषा न करता तुम्हाला जर आवडत असेल सदर विभागाला ती योजना राबवली नाही. त्यांना वगळावे तर सरळ भाषेत सांगितलेले बरे. इकडचे तिकडे घुमवून पाणी फिरवायचे असेल तर एकाच हिशोबाने ठराव मांडावा अशी माझी विनंती आहे.

नरेंद्र मेहता :-

बर्नड डिमेलोनी उत्तन, राई, मोर्वा हे कायम स्वरूपी वगळण्यांत याव. मिरा भाईंदर शहरात तीन वर्षांचा काळ आहे. अडव्हान्समध्ये हे मलप्रवाह कर लावले होते. जी सुविधा अजून चालू झालेली नाही. त्याच्यावर कर आकारणी नक्की करायला पाहिजे. पण सुविधा तर चालू होऊ द्या. माझ्या माहितीप्रमाणे मा. आयुक्त महोदय हायकोर्टामध्ये ह्याच्याबद्दल मलप्रवाह कर आकारता येणार नाही. याबद्दल रिपिटीशन फाईल झाल होत आणि मला १०० टक्के माहित नाही. हायकोर्टाने पण ते नाकारले आहे की अजून चालू झालेले नाही. म्हणून तुम्हाला कर आकारणी करता येणार नाही. हायकोर्टाच्या रिपिटीशन बदल सभागृहाला खुलासा करावा.

भगवती शर्मा :-

हायकोर्टामध्ये इकडच्या स्थानिक लोकांनी एक रिट टाकली होती.

राजेंद्र जैन :-

मा. आयुक्त महोदय सरकारी कामकाज की सुचना हमे यहाँ से मिलेगी या प्रशासनसे मिलेगी।

मा. महापौर :-

आपने मेरा परवानगी नहीं लिया आप बैठीये। बाद में आप बोलिए।

राजेंद्र जैन :-

अधिकारी से सुचना मांगी गई है। प्रशासन देगा या नगरसेवक देगा। उनका विश्वास करेंगे की यहाँ का विश्वास करेंगे। ऑन रेकॉर्ड वहाँ से बोला जाए।

(सभागृहात गोंधळ)

भगवती शर्मा :-

साहब स्थानिक लोगो ने एक रिट डाली थी। जो सिव्हरेज टॅक्स लगाए लेकीन उस रिट ते एक कन्डीशन थी स्थायी समिती के पहले लगाना चाहिए था। वह रिट डालने के बाद हायकोर्ट का निर्णय थी आया था। हम लोगो को भेजा था जिसके अंदर में हुआ था की सिव्हरेज टॅक्स से मुक्ती मिल गई है। मैंने भी दिपक सावंत साहब से पुछा था की क्या हुआ ताकि हम लोग भी जनता के सामने जाके क्या हुआ क्या नहीं हुआ तो इन्होंने बोला यह रिट हुई जिसमे स्थायी समिती नियात के पहले बाद के अंदर में जो ठराव किया था उसको डिसमिस किया है। उसके उपर निर्णय आया है। इसके उपर विधी अधिकारी बोलेगे।

मा. आयुक्त :-

डॉ. जैन साहेबांचा मुद्दा होता की प्रश्न उपस्थित झालेला आहे. आणि त्याचे उत्तर आम्ही द्यावे. उत्तर देण्यासाठी काही हरकत नाही. परंतु सभागृहामध्ये पिठासीन अधिकाऱ्यांनी ज्यांना डायरेक्शन दिलेले आहेत. त्यांनीच उत्तर द्यायला पाहिजे असा माझा समज आहे. कदाचित चूकीचे असेल तर मला सांगा. राहीला प्रश्न मल:निसारण कर लावण्याबद्दल पी.आय.एल. कारण बरेचस दाखल झालेले होते. ह्यासंबंधी एक पी.आय.एल. जे झालेले होत ते पी.आय.एल. मा.उच्च न्यायालयांनी फेटाळले आहे. त्यामुळे कुठलेही कर वसूली करू नये ह्याला सध्या काही बंधन नाही.

मा. महापौर :-

दोन्ही ठराव क्लब करून ठराव मंजूर करत आहे.

प्रकरण क्र. ०७ :-

सन्मा. सदस्य श्री. बर्नड आल्बर्ट डिमेलो यांचा दिनांक ०६/०६/२०१४ रोजीच्या पत्रान्वये दिलेला प्रस्ताव -- मिरा भाईंदर महानगरपालिकेमार्फत लागू केलेल्या भूमीगत गटार योजनेच्याकरातून मुर्घा ते मोर्वा, डोंगरी ते उत्तन, घोडबंदर, चेणा या परिसरातील करदात्यांना सुट देणेबाबत.

ठराव क्र. ०८ :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेकडून जवाहरलाल नेहरू नॅशनल अर्बन रिनीव्हल मिशन अंतर्गत भाईंदर (पूर्व) व भाईंदर (पश्चिम) तसेच मिरारोड या ठिकाणी भूमीगत गटार योजनेचे काम चालू आहे. सदर काम अंतिम टप्प्यात आहे. या योजनेचा लाभ सर्वसाधारणपणे भाईंदर (प.), भाईंदर (पूर्व) येथील नागरीकांना होणार आहे.

मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ मध्ये कलम १२९ (बब) नुसार मलप्रवाह सुविधा लाभ कर लागू करण्याची तरतुद आहे. उक्त तरतुदीनुसार महानगरपालिकेने दि. १५/०२/२०११ रोजी प्रकरण क्र. १०८, ठराव क्र. ९४ ने मलप्रवाह सुविधा लाभ कर सन २०११-१२ या वर्षापासून कर योग्य मुल्याच्या आठ टक्क्या प्रमाणे महानगरपालिकेतील सर्व मालमत्तांवर आकारण्यास सुरुवात केलेली आहे.

सध्याची योजनेतील लाभाध्यांची वस्तुस्थिती पाहता मुर्धा ते मोर्वा, डोंगरी ते उत्तन परिसर, व चेणा घोडबंदर येथील नागरीकांना या योजनेचा लाभ होत नाही. कारण सदर योजना या भागासाठी मनपाने लागू केलेल्या नाही. तरीसुध्दा मुर्धा, डोंगरी, उत्तन या परिसरातील करदात्यांकडून मनपा सदर कर वसूल करीत आहे. ही बाब नैसर्गिक न्यायाला अनुसरून नाही व एक प्रकारे हा तेथील कर दात्यावर अन्याय होत आहे. स्थानिक करदात्यावर होणारा अन्याय लक्षात घेऊन मा. महापौर महोदया, मा. आमदार श्री. गिल्बर्ट मेन्डोन्सा व विधान परिषद सदस्य मा. श्री. मुझफ्फर हुसेन यांनी मा. आयुक्तांकडे लेखी पत्र देऊन सदरचा कर मुर्धा, डोंगरी, उत्तन परिसरातील करदात्यांना कमी करणेकरिता मागणी केलेली आहे. तरी दि. १५/०२/२०११ च्या महासभेमध्ये पारित केलेल्या प्रकरण क्र. १०८ व ठराव क्र. ९४ या ठरावातून मुर्धा, डोंगरी, उत्तन या परिसरातील करदात्यांना १००% सूट देण्यात यावी व सध्या लागू असलेला मलप्रवाह सुविधा लाभ कर वरील गावातील मालमत्तांना सन २०१४-१५ या वर्षापासून आकारू नये. तसेच मिरा भाईंदर शहरात भुयारी गटार योजना रद्द करण्यात येत आहे. तसेच मालमत्ता करामध्ये या परिसरातील नागरीकांना अधिनियमातील तरतुदीप्रमाणे शास्ती कराची आकारणी केली जात आहे. ही शास्ती कराची आकारणी यापुढे कर विभागाने करू नये असा ठराव मांडण्यात येत आहे. गरज भासल्यास सदर ठरावास शासनाकडून मंजूरी घेण्यात यावी.

सुचक :- श्री. बर्नड डिमेलो

अनुमोदक :- श्री. नरेंद्र मेहता

सदर ठरावात सन्मा. सदस्य श्री. मोहम्मद फरिद सिद्दीक कुरेशी यांनी खालीलप्रमाणे सुचना मांडली.

अनुसुची 'ड' प्रकरण २ नियम 'ज' अन्वये मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेमार्फत लागू केलेल्या भुमीगत गटार योजनेच्या मल:निसरण करतुन मुर्धा-डोंगरी-उत्तन या परिसरातील करदात्यांना सुट देणेबाबत प्रस्ताव सदरच्या मा. महासभेमध्ये आहे. तसेच मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेमार्फत शहरामध्ये विविध ठिकाणी भुमीगत गटार योजनेचे काम गेल्या दोन वर्षापासून सुरु असून ते अंतिम टप्प्यामध्ये आहे. मात्र सुरु असलेले भुमीगत गटार योजनेचा लाभ हा मिरा गावठण, काशी गांव, अग्रवाल कॉम्प्लेक्स पासून ते हर्मिटेज कॉम्प्लेक्स या परिसरातील करदाते यांना मिळालेला नाही व योजनेचा लाभ प्रस्तावितही नाही. तरीसुध्दा या परिसरातील करदात्याकडून मनपा सदरबाबत कर वसूल करीत आहे व ही बाब नैसर्गिक न्यायाना अनुसरून नाही.

तरी सदर प्रस्तावामध्ये मिरा गावठण, काशी गांव, अग्रवाल कॉम्प्लेक्स पासून ते हर्मिटेज कॉम्प्लेक्स पर्यंतचा परिसर मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेमार्फत लागू केलेल्या मल:निसरण कर वगळण्यात यावा, अशी मी सुचना मुळ ठरावात मांडत आहे.

सदर ठरावात सन्मा. सदस्य श्री. प्रेमनाथ पाटील यांनी खालीलप्रमाणे सुचना मांडली.

सदर ठरावात सुचना मांडीत आहे की, खारीगाव, गोडदेव, नवघर बंदर वाडी, तसेच बाळाराम पाटील रोड, नवघर रोड, नवघर फाटक रोड येथे भुयार गटार योजना होणार नसून तरी त्यांना मलप्रवाह लाभकर रद्द करावी अशी मी सुचना मांडीत आहे.

ठराव सुचनेसह सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ८, सन्मा. सदस्य श्री. हंसु कुमार पांडे यांचा दिनांक ०६/०६/२०१४ रोजीच्या पत्रान्वये दिलेला प्रस्ताव. मिरा भाईंदर शहराकरीता शासनाने लागू केलेला स्थानिक संस्था कर रद्द करणेबाबत.

हंसुकुमार पांडे :-

सन २०१०-११ मध्ये महाराष्ट्र शासनाने प्रायोगिक तत्वावर तीन ते चार महानगरपालिका हद्दीत स्थानिक संस्था कर नव्याने लागू केला आहे. त्यामध्ये मिरा भाईंदर महानगरपालिकेचा समावेश होता. त्यानंतर राज्य शासनाने टप्या-टप्याने सन २०१३ अखेर मुंबई वगळता राज्यातील सर्व महानगरपालिका हद्दीत स्थानिक संस्था कर लागू केलेला आहे. स्थानिक संस्था कर वसुली पध्दतीमध्ये स्वयंप्रेरित व स्वयं निर्धारणद्वारे कर भरावयाचा असल्यामुळे लघु व मध्यम उद्योग व्यापारांना अतिशय गैरसोयीचे व जिकरीचे होत आहे. स्थानिक संस्था कर पध्दतीमुळे शासनाच्या धोरणाबाबत नागरीकांमध्ये तीव्र नाराजी व असंतोष निर्माण झालेला आहे व यामुळे मागील वर्षी राज्यातील विविध शहरातील व्यापारांनी निदर्शने करून आंदोलने केलेली आहेत. सदर कर रद्द करणेकरिता शहरातील व्यापाऱ्यांनी महानगरपालिकेकडे व शासनाकडे वेळोवेळी मागणी केलेली आहे. मिरा भाईंदर शहराचे आमदार श्री. गिल्बर्ट मेन्डोन्सा, विधानपरिषद सदस्य श्री. मुझफ्फर हुसैन व मा. महापौर व उपमहापौर महोदया यांनी राज्याचे मा. मुख्यमंत्री महोदयांकडे व शासनाच्या प्रधान सचिवांकडे मिरा भाईंदर शहराचा स्थानिक संस्था कर रद्द करणेकरिता आग्रही मागणी केलेली आहे. तरी संपूर्ण राज्यामध्ये विविध औद्योगिक संस्थांच्या माध्यमातून स्थानिक संस्था कर रद्द करणेबाबत सुरु असलेली चळवळ तसेच मिरा भाईंदर शहराच्या नागरिकांची व व्यापाऱ्यांच्या मागणीला प्रतिसाद देत मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेने लागू केलेले स्थानिक संस्था कर रद्द करण्याचा प्रस्ताव राज्य शासनाकडे पाठवावा व यास्तव महापालिकेला होणारा आर्थिक तोटा अनुदानाच्या स्वरूपात राज्य शासनाकडून प्राप्त करण्याची उपाययोजना करावी, असा मी ठराव मांडत आहे.

ध्रुवकिशोर पाटील :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

प्रशांत दळवी :-

महाराष्ट्र शासनाने सन २०१०-११ या वर्षामध्ये स्थानिक संस्था कर नव्याने लागू केलेला आहे. हा कर लावताना मुंबई वगळता सर्व राज्यामध्ये स्थानिक संस्था कर चालू आहे. या कराची वसुलीची पध्दत अत्यंत क्लिष्ट आहे. वसुली पध्दतीमध्ये व्यापाऱ्याने स्वयंम प्रेरित व स्वायत्त निर्धारनाद्वारे कर भरावयाच्या असल्यामुळे व्यापारी कारखानदार यांना अतिशय गैरसोयीचे होत आहे. व हा कर भरण्यास व्यापारी संघटना योग्य प्रतिसाद देत नाही. तसेच शासनाच्या या धोरणाबाबत व्यापारी वर्गात व नागरीकांमध्ये तिब्र नाराजी व असंतोष आहे. हा कर रद्द व्हावा म्हणून शहरातील व्यापारी नेहमीच महानगरपालिकेकडे व शासनाकडे आपला निषेध व्यक्त करीत आहे. एल.बी.टी. कर लागू होण्यापूर्वी शासनाने उद्योगधंद्यावर व्हॅट कर प्रस्तावित केलेला आहे. या व्हॅट करामधून सर्व नगरपालिका व महानगरपालिकांना त्यांच्या हिश्यांची एल.बी.टी. कराची रक्कम देण्यात येईल असे आश्वासित केले होते. परंतु शासनाने नव्याने एल.बी.टी. कराची आकारणी करून उद्योजकांवर अतिरिक्त भार टाकलेला आहे. सदर एल.बी.टी. कर रद्द करणेबाबत शासन स्तरावर कार्यवाही चालू आहे. या कार्यवाहीची वाट न पाहता मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेने दि. १/०७/२०१४ पासून हा कर रद्द करावा तसेच अर्थसंकल्पात येणारी तुट भरून करण्याकरीता अन्य उत्पन्नाचे मार्ग तयार करावेत असा ठराव ठेवण्यात येत आहे.

प्रेमनाथ पाटील :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

नरेंद्र मेहता :-

शासनाचा निर्णय होईपर्यंत १ जुलै पासून ह्या शहरात एल.बी.टी. बंद करावी. आपली महानगरपालिका तेवढी सक्षम आहे. एक दोन महिने लागतील. १५ ऑगस्ट पर्यंत सरकार आहे. तिथपर्यंत त्यांच्याकडून करून घ्यावे. दिड महिन्याचे नुकसान आपण भरू या. म्हणून १ जुलै पासून रद्द करावे. उद्या परवा फलक लावून पेपर नोटीस करून लोकांना सांगा की जुने बाकी आहे ते भरून घ्या १ तारखेपासून बंद.

भगवती शर्मा :-

साहब बहोत अच्छी सोच है। इन्होंने बोला १ जुलै से उनसे वसूली किया जाए। हमारा भी यही मत है की शहर में एल.बी.टी. नहीं लगनी चाहिए। वैसा ही खुला मन दिखाओ सिव्हरेज के लिए जो अभी भर रहे है उत्तन, डोंगरी वाले उनके लिए न्याय करो। हमारी भी यही एक इच्छा है आप भी सी.एम. साहब के मिटींग मे गई थी जहाँ पे आपने बोला था हमारे शहर की भले ही एक एल.बी.टी. की वसूली हरसाल में बढ़ती गई होगी। व्यापारियों का इधर जनता का खुला मन है। लेकिन यहाँ पे आमदार साहब ने भी एक पत्र दिया था। यहाँ की एल.बी.टी. तुरंत रद्द की जाए। तत्कालीन सि.एम. ने ऑक्ट्रॉय के लिए ऑक्ट्रॉस हटाया जाएगा। उस समय व्हॅट लगाया जाएगा। व्हॅट लगाने के समय मे दुसरा कोई भी कर व्यापारियों को लागू नहीं होगा। लेकिन उसके बाद भी एल.बी.टी. लागू हो गई। लेकिन आज हमारा ठोस निर्णय है की, व्यापारियों को एल.बी.टी. से मुक्त किया जाए। इनका भी एक सुचना ले लो।

फरीद कुरेशी :-

मा. महापौर मॅडम माझी सुचना घेण्यांत यावी.

मा. महापौर :-

दोन्ही ठराव क्लब करून मंजूर करत आहे.

प्रकरण क्र. ०८ :-

सन्मा. सदस्य श्री. हंसु कुमार पांडे यांचा दिनांक ०६/०६/२०१४ रोजीच्या पत्रान्वये दिलेला प्रस्ताव -- मिरा-भाईंदर शहराकरीता शासनाने लागू केलेला स्थानिक संस्था कर रद्द करणेबाबत.

ठराव क्र. ०९ :-

महाराष्ट्र शासनाने प्रायोगिक तत्वावर सन २०१०-११ या वर्षामध्ये स्थानिक संस्था कर नव्याने लागू केलेला आहे. शासनाने मुंबई वगळता सर्व शहरामध्ये टप्पाटप्पाने स्थानिक संस्था कर चालू केला आहे. या कराची वसुलीची पध्दत अत्यंत क्लिष्ट आहे. वसुली पध्दतीमध्ये व्यापाऱ्याने स्वयंम प्रेरित व स्वायत्त निर्धारनाद्वारे कर भरावयाच्या असल्यामुळे व्यापारी कारखानदार यांना अतिशय गैरसोयीचे होत आहे. व हा कर भरण्यास व्यापारी संघटना योग्य प्रतिसाद देत नाही. तसेच शासनाच्या या धोरणाबाबत व्यापारी वर्गात व नागरीकांमध्ये तिब्र नाराजी व असंतोष आहे. हा कर रद्द व्हावा म्हणून शहरातील व्यापारी नेहमीच महानगरपालिकेकडे व शासनाकडे आपला निषेध व्यक्त करून आंदोलने करीत आहेत. मिरा भाईंदर शहराचे आमदार श्री. गिल्बर्ट मॅन्डोसा, विधानपरिषद सदस्य श्री. मुझफ्फर हुसैन व मा. महापौर व उपमहापौर महोदया यांनी राज्याचे मा. मुख्यमंत्री महोदयांकडे व शासनाच्या प्रधान सचिवांकडे मिरा भाईंदर शहराचा स्थानिक संस्था कर रद्द करणेकरिता आग्रही मागणी केलेली आहे.

एल.बी.टी. कर लागू होण्यापूर्वी शासनाने उद्योगधंद्यावर व्हॅट कर प्रस्तावित केलेला आहे. या व्हॅट करामधून सर्व नगरपालिका व महानगरपालिकांना त्यांच्या हिश्यांची एल.बी.टी. कराची रक्कम देण्यात येईल असे आश्वासित केले होते. परंतु शासनाने नव्याने एल.बी.टी. कराची आकारणी करून उद्योजकांवर अतिरिक्त

भार टाकलेला आहे. सदर एल.बी.टी. कर रद्द करणेबाबत शासन स्तरावर कार्यवाही चालू आहे. संपूर्ण राज्यामध्ये विविध औद्योगिक संस्थांच्या माध्यमातून स्थानिक संस्था कर रद्द करणेबाबत सुरु असलेली चळवळ तसेच मिरा भाईंदर शहराच्या नागरिकांच्या व व्यापाऱ्यांच्या मागणीला प्रतिसाद देत शासन स्तरावर एल.बी.टी. रद्द करण्याच्या कार्यवाहीची वाट न पाहता मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेने दि. १/०७/२०१४ पासून हा कर रद्द करावा. तसेच अर्थसंकल्पात येणारी तुट भरून करण्याकरीता अन्य उत्पन्नाचे मार्ग तयार करावेत असा ठराव ठेवण्यात येत आहे.

सुचक :- श्री. हंसुकुमार पांडे

अनुमोदक :- श्री. प्रशांत दळवी

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ९, सन्मा. सदस्य श्री. प्रशांत एन. केळुसकर यांचा दिनांक ०६/०६/२०१४ रोजीच्या पत्रान्वये दिलेला प्रस्ताव. केंद्र शासनाच्या जे.एन.एन.यु.आर.एम. योजनेअंतर्गत परिवहन सेवेकरिता बस खरेदी करणे व बस चालविण्याचे धोरण निश्चित करणेबाबत.

मा. महापौर :-

विरोधी पक्षनेते केळुसकर सर का है। उनको बोलने दो। वह प्रेझेंट है उनको बोलने दो।

नरेंद्र मेहता :-

मॅडम “ज” प्रस्ताव विषय पटलावर विषय आहे आणि त्याच्यावर कोणालाही बोलता येईल.

मा. महापौर :-

बोलता येणार आहे परंतु त्यांना सुरुवात तरी करू द्या. इथला नियम बोलत आहे. त्यांना दोन मिनिट बोलू द्या, मग कॅरी फॉरवर्ड करा. ज्यांनी नांव दिले आहे तो बोलणार.

प्रशांत केळुसकर :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेची सध्याची लोकसंख्या व शहरामधील नविन होणारी बांधकामे व घर संकुलन विचारात घेता शहरामध्ये परिवहन व्यवस्थेत सुधारणा आणण्याकरीता व नागरीकांना कार्यक्षम परिवहन सेवा देणेकरिता महानगरपालिकेने सन २००९ मध्ये केंद्र शासनाच्या जव्हारलाल नेहरू नागरी पुर्नरोत्थान अभियान योजनेअंतर्गत २५० बसेस खरेदी करणेकामी मा. स्थायी समिती ठराव क्र. ९ दि. २२/०५/२००९ व मा. महासभा ठराव क्र. ४ दि. १८/०४/२००९ अन्वये मंजुरी दिलेली होती. त्या अनुशंगाने पहिल्या टप्प्यात सन २०१० मध्ये ५० बसेस खरेदी केल्या होत्या. या ५० बसेस पी.पी.पी. तत्वावर चालविण्यात याव्यात असे धोरण मा. महासभा दि. ११/०२/२०१२ अन्वये ठराव क्र. ५१ प्रमाणे घेण्यांत आले व हा ठेका मे. कॅस्टोल इन्फ्रॉ.प्रा.लि. यांना प्रति कि.मी. रू. १ प्रमाणे रॉयल्टीच्या स्वरूपात देण्यात आलेला आहे. सदर ठेकेदार रॉयल्टीची ठरल्याप्रमाणे रक्कम मनपाकडे जमा करत नाही. व करारनाम्यातील अटीशर्तीचा भंग करीत आहे. या ठेकेदारावर मनपा कडून कोणत्याही प्रकारची कारवाई केली जात नाही. त्याशिवाय सध्या देत असलेली बस सेवा निकृष्ट दर्जाची असून सर्व बसेसची अवस्था दयनिय आहे. सदर परिवहन योजनेमध्ये ५० टक्के महानगरपालिकेचा व ५० टक्के ठेकेदाराचा सहभाग असावा असे ठरलेले होते. परंतु मे. कॅस्टोल इन्फ्रॉ.प्रा.लि. या ठेकेदारास ठेका देताना ५० टक्क्याचा सहभाग ठेकेदाराकडून घेतलेला नाही. यामुळे सध्या चालवित असलेला परिवहन ठेका नुकसानीस जात आहे. या ठेकेदाराच्या विरोधात मा. उच्च न्यायालय, मुंबई येथे जनहित याचिका दाखल करण्यात आलेली होती. त्यामध्ये १ ते १० मुद्दे उपस्थित करून मुद्दे निहाय कार्यवाही करण्याचे आदेश मा. उच्च न्यायालयाने परिवहन विभागास दिलेले आहे. परंतु यावर परिवहन विभागाने काय कार्यवाही केली याचा अहवाल देण्यात आलेला नाही. केंद्र शासनाच्या दि. १६/०८/२०१३ च्या निर्णयानुसार बसेस व आवश्यक साधनसामुग्री खरेदी करण्याचे धोरण निश्चित झालेले आहे. या धोरणाप्रमाणे महानगरपालिकेने मा. स्थायी समिती यांचे ठराव क्र. २९ दि. ७/०२/२०१३ नुसार बस व साधनसामुग्रीची मागणी बाबतचा अहवाल तयार करण्याचे काम मे. अर्बन मास ट्रान्झीट कंपनी यांना दिले. केंद्र शासनाने दि.२४/०९/२०१३ च्या सी.एस.एम.सी. बैठकीमध्ये महानगरपालिकेने सादर केलेल्या प्रकल्प अहवालाप्रमाणे बस व साधनसामुग्री खरेदी करण्यास निधी मंजूर केला. त्या अनुशंगाने १०० बसेस व साधनसामुग्री खरेदी करण्याच्या निविदा उपक्रमाने घाईघाईने मागविण्यात आलेल्या आहेत. या निविदा मागवितांना परिवहन उपक्रमाने लोकप्रतिनीधी बरोबर कोणत्याही प्रकारची चर्चा केलेली नाही.

(दर प्रती बस)

अ.क्र.	बसेसचा प्रकार	बसेसची संख्या	वोल्वा मोटर्स	टाटा मोटर्स	एकूण किंमत
१	400 mm diesel premium segment AC	१०	१,००,७४,०००/-	--	१०,०७,४०,०००/-
२	900 mm diesel standard non AC	७०	--	४०,१०,४४३/-	२८,०७,३१,०१०/-

मा. महासभा दि. २३/०६/२०१४ (दि. ११/०६/२०१४ ची तहकुब सभा)

३	650 mm diesel mini non AC	१०	--	--	--
४	900 mm diesel midi non AC	१०	--	२६,११,४८८/-	२,६१,१४,८८०/-

बसेस खरेदीसाठी करण्यासाठी दि. २७/१२/२०१३ व दि.१३/१२/२०१३ पर्यंत मुदत वाढ देण्यात आलेली होती. यानंतर तांत्रिक दृष्ट्या पात्र असलेल्या ठेकेदारांना प्रशासनाने दि. ५/०३/२०१४ रोजी कार्यादेश दिलेले आहेत. प्रशासनाने दराबाबत विचारविनिमय निर्णय घेण्यासाठी दि. १४/०२/२०१४ रोजी सदर विषयाचा गोषवारा मा. स्थायी समितीस सादर करण्यात आला होता. गोषवारा सादर केल्यानंतर दि. १७/०२/२०१४ रोजी मा. स्थायी समितीची बैठक घेण्यात आली होती. वरील घटनाक्रम लक्षात घेता दि. २४/०९/२०१३ ते दि. ५/०२/२०१४ (गोषवारा मध्ये नमूद केल्याप्रमाणे) पर्यंत प्रशासनाकडे वेळ असून सुध्दा लोकप्रतिनिधींना या योजनेची माहिती व बस खरेदीचा तपशील मा. स्थायी समितीच्या सदस्यांना व नगरसेवकांना यांना दिलेली नाही. व परस्पर आपल्या अधिकाऱ्यात सदर निविदा अंतिम करून मंजूर केलेल्या आहेत. बस खरेदी करत असताना बस खरेदीचे धोरण कसे असावे, बस चालविण्याचे धोरण निश्चित करणे, कोणामार्फत, कोणत्या मार्गावर बसेस धावणार आहेत, बसेसची देखभाल दुरुस्ती, इंधन वंगण, बस डेपो करिता जागा व अन्य **Liability**, महानगरपालिकेचे आर्थिक हित काय असावे, महानगरपालिकेने उभारलेली रक्कम कंट्राटदार गुंतवणूकीच्या माध्यमातून महानगरपालिकेस कसा देईल, सदर प्रकल्प पी.पी.पी. तत्वावर द्यावयाचा असल्यास रॉयल्टीचा दर व पध्दती निश्चित करणे आवश्यक आहे. या सर्व धोरणांची माहिती प्रशासनाने सर्व नगरसेवकांना देणे अपेक्षित आहे. परंतु अशा प्रकारची कोणतीही कार्यवाही परिवहन विभागाकडून झालेली नाही. या उपक्रमामध्ये आपण सादर केलेल्या बस खरेदी निविदेमध्ये १० बसेस वॉल्वो कंपनीच्या असणार आहेत. या १० बसेस कोणत्या मार्गावर चालणार आहेत. या बसेसची देखभाल दुरुस्ती या बसेसवर काम करणारे चालक व वाहक यांच्या कामाच्या मर्यादा कशा असाव्यात, या महागड्या बसेस परिवहन विभाग कुठे उभ्या करणार आहेत, प्रती कि.मी. च्या मागे भाडे किती असावेत इ. चा सविस्तर अहवाल व धोरण परिवहन विभागाने तयार करणे आवश्यक होते. तसेच महानगरपालिका क्षेत्रातील रस्त्यांची लांबी व रुंदी व सध्याची परिस्थिती पाहता वॉल्वो बसेस चालविणे प्रशासनाच्या मर्यादापलिकडे आहे. सदर विषय धोरणात्मक असल्याने बसेस खरेदी करणे व धोरण निश्चित करणेकामी मा. महासभेमध्ये चर्चा होऊन निर्णय घेणे अपेक्षित होते. तरी मा. आयुक्त सो., यांनी दिलेले कार्यादेश रद्द करण्यात यावे. व संबंधीत ठेकेदारास कोणत्याही प्रकारचे देयक देवू नये. सदर विषय हा धोरणात्मक असल्याने मा. महासभेपुढे फेरसादर करून त्यावर सखोल चर्चा व्हावी अशी मागणी करण्यात येत आहे. तसेच याकामी दोषी अधिकाऱ्यांवर कारवाई करावी, दिलेले कार्यादेश रद्द करण्यात यावे व बस खरेदीचे धोरण निश्चित करणे व खरेदी करणे. तसेच वस्तुस्थितीचे गांभीर्य वरील हकीगतीचा विचार करता परिवहन उपक्रमाकरीता जीईएफ-५ योजनेअंतर्गत व बस खरेदी करणेकरीता मागविण्यात आलेली निविदा देणेबाबतचा प्रस्ताव फेरसादर करण्यात यावा असा ठराव मांडण्यात येत आहे.

राकेश शहा :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

नरेंद्र मेहता :-

मा. महापौर मॅडम, २०१० साली आपण निर्णय घेतलेला मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची बसेस ठेका पध्दतीने चालावी आणि त्यामध्ये ५० टक्के गव्हर्नमेंट ग्रॅन्ट होता आणि ५० टक्के महानगरपालिकेचा सहभाग होता. त्यावर महानगरपालिकेने ठरवले की ५० टक्के आपल्याला टाकता येणार नाही. आणि बसेस सगळ्या सांभाळता येणार नाही. जुना ठेका आपण रद्द केला. नुकसान भरपाई महानगरपालिकेने आपल्या फंडातून त्यांना करून दिली. कारण ठेक्याची मुदत आपण रद्द केली. आपल्याला ३-४ करोड रूपये मोजायला लागले. जे.एन.एन.यु.आर.एम. अंतर्गत बसेस प्राप्त झाले. १०० बसेसचा करारनामा केस्ट्रल इन्फ्रा. ह्याच्यामार्फत केला गेला. मिरा भाईंदर महानगरपालिका महासभेने ठरवले होते की, मिरा भाईंदर महानगरपालिकेमध्ये जेवढी परिवहन सेवा आहे. ठेका पध्दतीने ठेकेदारामार्फत चालवली जाणार. महानगरपालिकेचा जो काही सहभाग आहे तो ठेकेदार भरतील आणि प्रती १ रूपया कि.मी. प्रमाणे त्यांच्याकडून आकारणार. ५२ बसेस पहिल्या ५० बसेस नंतर टोटल १०२ बसेस या मिरा भाईंदर शहरात चालत होत्या. त्या आता ४० वर आल्या आहेत. आता सर्वात जास्त नुकसान उत्तनच्या एकमात्र प्रवास आहे. बसेस आहे. बाकी ठिकाणी शहरी भाग आहे. रिकशा इझिली शेअरिंगवर अवेलेबल होतात. उत्तनकरांचे सर्वात जास्त हाल होतात. यावर अनेकदा चर्चा झाली पण बसेसमध्ये आजपर्यंत सुधारणा आली नाही. ह्यावर मा.उच्च न्यायालयात रिट पिटीशन पण दाखल झाली. त्यावर १० मुद्द्यांवर चर्चा पण झाली. त्यावर कुठल्याही प्रकारची कारवाई झाली नाही. १०२ बसेसचे कॉन्ट्रक्टर आणि ४० बसेस चालतात. अजून आपल्याकडून त्याच्यावर काही निर्णय झालेला नाही. ठेकेदारावर कुठल्याही प्रकारची कारवाई केली गेली नाही. हे सगळे आपण महासभेत ठरवले. आमची बसेस आम्ही चालवू शकत नाही. म्हणून ठेकेदाराला अपॉइन्ट केले आता नविन गव्हर्नमेंट जे.एन.एन.यु.आर.एम. अंतर्गत आपल्याला नविन बसेस १०० टक्के ग्रॅन्टनी द्यायचा हा निर्णय झाला. ज्यावेळी निर्णय झाला तेव्हा मा. आयुक्त प्रशासनांनी महासभेपुढे यायला पाहिजे की एवढ्या बसेस आपल्याला उपलब्ध होणार आहे. त्यामध्ये महासभेचे धोरण काय? आपण चालवणार गव्हर्नमेंट कडून ग्रॅन्ट घ्यायची १०० टक्के ठेकेदाराला अनुदान घ्यायचे किंवा महानगरपालिकेने चालवायची. किती बसेस घ्यायची. उदा. सांगतो माझ्या माहितीप्रमाणे वॉल्वो बसेस ५०

मंजुर झाल्या होत्या. पण त्या १० चं घ्यावी. आता १० का ५० का नाही. ते कोणी ठरवायचे हा महासभा सुप्रिम बॉडी आहे ह्यांनी ठरवायला पाहिजे की ती बसेस आपण घ्यायच्या. परस्पर अधिकारी जाऊन सांगून आले की १० बसेस आम्हांला द्या. व्हॉल्वो बस म्हणजे एक करोडची बस. आपण ती १०-१५ लाखाची बस सांभाळू शकत नाही. आपल्या बसेस उभ्या उभ्या जळतात. बसेसची व्हॉरेन्टी गॅरंटी ह्याला पर्याय नाही. आपल्याकडे व्हॉल्वो बसेसचा ड्रायव्हरपण नाही. अर्धे ड्रायव्हर विदाऊट बॅचेस वाले बसेसची परिस्थिती अशी आहे. पत्रा वाकडा झाला, अॅक्सीडेन्ट होता. सगळ्या बसेस नॉन मेन्टेनन्स आहेत. १-१ करोडची बस घेऊन त्याचा मेन्टेनन्स करायची आपली क्षमता आहे का? आणि ह्या सगळ्या विषयावर ज्यावेळी महासभेने ठरवले की मिरा भाईंदर शहराच्या बसेस पीपीपी तत्वावर चालतील. मा. आयुक्तांना किंवा प्रशासनाला वाटले असेल की हे शहराच्या हिताचे आहे किंवा हे मनपाच्या हिताचे आहे. हा विषय महासभेपुढे सादर केला पाहिजे होता की आता आपण ह्यामध्ये काय केले पाहिजे. आपण बसेसची ऑर्डर देऊन टाकली. ते ठेकेदार चालवणार की महानगरपालिका चालवणार. उद्या विषय आणला आणि बोलणार आम्ही चालवणार. मग आपण काय करणार? त्यावेळी काय बोलणार आणि अधिकारी पण मला वाटत नाही कोण चालवेल. मग बसेस कोण चालवणार? ह्यासाठी निर्णय होणे गरजेचे होते. शासनाची मंजुर केलेली तारीख आपण बघा. अंतिम मान्यता झालेली २४/०९/२०१३ रोजी आपल्याला निधी मंजुर झाला. बसेस अॅलोट झाली. मा.आयुक्तांनी निधी मान्यतेसाठी निविदा स्थायी समितीपुढे सादर केले. जानेवारी, फेब्रुवारी, मार्च, एप्रिल, मे, जून अजून स्टॅडींगपुढे निविदा गेली नाही. निविदा ओपनच होत नाही. मा. आयुक्तांनी ९ व्या व १० व्या महिन्यांत बसेसचा विषय सादर करायला पाहिजे. ह्या शहरात लोकप्रतिनिधी आले. स्थायी समिती सक्षम बॉडी आहे. त्याच्या परवानगीची आवश्यकता नाही. असे अनेकदा झाले. आम्ही ह्या मनपामध्ये पी.पी.पी वर ठराव केला आम्ही स्टॅडींगमध्ये महापौरांच्या अधिकाराचा वापर करायचा का? आमचा अधिकार नाही. आम्ही चर्चा करत होतो. नक्की ह्या महासभेने धोरण ठरवले आहे. त्याला ओव्हर रूल करायचे का? निविदा परस्पर द्यायची का? पॉलिसी आम्हांला माहित नाही. ड्रायव्हर कोण? कंडक्टर कोण? पद मंजुरी झाली की नाही झाली? आणि व्हॉल्वो बस घेऊन ठेका पध्दतीने ड्रायव्हर देणार. १०,०००/- वाला ते बस चालवतील का? एवढा घाई घाईने हा निर्णय घेतलेला आहे. का घेतला? हा प्रश्नचिन्ह आहे. ह्या सभेत आमचे गंभीर म्हणणे आहे की, महासभेपुढे निर्णय होणे गरजेचे आहे. सदर बसेस खरेदी करायला पाहिजे की, नाही करायला पाहिजे. १०२ बसेस केल्या. त्याच्यावर कोणत्याही प्रकारची कारवाई करत नाही ठेकेदारांना आपण कॅन्सल करत नाही. आमची ठाम मत आहे. मा. आयुक्त साहेब स्टॅडींग आणि महासभेचे दोघांचा अधिकार वापरला ह्याचा खुलासा करावा.

मा. आयुक्त :-

केंद्र शासनाने पूर्ण देशाची जी मोठी महानगर आहे. जी मोठी शहर आहेत किंवा जी वेगाने वाढणारी शहर आहेत. त्यासाठी जवाहरलाल नेहरू नागरी पुर्नःनिर्माण योजना घोषित केली होती. त्या योजनेचे स्वरूप वेगळे होत. सुरुवातीला जेव्हा आपण वेगळे प्रस्ताव सादर केले. त्यामध्ये बस खरेदी हा एक प्रस्ताव होता. त्याच्यानंतर अंडर ग्राऊंड सिव्हरेज सिस्टम हा एक होता आणि बी.एस.यु.पी. हा तिसरा प्रस्ताव होता. ह्या तिन्ही प्रस्तावामध्ये केंद्र शासनाकडून आपल्याला ३५ टक्के अनुदान, राज्य शासन १५ टक्के अनुदान आणि उर्वरित खर्च त्या-त्या मनपानी करायचा होता. बस खरेदीचा प्रस्ताव जेव्हा मा. महासभेपुढे आला. मा. महासभेने २५० बसेस खरेदीचा प्रस्ताव, आर्थिक, प्रशासकिय मान्यता ही २००९-१० मध्ये दिली होती. त्यानुसार सुरुवातीलाच जेव्हा आपण प्रस्ताव सादर केला तेव्हा ५० बसेसचा केला आणि नंतर आपण कन्सलटन्ट नेमला. केंद्र शासनाची उप-कंपनी आहे. ए.यू.एम.पी.सी. म्हणून त्या कंपनीला आपण आपला कन्सलटन्ट नेमला. त्या कन्सलटन्टली असा अहवाल दिला की, ह्या शहराची एकूण बसेसची संख्या १५० ते १८० असायला पाहिजे. बाकीच्या कालबाह्य झालेल्या बसेस सोडून ५० बसेस रस्त्यावर होत्या. म्हणून आपण १०० बसेसचा प्रस्ताव तयार केला. रस्त्याची विविध पातळीवर तपासणी झाली. एम.एम.आर.डी.ए. लेवलला तपासणी झाली. राज्य शासनाची त्याला शिफारस केली. केंद्र शासनांनी देखील त्याला विविध यंत्रणेतून तपासून घेतले. त्या प्रस्तावाला साधारणतः सप्टेंबर- ऑक्टोबर मध्ये मान्यता दिली. मान्यता दिल्यानंतर त्यांनी हे सुध्दा निकष ठरवून दिले की, आपण कुठल्या प्रकारच्या बसेस घ्यावा त्याचे स्पेसिफिकेशन काय असावे. मॅन्युफॅक्चर कोणता देण्यांत यावे, असे विविध बंधन टाकले होते. विविध सुचना देखील निविदा सुचनामध्ये काय काय अंतर्भूत असावे हे देखील ठरवून दिलेले आहे. त्यानुसार आपण निविदा सुचना प्रसिध्द केल्या. सुरुवातीला त्याला आपण मुदतवाढ दिली. मुदत दिल्यानंतर आपण त्याचे ज्या निविदा सुचना आल्या. त्याची तांत्रिक तपासणी केंद्र शासनाच्या कंपनीकडून तपासून घेतली आणि तपासून घेतल्यानंतर जेव्हा त्यांनी म्हटले की ह्या निविदा योग्य आलेल्या आहेत. त्याच्या बरोबर फायनाशियल बीड ओपन केली. व फायनाशियल बीड ओपन केल्यापंतर त्याच्या सोबत वाटाघाटी सुध्दा केल्या. आणि वाटाघाटी करून त्याचे दर आपण काही प्रमाणात कमी करून घेतले. ही कार्यवाही काही प्रमाणात कमी करून घेतले. ही कार्यवाही अत्यंत पारदर्शक प्रमाणे पार पाडली. त्यानंतर केंद्र शासनाने एक बैठक घेतली. त्यांनी अशा सुचना दिल्या की आपल्याला जे काही आदेश द्यायचे आहेत ते २८ फेब्रुवारी पूर्वी द्यायचे आहेत. आपण १४ फेब्रुवारी २०१३ मा. स्थायी समितीला प्रस्ताव दिला. स्थायी समितीला प्रस्ताव दिल्यानंतर आणखी एक पत्रही दिले की आपण हा निर्णय तातडीने घ्यावा. कारण आपल्या २८ फेब्रुवारी पूर्वी करायचे आहे. परंतु तो निर्णय होऊ शकला नाही. १४ फेब्रुवारी नंतर ५ मार्चला आणि आपल्याला माहिती होते की, आचारसंहिता कधीही लागू शकते. आणि एकदा आचारसंहितेत

अडकल्यानंतर परत कार्यादेश देता येत नाही. नियमानुसार ते शक्य होत नाही. आपण ५ मार्चला माझ्या अधिकारामध्ये ७३ क अन्वये महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियमचे ७३ क अन्वये मला अधिकार असल्याचा वापर करून १५ दिवसांच्या आतमध्ये जर स्थायी समितीने जर निर्णय घेतला नाही तर आयुक्तांच्या अधिकारामध्ये तो निर्णय मी घेतला. हा निर्णय परत केंद्र शासनानी, राज्य शासनानी तपासून पाहिला आणि मला हे सांगायला आनंद होतो की ह्यामध्ये मिरा भाईंदर महानगरपालिकेने ज्या बसेस खरेदी केल्या आहेत. त्या इतर मनपाच्या तुलनेमध्ये आपले दर कमी आहेत. हे सांगायला मला आनंद वाटतो. आपल्याला जर आकडेवारी पाहिजे असेल तर आकडेवारी काढून ठेवलेली आहे. ती वाचून दाखवतो. आपण प्रिमियम सिक्वेंट मधल्या व्हॉल्यूच्या १० बसेस घेतल्या १० बसेससाठी आपण युरो फोर ह्या बसेस निवडल्या. महाराष्ट्रामध्ये दोन मनपा आणि इतर ह्याच्यामध्ये युरो फोरच्या ५-६ मनपाच्या तुलनात्मक तक्ता माझ्याकडे आहे. उदा. सोलापूर मनपाचे दर हे आपल्या दरापेक्षा जास्त दर आहेत. आणि महाराष्ट्रात सगळ्यात कमी दर मिरा भाईंदर महानगरपालिकेचे आहेत हे सांगताना मला आनंद होतो. १०० एम.एम. डिझेलच्या ज्या बसेस आहेत नॉन एसी बसेस त्यामध्ये आपण ३० बसेस घेतल्या आहेत. त्या ३० बसेसचे दर कल्याण डोंबिवली मनपाचे दर आणि आपल्या मनपाच्या दराची तुलना केली तर आपले दर कमी आहेत. १०० एम.एमच्या ७० मिनी बस घेतल्या आहेत. त्यामध्ये आपले दर जे आहेत ते नवी मुंबई आणि सोलापूरपेक्षा ते कमी आहेत. सांगायचे तात्पर्य हे की मिरा भाईंदर महानगरपालिकेचे दर कमी आहेत हा एक भाग आणि फक्त मुंबई महापरिषदेमध्ये एकमेव महापालिका अशी आहे की मागच्या वेळेला केंद्र शासन आणि राज्य शासन मिळून ५० टक्के अनुदान मिळाले होते. ह्यावेळेला राज्य शासन आणि केंद्र शासन १०० टक्के अनुदान देत आहे. ही बाब मी इथे अभिमानाने नमूद करू इच्छितो. ह्यानंतर केंद्र शासनाने आपली सगळी प्रक्रिया तपासली. नवीन सरकार सत्तेमध्ये आले आणि जे दर आपण दिले होते त्या दरांना त्यांनी मान्यता दिलेली आहे त्याप्रमाणे पैसे देखील मुक्त केलेले आहेत. निधीदेखील मुक्त करण्यात आलेला आहे. माझ्याकडे दि. १ जून २०१४ केंद्रशासनाचा जी.आर. आहे. त्या जी.आर. अन्वये ५० टक्के रक्कम म्हणजे त्यांच्या हिश्याची ८० टक्के रक्कम होती. त्याच्या ५० टक्के रक्कम कार्यान्वीत निधीस मान्यता दिलेली आहे. थोडक्यात सांगायचे म्हणजे हा व्यवहार अत्यंत पारदर्शक झालेला आहे. ह्याच्यात आपल्या सोबत बाकीच्या महानगरपालिका होत्या पण ज्या महानगरपालिका २८ फेब्रुवारी किंवा आचारसंहिता लागण्यापूर्वी कार्यादेश दिले नसतील तर त्यांचा बसेसचा प्रस्ताव रद्द होण्याची शक्यता निर्माण झाली आहे. तर आपण ह्या शहराचे नुकसान करायचे १०० बसेस मागवायच्या नाहीत की, आपण त्याला आणखी विलंब लावायचा ह्या सदर हेतूने हा निर्णय घेतलेला आहे आणि तो निर्णय पारदर्शकपणे घेण्यात आलेला आहे. ह्यामध्ये इतर मनपाचे रेट माझ्याकडे आहेत आणि फक्त ह्या जी.आर नुसार आपल्या महाराष्ट्रामध्ये फक्त चार मनपाला हा निधी मिळाला आहे. आठ मनपानी प्रस्ताव सादर केले होते. चार मनपानी वर्कऑर्डर वेळेवर न दिल्यामुळे त्यांची ऑर्डर कॅन्सल होतील किंवा त्यांना अनुदान वितरीत होणार नाही. त्यांना बसेस मिळणार नाहीत त्यांना बसेस मागवायच्या झाल्या तर नविन धोरणामध्ये बदल होणार आहेत. त्या बदललेल्या धोरणामध्ये त्यांना सुधारीत प्रस्ताव सादर करायला लागेल. त्याच्यातून आपण वाचलेलो आहेत. आपण १०० पैकी ९० चे आदेश दिले आहेत. १० बसेस आपल्याला येत्या कालावधीमध्ये मिळू शकतील. दुसरा प्रश्न होता कंत्राटदार किंवा ऑपरेटर नेमण्याची ऑपरेटर नेमण्यासाठी सॅमलटेनिस्ली प्रोसेस सुरु केलेली आहे. आपण असे कधी करणार नाहीत की बसेस येऊन उभ्या आहेत आणि ऑपरेटरची कारवाई सुरु आहे. आपण असे नियोजन केलेले आहे की ऑपरेटर नेमायच आणि बसेस एकाच वेळी यायच आणि ऑपरेटर समजा नेमला आणि बसेसची वाट बघत बसायची कारण वातावरण अनिश्चिततेच होत म्हणून आपल्याला तेही करणे शक्य नव्हते. म्हणून आपली ती ही प्रोसेस चालू आहे. त्यासाठी टेंडर १-२ दिवसात प्रसिध्द होतील. त्यामध्ये केंद्र शासनाच्या अधिपत्याखाली असलेल्या विविध यंत्रणानी ज्या उपाययोजना सुचवल्या आहेत. जी कार्यपध्दती ठरवून दिलेली आहे त्या कार्यपध्दतीचाच वापर करून आपण ते टेंडर नोटिस काढतो. टेंडर नोटिस काढण्याचा हेतू हा आहे की शहरामध्ये एक ऑपरेटर असला तर तिथे मोनोपॉली होऊ नये म्हणून आपण त्याला दुसरा ऑपरेटर तयार व्हावा. दुसऱ्या ऑपरेटरमार्फत देखील व्हाव. आता योगायोगाने हाच ऑपरेटर कमी ह्याच्याने झाला तर त्याच्यावर आपल्याला निर्णय घ्यावा लागेल. तो भाग वेगळा परंतु पर्यायी व्यवस्था असावी. म्हणून आपण पूर्णपणे विचार केलेला आहे. त्याच्या रुटचा आम्ही अभ्यास केलेला आहे. हे सगळे केल ते मा. महासभेने २५० बसेस खरेदीला आर्थिक प्रशासकीय मान्यता देणे आणि आयुक्तांना जे अधिकार प्रदान केलेले आहेत. नियमाची तरतुदी महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे ७३ “क” चा वापर करून केलेले आहे. शासनाकडे देखील माझ्या माहितीप्रमाणे काही तक्रारी झालेल्या आहेत. शासनाकडे देखील अहवाल गेलेला आहे. शासनाने देखील आपला मुद्दा उचलून धरण्याच्या ह्याच्यात आहेत. आपला मुद्दा राज्य शासनाने, केंद्र शासनानी तपासला आणि केंद्र शासनाने तपासून निधी देखील उपलब्ध करून दिलेला आहे. ह्यामध्ये मला १ टक्के देखील शंका नाही की ह्याच्यात काही गैरव्यवहार झाला असेल पूर्णपणे पारदर्शीरित्या कारवाई अवलंबिली गेलेली आहे. मा. स्थायी समितीला आपण प्रस्ताव दिलेला होता. त्याच्यानंतर मी एक पत्र ही दिल होत आपण लवकर निर्णय घ्या. आचारसंहिता लागेल आणि आपली अडचण निर्माण होईल आणि त्याच्यानंतरच परिपूर्ण संधी देऊन हा निर्णय घेतलेला आहे. ह्या निर्णयामध्ये योग्य बदल करावा आणि प्रक्रिया पूर्ण करावी. ह्या शहराचे कधीही न भरून येणारे नुकसान होणार आहे हे सुध्दा आपण

ध्यानात घेतले पाहिजे. ८० टक्के गर्हमेंट ऑफ इंडिया २० टक्के गर्हमेंट ऑफ महाराष्ट्र हे अनुदान आपल्या महानगरप्रदेशामध्ये आपली मनपा सोडली तर ह्याच्यामध्ये कुठल्याही मनपाला मिळालेले नाही.

सुहास रकवी :-

मा. महापौर मॅडम आपल्या आयुक्तांनी त्यांच्या अधिकारात जे काम केले ते अभिनंदन करण्यासारखे आहे. त्यांना एक विचारायचे आहे ह्या ज्या ५० बसेस चालतात त्या कन्टीन्ह्यु चालतील. आणि केस्ट्रल इन्फ्रा. जी आहे त्या कंपनीला ठेका देऊ नये अशी माझी विनंती आहे. आताची स्थिती बघितल्यानंतर त्यांच्या गाड्या, वाहक, चालक त्यांचे नेहमी प्रॉब्लेम असतात त्याची तुम्ही काळजी घ्यावी.

नरेंद्र मेहता :-

मा. महापौर मॅडम, मा.आयुक्त साहेबांनी बसेस आणल्या त्याबद्दल चांगली माहिती दिली. माझा एवढाच प्रश्न होता की सप्टेंबर महिन्यांत निविदा मागवतात. मा.आयुक्त साहेबांना जाणिव होती का ५ मार्चला आचारसंहिता लागणार आहे. २८ मार्चला लागली असती तर काय संभाषण केले असते. २८ पर्यंत विषय आमच्याकडे होता. २८ नंतर १५ दिवस पूर्ण झाले. म्हणजे माहित होते का? तसे काही पिकचर नव्हते ते नंतर समजायला लागलं. नवव्या महिन्यात निविदा मागवली गेली त्याच्याकडे तीन महिने होल्ड केली. शेवटच्या क्षणी सांगतात मंजूर करा. अभ्यास करायला नको. आता मा.आयुक्त साहेब सांगतात आम्ही ऑपरेटर शोधतो आहे. मॅडम आपल्याला माहित आहे त्यांना ऑपरेटर कसा शोधता येणार ते १०० टक्के ग्रॅन्टवर आलेले आहे. कारण ५० टक्के त्याचे होते. आता आपण काय करणार महापालिका चालवतील की तोच ऑपरेटर चालवतील त्यांनाच परत द्यायचे आहे का? एकही सभागृहातील व्यक्ती सांगणार नाही की त्यांना परत द्या. मा.आयुक्त महोदय सांगतात की ११० बसेस आपल्याकडे येतील. ६० बसेसची काळजी आपण घेतली नाही. नविन काय येतात ते घ्या सरकारचे पैसे ते पब्लिकचे पैसे ते चालले असते तर ५० बसेस कमी घेतल्या असत्या. आता १०२ मधून ४० बसेस चालवतात. ६२ बस बंद झाल्या, काही बसेस जळाल्या, त्यावर काही निर्णय झाला नाही. ठेकेदार उद्या सोडून देईल त्याला जबाबदार कोण? त्याच्याकडे एवढी मोठी डिपॉझीट नाही की नुकसान भरून देईल. त्यावर निर्णय झालेला नाही. आम्हांला आयुक्तांनी केले त्यावर काही आक्षेप नाही. आता आयुक्त महोदय सरकारने सांगितले व्हॉल्वो बसेस ५० घ्या. मग आपण १० का घेतल्या. दुसरं म्हणजे व्हॉल्वो बसेस आपण चालवू शकतो का? एक-एक करोडची एक बस आहे. आमची क्षमता आहे का? चालवायची आपण वर्क ऑर्डर देऊन टाकली. १५-२० लाखाची बसेस चालवू शकतो. रूट वगैरे सगळे मान्य करून बॉडीपुढे येऊन त्याच्यावर चांगला निर्णय झाला पाहिजे होता की, भविष्यात येणाऱ्या बसेस आपण चालवणार की ठेकेदार चालवणार की दुसरा ठेकेदार चालवणार? मा.आयुक्तांनी सांगितले की आपण ते बघू. दुसऱ्याला द्यायचे की त्यालाच द्यायचे हे ही सांगितले की त्याच्या बरोबर चर्चा करू तो चालवत असेल १०२ चे ४० केली त्यांना परत बसेस द्यायच्या आहेत का? दिल्यानंतर आपल्याला मान्य होईल का? ती पॉलिसी आम्ही ठरवणार, विव्हिल डिसाईड, बॉडी व्हिल डिसाईड की पुढच्या बसेसचा नक्की काय निर्णय करायचा. मा.आयुक्त महोदय आपण टेंडर मागवणार ते मान्य होणार नाही. तो ठेकेदार कोर्टात पण जाईल. जस महालक्ष्मी तसेच झाले ह्या ठेकेदाराला आपण अपॉईन्ट केले, महालक्ष्मी बोलतो माझे नुकसान भरा. नाहीतर मी कोर्टात चाललो. आपण शेवटी काय बोललो शहराची गरज आहे. बसेस बंद होता कामा नये. किती मागतो चार करोड, मॅडम आपण त्यांना चार करोड दिले. तुम्ही दुसऱ्याला दिले तर हा ठेकेदार कोर्टात जाणार नाही? ही शूड सीट अॅन्ड सॉल्व्ह द प्रॉब्लेम.

भगवती शर्मा :-

चुकीची माहिती देतात. चार करोड कोणाला भरले. डी.एस.आर. रेटप्रमाणे तिकडून जो अहवाल आला त्याप्रमाणे त्यांना डिफेन्स दिला. काहीतरी चुकीची माहिती देतात.

नरेंद्र मेहता :-

आपल्या माहितीसाठी सांगतो विषय काढून बघा.

भगवती शर्मा :-

साहेब तुम्ही अतिशय चांगले काम केले आहे. तुमचे आम्ही अभिनंदन करतो.

नरेंद्र मेहता :-

आम्ही आमचा ठराव मांडलेला आहे.

भगवती शर्मा :-

तुम्ही ठराव करा. आम्हांला पण अभिनंदन करू द्या. साहेब आपने बहोतही अच्छा काम किया है।

मर्लिन डिसा :-

मॅडम मला विचारायचे आहे एवढ्या बसेस आल्यावर आपल्याकडे डेपोसाठी जागा आहे का?

मा. आयुक्त :-

मागच्या डिसेंबरमध्ये जेव्हा मा.महासभा झाली होती. त्यावेळेला मा.महासभेने दोन जागा निश्चीत केल्या आहेत. त्या दोन्ही जागांचे विकास करण्याचे काम प्रगतीपथवर आहे. एक जागा घोडबंदरला आहे आणि एक उत्तनला आहे. एक ईस्टला आणि एक वेस्टला.

भगवती शर्मा :-

इस शहर के अंदर में कोई भी फंड जैसा पहले भी हमारे जे.एन.एन.यु.आर.एम पानी के लिए वैगरे लेंस हो गया था। आपने बहुत अच्छा काम किया फरवरी के एन्ड के अंदर में २८ फरवरी के पहले जाना चाहिए था वह आपने किया सन्मा. सदस्यों ने बोला की, निविदा प्रक्रिया सप्टेंबर, लेकिन निविदा प्रक्रिया के अंदर में प्रसिध्दी नहीं मिलने के कारण से वापिस डिसेंबर के अंदर वह आपने किया आपने वह स्वस्थ परंपरा अंदर में किया की, उसमें कोई भी कमी नहीं रह न जाए। उसके बाद में साहब आपने जब केंद्रशासन से मंजूरी मिलने के बाद उस टेंडर में सर्टीफिकेट लागू करने के हिसाब से १४ फरवरी आपने स्थायी समिती के अंदर में प्रशासनने गोषवारा सादर किया था। मेरे खयाल से १४ फरवरी के बाद में मा. स्थायी समिती दो या तीन बार हुई थी। अगर यह प्रस्ताव उसके अंदर लेके उनके जो भी फेरबदल करने जो भी उनको उसके अंदर चाहिए थे वह कर सकते थे। लेकिन आपने नहीं किया स्थायी समिती के अंदर में उसके बाद के अंदर में आपने अपने अधिकार का युज करते हुए और इस शहर अच्छी सुविधा मिले और फंड भी लेंस नहीं हुए। आपने खाली निविदा प्रक्रिया को मंजूरी दी अपने अधिकार को युज करते हुए और उसके अंदर में बहुतसी पारदर्शकता रखी सभी सदस्यों का एकमत था की जैसे की बसेस आ जाएगी। एजन्सी नियुक्त है की नहीं कौन चलाएगा, कौन नहीं चलाएगा। हमने इसके पहले जैसे की अभी यह जो ठेकेदार चला रहा है, इसके अंदर में भी काफी खामिया रह गयी थी। उस खामिया दुर करते यह जो निर्णय लिया है की विभिन्न माध्यम से कही भी एक एजन्सी को देते है तो आप मोनोपोली कर लेते है, स्ट्राईक करने लगते है। उसके अंदर में हम शहरवासीयोंको बहुत तकलीफ होती है। आपने बहुत अच्छा काम किया। हमारा सबका एकही सोच था साहब इस शहर के अंदर में जैसे अन्य महानगरपालिका वाळू बस भी चल रहीं है, ट्रक भी और ऐसी दुसरी बसेस भी चल रही है। बडे बसेस ही चल रही है। इस शहर के लोगो से टॅक्स के माध्यम से पैसा देते हैरु इस शहर के अंदर में अच्छी से अच्छी सेवा परिवहन के माध्यम से दे सके, आपने जो प्रयत्न किया हम सभी आपका अभिनंदन करते है। लेकिन उसके अंदर इतना ध्यान रखिएगा की जैसे इस ठेकेदार जो गलतियाँ की है वह गलतिया की पुनरावर्ती न हो उसका पूर्ण रुप से ध्यान रखते हुए उस बस सेवा को इस महिने अंत में या अगले महिने के शुरु के अंदर में जल्द से जल्द चालु करे। धन्यवाद।

मा. महापौर :-

ठराव मंजुर करत आहे.

प्रकरण क्र. ०९ :-

केंद्र शासनाच्या जे.एन.एन.यु.आर.एम. योजनेअंतर्गत परिवहन सेवेकरीता बस खरेदी करणे व बस चालविण्याचे धोरण निश्चित करणेबाबत.

ठराव क्र. १० :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेची सध्याची लोकसंख्या व शहरामधील नविन होणारी बांधकामे व घर संकुलन विचारात घेता शहरामध्ये परिवहन व्यवस्थेत सुधारणा आणण्याकरीता व नागरीकांना कार्यक्षम परिवहन सेवा देणेकरीता महानगरपालिकेने सन २००९ मध्ये केंद्र शासनाच्या जव्हारलाल नेहरू नागरी पुर्नरोत्थान अभियान योजनेअंतर्गत २५० बसेस खरेदी करणेकामी मा. स्थायी समिती ठराव क्र. ९ दि. २२/०५/२००९ व मा. महासभा ठराव क्र. ४ दि. १८/०४/२००९ अन्वये मंजूरी दिलेली होती.

त्या अनुशंगाने पहिल्या टप्प्यात सन २०१० मध्ये ५० बसेस खरेदी केल्या होत्या. या ५० बसेस पी.पी.पी. तत्वावर चालविण्यात याव्यात असे धोरण मा. महासभा दि. ११/०२/२०१२ अन्वये ठराव क्र. ५१ प्रमाणे घेण्यांत आले व हा ठेका मे. कॅस्टोल इन्फ्रॉ.प्रा.लि. यांना प्रति कि.मी. रु. १ प्रमाणे रॉयल्टीच्या स्वरूपात देण्यात आलेला आहे. सदर ठेकेदार रॉयल्टीची ठरल्याप्रमाणे रक्कम मनपाकडे जमा करत नाही. व करारनाम्यातील अटीशर्तीचा भंग करीत आहे. या ठेकेदारावर मनपा कडून कोणत्याही प्रकारची कारवाई केली जात नाही. त्याशिवाय सध्या देत असलेली बस सेवा निकृष्ट दर्जाची असून सर्व बसेसची अवस्था दयनिय आहे. सदर परिवहन योजनेमध्ये ५० टक्के महानगरपालिकेचा व ५० टक्के ठेकेदाराचा सहभाग असावा असे ठरलेले होते. परंतु मे. कॅस्टोल इन्फ्रॉ.प्रा.लि. या ठेकेदारास ठेका देताना ५० टक्क्याचा सहभाग ठेकेदाराकडून घेतलेला नाही. यामुळे सद्या चालवित असलेला परिवहन ठेका नुकसानीस जात आहे.

या ठेकेदाराच्या विरोधात मा. उच्च न्यायालय, मुंबई येथे जनहित याचिका दाखल करण्यात आलेली होती. त्यामध्ये १ ते १० मुद्दे उपस्थित करून मुद्दे निहाय कार्यवाही करण्याचे आदेश मा. उच्च न्यायालयाने परिवहन विभागास दिलेले आहे. परंतु यावर परिवहन विभागाने काय कार्यवाही केली याचा अहवाल देण्यात आलेला नाही.

केंद्र शासनाच्या दि. १६/०८/२०१३ च्या निर्णयानुसार बसेस व आवश्यक साधनसामुग्री खरेदी करण्याचे धोरण निश्चित झालेले आहे. या धोरणाप्रमाणे महानगरपालिकेने मा. स्थायी समिती यांचे ठराव क्र. २९ दि. ७/०२/२०१३ नुसार बस व साधनसामुग्रीची मागणी बाबतचा अहवाल तयार करण्याचे काम मे. अर्बन मास ट्रान्झीट कंपनी यांना दिले.

केंद्र शासनाने दि.२४/०९/२०१३ च्या सी.एस.एम.सी. बैठकीमध्ये महानगरपालिकेने सादर केलेल्या प्रकल्प अहवालाप्रमाणे बस व साधनसामुग्री खरेदी करण्यास निधी मंजुर केला. त्या अनुशंगाने १०० बसेस व

साधनसामुग्री खरेदी करण्याच्या निविदा उपक्रमाने घाईघाईने मागविण्यात आलेल्या आहेत. या निविदा मागवितांना परिवहन उपक्रमाने लोकप्रतिनीधी बरोबर कोणत्याही प्रकारची चर्चा केलेली नाही.

(दर प्रती बस)

अ.क्र.	बसेसचा प्रकार	बसेसची संख्या	वोल्वा मोटर्स	टाटा मोटर्स	एकूण किंमत
१	400 mm diesel premium segment AC	१०	१,००,७४,०००/-	--	१०,०७,४०,०००/-
२	900 mm diesel standard non AC	७०	--	४०,१०,४४३/-	२८,०७,३१,०१०/-
३	650 mm diesel mini non AC	१०	--	--	--
४	900 mm diesel midi non AC	१०	--	२६,११,४८८/-	२,६१,१४,८८०/-

बसेस खरेदीसाठी करण्यासाठी दि. २७/१२/२०१३ व दि.१३/१२/२०१३ पर्यंत मुदत वाढ देण्यात आलेली होती. यानंतर तांत्रिक दृष्ट्या पात्र असलेल्या ठेकेदारांना प्रशासनाने दि. ५/०३/२०१४ रोजी कार्यादेश दिलेले आहेत. प्रशासनाने दराबाबत विचारविनिमय निर्णय घेण्यासाठी दि. १४/०२/२०१४ रोजी सदर विषयाचा गोषवारा मा. स्थायी समितीस सादर करण्यात आला होता. गोषवारा सादर केल्यानंतर दि. १७/०२/२०१४ रोजी मा. स्थायी समितीची बैठक घेण्यात आली होती.

वरील घटनाक्रम लक्षात घेता दि. २४/०९/२०१३ ते दि. ५/०२/२०१४ (गोषवारा मध्ये नमूद केल्याप्रमाणे) पर्यंत प्रशासनाकडे वेळ असून सुध्दा लोकप्रतिनिधींना या योजनेची माहिती व बस खरेदीचा तपशील मा. स्थायी समितीच्या सदस्यांना व नगरसेवकांना यांना दिलेली नाही. व परस्पर आपल्या अधिकाऱ्यात सदर निविदा अंतिम करून मंजूर केलेल्या आहेत.

बस खरेदी करत असताना बस खरेदीचे धोरण कसे असावे, बस चालविण्याचे धोरण निश्चित करणे, कोणामार्फत, कोणत्या मार्गावर बसेस धावणार आहेत, बसेसची देखभाल दुरुस्ती, इंधन वंगण, बस डेपो करिता जागा व अन्य **Liability**, महानगरपालिकेचे आर्थिक हित काय असावे, महानगरपालिकेने उभारलेली रक्कम कंट्राटदार गुंतवणूकीच्या माध्यमातून महानगरपालिकेस कसा देईल, सदर प्रकल्प पी.पी.पी. तत्वावर द्यावयाचा असल्यास रॉयल्टीचा दर व पध्दती निश्चित करणे आवश्यक आहे. या सर्व धोरणांची माहिती प्रशासनाने सर्व नगरसेवकांना देणे अपेक्षित आहे. परंतु अशा प्रकारची कोणतीही कार्यवाही परिवहन विभागाकडून झालेली नाही.

या उपक्रमामध्ये आपण सादर केलेल्या बस खरेदी निविदेमध्ये १० बसेस वॉल्वो कंपनीच्या असणार आहेत. या १० बसेस कोणत्या मार्गावर चालणार आहेत. या बसेसची देखभाल दुरुस्ती या बसेसवर काम करणारे चालक व वाहक यांच्या कामाच्या मर्यादा कशा असाव्यात, या महागड्या बसेस परिवहन विभाग कुठे उभ्या करणार आहेत, प्रती कि.मी. च्या मागे भाडे किती असावेत इ. चा सविस्तर अहवाल व धोरण परिवहन विभागाने तयार करणे आवश्यक होते. तसेच महानगरपालिका क्षेत्रातील रस्त्यांची लांबी व रूंदी व सध्याची परिस्थिती पाहता वॉल्वो बसेस चालविणे प्रशासनाच्या मर्यादापलिकडे आहे.

सदर विषय धोरणात्मक असल्याने बसेस खरेदी करणे व धोरण निश्चित करणेकामी मा. महासभेमध्ये चर्चा होऊन निर्णय घेणे अपेक्षित होते. तरी मा. आयुक्त सो., यांनी दिलेले कार्यादेश रद्द करण्यात यावे. व संबंधीत ठेकेदारास कोणत्याही प्रकारचे देयक देवू नये.

सदर विषय हा धोरणात्मक असल्याने मा. महासभेपुढे फेरसादर करून त्यावर सखोल चर्चा व्हावी अशी मागणी करण्यात येत आहे. तसेच याकामी दोषी अधिकाऱ्यांवर कारवाई करावी, दिलेले कार्यादेश रद्द करण्यात यावे व बस खरेदीचे धोरण निश्चित करणे व खरेदी करणे.

तसेच वस्तुस्थितीचे गांभीर्य वरील हकीगतीचा विचार करता परिवहन उपक्रमाकरीता जीईएफ-५ योजनेअंतर्गत व बस खरेदी करणेकरीता मागविण्यात आलेली निविदा देणेबाबतचा प्रस्ताव फेरसादर करण्यात यावा असा ठराव मांडण्यात येत आहे.

सुचक :- श्री. प्रशांत केळूसकर

अनुमोदक :- श्री. राकेश शाह

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. १०, सन्मा. सदस्य डॉ. राजेंद्र जैन यांचा दिनांक ०६/०६/२०१४ रोजीच्या पत्रान्वये दिलेला प्रस्ताव. आरोग्य विभागामार्फत सर्व नगरसेवकांना त्यांच्या प्रभागातील साफसफाई, कर्मचारी, मशीन व इतर साहित बाबत माहिती उपलब्ध करून देणेबाबत.

राजेंद्र जैन :-

मा. महापौर मॅडम, मा.आयुक्त साहेब. यह प्रस्ताव लाने की जरूरत क्यों पड़ी। पहले बताना चाहूँगा सभी नगरसेवकों को जानकारी शेअर करना चाहूँगा। हमारा वॉर्ड जो कामगार है। उसको अपने नगरसेवक का पाच साल के पिरेयड में ७ लाख पगार जाता है। अगर एक आदमी भी मिस करते है। इसमें जो नए नगरसेवक आये है। ५० प्रतिशत लेडीज भी है। नई आयी है उनको भी मैंने पुछा मुझे जानकारी नहीं आपको जानकारी है क्या? कितने लेबर किस समय कहाँ पर काम कर रहे है। उन्हें जानकारी नहीं रहती। वॉर्ड में काम हो रहा है लेकिन कहाँ हो रहा है। अगर नगरसेवक चेक करना चाहे की यह आदमी सडक पे है या गटर पे है। कुल संख्या कितनी है। अभी के सिस्टम में नगरसेवक चेक नहीं कर सकते। इसिलिए यह प्रस्ताव लाया गया है। मैंने शिंदे साहब और कांबळे साहेब से माहिती अधिकार में अपिल तक चला गया। उन्होंने जानकारी नहीं दी। अल्टीमेटली पानपट्टे साहबने आश्वासन दिया कि ऐसा किया जाएगा। ठेका पध्दती संपूर्ण मिरा-भाईदर महानगरपालिका क्षेत्रात साफसफाई (रस्ता सफाई, गटार सफाई, तसेच उंदीर व मच्छर मारण्याकरिता औषध फवारणी) करण्याचे काम सुरु आहे. परंतु कोणत्याच प्रभागात हे स्पष्ट नाही की, १. प्रत्येक प्रभागात रस्ता सफाई करीता किती कामगार कोणत्या रस्त्यावर व किती वाजेपर्यंत काम करतात याबाबत सदर प्रभागातील रस्त्याचा नकाशा बनवून सविस्तर अहवाल देण्यात यावा. २. प्रत्येक विभागातील असलेली सर्व गटारे ही प्रत्येक महिन्यात पूर्ण साफसफाई करण्याचे नियोजन करावे. याप्रमाणे महिन्याच्या प्रत्येक दिवशी किती सफाई कामगार कुठून ते कुठपर्यंत, किती वाजेपर्यंत गटारावर साफसफाई करत आहेत याबाबत महिन्याच्या आत सर्व गटारे साफ होतील असे नियोजन करून त्याची माहिती त्या त्या प्रभागातील नगरसेवकांना देण्यात यावी. ३. प्रभागातील सर्व इमारतींमध्ये एका महिन्यात कमीत कमी एक वेळा उंदीर नियंत्रण योजना राबविण्यात यावी. प्रत्येक दिवशी या उपक्रमात येणाऱ्या इमारतींची व साहित्यांची माहिती सदर प्रभागातील नगरसेवकांना देण्यात यावी. ४. प्रभागातील सर्व इमारतींमध्ये एका महिन्यात कमीत कमी एक वेळा मच्छरांकरीता औषध फवारणी करण्यात यावी. प्रत्येक दिवशी या उपक्रमात येणाऱ्या इमारतींची व साहित्यांची माहिती सदर प्रभागातील नगरसेवकांना देण्यात यावी. सदर साफसफाई उपक्रमात ठेकेदारांवर कोणकोणत्या प्रकारची दंडात्मक कारवाई केली जाईल याबाबतची सर्व प्रभागातील नगरसेवकांना माहिती नियमित देण्यात यावी असा ठराव मांडण्यात येत आहे.

नयना वसाणी :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

प्रकरण क्र. १० :-

आरोग्य विभागामार्फत सर्व नगरसेवकांना त्यांच्या प्रभागातील साफसफाई, कर्मचारी, मशीन व इतर साहित्यबाबत माहिती उपलब्ध करून देणेबाबत.

ठराव क्र. ११ :-

ठेका पध्दती संपूर्ण मिरा-भाईदर महानगरपालिका क्षेत्रात साफसफाई (रस्ता सफाई, गटार सफाई, तसेच उंदीर व मच्छर मारण्याकरिता औषध फवारणी) करण्याचे काम सुरु आहे. परंतु कोणत्याच प्रभागात हे स्पष्ट नाही की, १. प्रत्येक प्रभागात रस्ता सफाई करीता किती कामगार कोणत्या रस्त्यावर व किती वाजेपर्यंत काम करतात याबाबत सदर प्रभागातील रस्त्याचा नकाशा बनवून सविस्तर अहवाल देण्यात यावा. २. प्रत्येक विभागातील असलेली सर्व गटारे ही प्रत्येक महिन्यात पूर्ण साफसफाई करण्याचे नियोजन करावे. याप्रमाणे महिन्याच्या प्रत्येक दिवशी किती सफाई कामगार कुठून ते कुठपर्यंत, किती वाजेपर्यंत गटारावर साफसफाई करत आहेत याबाबत महिन्याच्या आत सर्व गटारे साफ होतील असे नियोजन करून त्याची माहिती त्या त्या प्रभागातील नगरसेवकांना देण्यात यावी. ३. प्रभागातील सर्व इमारतींमध्ये एका महिन्यात कमीत कमी एक वेळा उंदीर नियंत्रण योजना राबविण्यात यावी. प्रत्येक दिवशी या उपक्रमात येणाऱ्या इमारतींची व साहित्यांची माहिती सदर प्रभागातील नगरसेवकांना देण्यात यावी. ४. प्रभागातील सर्व इमारतींमध्ये एका महिन्यात कमीत कमी एक वेळा मच्छरांकरीता औषध फवारणी करण्यात यावी. प्रत्येक दिवशी या उपक्रमात येणाऱ्या इमारतींची व साहित्यांची माहिती सदर प्रभागातील नगरसेवकांना देण्यात यावी. सदर साफसफाई उपक्रमात ठेकेदारांवर कोणकोणत्या प्रकारची दंडात्मक कारवाई केली जाईल याबाबतची सर्व प्रभागातील नगरसेवकांना माहिती नियमित देण्यात यावी असा ठराव मांडण्यात येत आहे.

सुचक :- डॉ. राजेंद्र जैन

अनुमोदक :- डॉ. नयना वसाणी

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रशासनाकडून “क” खाली प्रस्ताव आलेला आहे.

नरेंद्र मेहता :-

“क” चा प्रस्ताव असल्याने कोणाकडे गोषवारा नाही?

दिनेश जैन :-

मा. महापौर मॅडम यह “ज” जो सन्मा. राजेंद्र जैन का प्रस्ताव है। अभी बारीश का टाईम है सब जगह पाणी भरा है। छः गाडी रखी है हर प्रभाग में छाटनी के लिए। लेकिन प्रभाग ५ मे मैं २० दिन से फोन कर रहा हूँ वहाँ पे गाडी खराब पडी है। अभी बारीश के मौसम में डेंग्यु, मच्छर मलेरिया यह सब बिमारीयां होती है। बारीश में फवारणी नहीं होगी। आप कितना भी लिस्ट दोंगे यहाँ पे काम कर रहा हूँ। वहा काम कर रहा हूँ उसका का कुछ मिनींग नहीं है। हर प्रभाग में २-२ आदमी काम करने के लिए रखे है जो फवारणी करते है। मेरे प्रभाग में दो महिने से एक भी आदमी नहीं की वो फवारणी कर रहा है। मैंने राठोड को बोला मेरे प्रभाग में कोई फवारणी नहीं कर रहा तो कल उसने मेरे प्रभाग में आदमी भेजा और बोला की किसी को बोलो मत यह आरोग्य की कन्डीशन है। पानपट्टे साहब इसका जवाब देंगे की ऐसा क्यों हो रहा है।

शिल्पा भावसार :-

मा. महापौर मॅडम आमच्या प्रभाग ६ ला तसेच हाल आहेत. आम्ही फोन केल्यावर ऐकायला मिळते की गाडी खराब है।

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

मा. महापौराच्या परवानगीने बोलतो, गाडी खराब झालेली ती दुरुस्त करून घेतली आता फवारणी सुरु आहे.

दिनेश जैन :-

२० दिवस झाले फक्त वायर निघाली आहे ते रिपेयर होत नाही. तिकडे माझ्या प्रभागात डेंग्युचे १०-१५ पेशन्ट आहेत.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

मला फोन करा. मी लगेच करतो.

दिनेश जैन :-

राठोडची काय जबाबदारी नाही का?

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

मला फोन करा. मी करून घेतो.

दिनेश जैन :-

पावसाळ्यात विषय लक्षात ठेवा.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

पावसाळ्यात औषध खरेदी केलेली आहेत. टेम्पो दुरुस्त केलेला आहे. लगेच फवारणी सुरु करून देतो.

शिल्पा भावसार :-

मा. महापौर मॅडम जसे कर्मचाऱ्यांबद्दल महोदयांनी सांगितले तर माझे पण असे म्हणणे आहे. ह्यांच्या व्यतिरीक्त आपले जे अधिकारी आहेत त्यांना आम्ही फोन केला तर ते आम्हांला बोलतात मी कोर्टात आहे. ठाण्याला आहे. तर माझी अशी सुचना आहे की, आम्हांला हे कळू द्या की कोणत्या अधिकाऱ्यावर किती केस लागल्या आहेत आणि त्यांना महिन्यातून किती दिवस कोर्टात जावे लागते. आम्हांला ते कधी वेळ देणार. आमचा फोन उचलायला त्यांना त्रास होतो. वेगवेगळ्या नंबरनी फोन करायला लागतो. त्यामुळे आम्हांला ती सोय करून द्या.

मा. महापौर :-

ठीक आहे.

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ११, आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी मिळणेबाबत.

ध्रुवकिशोर पाटील :-

उपरोक्त विषयानुसार मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात अतिरिक्त २० द.ल.ली. पाणी पुरवठा महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळ यांच्यामार्फत उपलब्ध करून घेण्यासाठी मान्यता मिळालेली आहे. सदर पाणी उपलब्ध करून पाणी पुरवठ्यामध्ये सुधारणा होण्यासाठी आवश्यक त्या जलवाहिनी अंथरणे गरजेचे आहे. तसेच पाण्याचा दाब योग्य तो ठेवण्याकरीता काही ठिकाणी जलकुंभ बांधणे आवश्यक आहे. तसेच काही ठिकाणी मुख्य जलवाहिनी अंथरणे सुध्दा आवश्यक आहे. पाणी पुरवठा उपलब्ध झाल्यानंतर पाणी पुरवठा वितरण योग्य होणेकरीता आवश्यक ती खालील कामे हाती घेणे आवश्यक आहे.

अ.क्र.	कामाचे नांव	अंदाजित रक्कम (रु.)
१	मिरारोड (पूर्व) शांतीनगर सेक्टर २ येथे उंच जलकुंभ बांधणे.	१,१९,४७,३००/-
२	भाईंदर (प.) येथील सुभाष मैदान जलकुंभ ते राई बस स्टॉप पर्यंत बिडाची जलवाहिनी पुरवणे व अंथरणे.	१,२८,६४,४००/-

३	मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात मिरारोड (पूर्व) शांती नगर येथे सेक्टर ११ जलकुंभ ते सेक्टर ७ व २ जलकुंभाकरीता ३५० मि.मी. व्यासाची एम.एस.जलवाहिनी पुरवणे व अंथरणे.	९९,०६,४००/-
४	मिरा भाईंदर महानगरपालिका आरक्षण क्र. २२६ इंद्रलोक फेज क्र. ०४ मौजे नवघर येथे उंच जलकुंभ बांधणे.	२,३२,७२,९००/-
५	मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील मिरारोड (पूर्व) हटकेश ते कनाकिया जलकुंभापर्यंत ८६४ मि.मी. व्यासाची मृदुपोलादी जलवाहिनी पुरविणे व अंथरणे.	५,६२,६३,५००/-
६	मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात घोडबंदर येथील जी.सी.सी. क्लब, आकृती व पूनम नगर व गौरव रेसीडेन्सी येथे बीडाची जलवाहिनी पुरविणे व अंथरणे.	१,०६,२५,०००/-
७	मिरा भाईंदर महानगरपालिका पाणी पुरवठा विभागात वितरण व्यवस्था व देखभाल दुरुस्तीकरीता वार्षिक मुदतीने पाईप पुरवठा करणे.	१,००,००,०००/-

तरी वरील कामे आवश्यक असल्याने मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे अनुसुची "ड" मधील प्रकरण २ (१) (के) अन्वये सदर कामे अर्थसंकल्पीय तरतूदीनुसार करून घेण्यांस, ही सभा आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देत आहे.

जुबेर इनामदार :-

ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

नरेंद्र मेहता :-

उपरोक्त विषयानुसार मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात अतिरिक्त २० द.ल.ली. पाणी पुरवठा महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळ यांच्यामार्फत उपलब्ध करून घेण्यासाठी मान्यता मिळालेली आहे. सदर पाणी उपलब्ध करून पाणी पुरवठ्यामध्ये सुधारणा होण्यासाठी आवश्यक त्या जलवाहिनी अंथरणे गरजेचे आहे. तसेच पाण्याचा दाब योग्य तो ठेवण्याकरीता काही ठिकाणी जलकुंभ बांधणे आवश्यक आहे. तसेच काही ठिकाणी मुख्य जलवाहिनी अंथरणे सुध्दा आवश्यक आहे. पाणी पुरवठा उपलब्ध झाल्यानंतर पाणी पुरवठा वितरण योग्य होणेकरीता आवश्यक ती खालील कामे हाती घेणे आवश्यक आहे.

अ.क्र.	कामाचे नांव	अंदाजित रक्कम (रु.)
१	मिरारोड (पूर्व) शांतीनगर सेक्टर २ येथे उंच जलकुंभ बांधणे.	१,१९,४७,३००/-
२	भाईंदर (प.) येथील सुभाष मैदान जलकुंभ ते राई बस स्टॉप पर्यंत बिडाची जलवाहिनी पुरवणे व अंथरणे.	१,२८,६४,४००/-
३	मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात मिरारोड (पूर्व) शांती नगर येथे सेक्टर ११ जलकुंभ ते सेक्टर ७ व २ जलकुंभाकरीता ३५० मि.मी. व्यासाची एम.एस.जलवाहिनी पुरवणे व अंथरणे.	९९,०६,४००/-
४	मिरा भाईंदर महानगरपालिका आरक्षण क्र. २२६ इंद्रलोक फेज क्र. ०४ मौजे नवघर येथे उंच जलकुंभ बांधणे.	२,३२,७२,९००/-
५	मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील मिरारोड (पूर्व) हटकेश ते कनाकिया जलकुंभापर्यंत ८६४ मि.मी. व्यासाची मृदुपोलादी जलवाहिनी पुरविणे व अंथरणे.	५,६२,६३,५००/-
६	मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात घोडबंदर येथील जी.सी.सी. क्लब, आकृती व पूनम नगर व गौरव रेसीडेन्सी येथे बीडाची जलवाहिनी पुरविणे व अंथरणे.	१,०६,२५,०००/-
७	मिरा भाईंदर महानगरपालिका पाणी पुरवठा विभागात वितरण व्यवस्था व देखभाल दुरुस्तीकरीता वार्षिक मुदतीने पाईप पुरवठा करणे.	१,००,००,०००/-

तरी वरील कामे आवश्यक असल्याने मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे अनुसुची "ड" मधील प्रकरण २ (१) (के) अन्वये सदर कामे अर्थसंकल्पीय तरतूदीनुसार करून घेण्यांस ही सभा आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देत आहे.

प्रशांत केळूसकर :-

माझे अनुमोदन आहे.

जुबेर इनामदार :-

एकच आहे काही बदल केलेला नाही.

मा. महापौर :-

सेम ठराव आहे.

जुबेर इनामदार :-

विरोधी पक्षनेते साहेब ठराव तोच आहे. त्याच्यामध्ये सुचना केली जात आहे. सुचनेचा त्याच्यात समावेश करून घ्यावा हि विनंती.

राजेश वेतोस्कर :-

मिरारोड नरेंद्र पार्क ज्यूपिटर इमारत ते कॉर्पोरेशन बँकपर्यंत चार फूट रुंदीचे गटार व त्यावर स्लॅब बांधणे व भाईदर (प.) उत्तन भाईदर मुख्य रस्त्यापासून कोपऱ्याकडे जाणाऱ्या रस्त्याचे बांधकाम करणे व भाईदर (प.) स्पॅन हाईट्स ते मिरारोड हॉस्पिटल व पूढे ३० मिटर पर्यंतचा रस्ता तयार करणे ह्या कामाचा समावेश करण्यात यावा अशी मी सुचना करत आहे.

अशरफ शेख :-

माझे अनुमोदन आहे.

प्रभात पाटील :-

मा. महापौर मॅडम “क” खाली प्रस्ताव पारित करतो त्याचा एक पेपर सर्व सभासदांना दिला असता तर काही हरकत नव्हती. आम्हांला कळलं असत. हे काय वाचतात ते ऐकतो ते काय वाचतो ते ऐकतो. सगळं संभ्रम आहे की आपण कशाला मंजुरी देतो. संपूर्ण सभागृहाची मंजुरी आहे आमच्याकडे त्याचे काही नाही.

रोहिदास पाटील :-

मा. महापौर मॅडम प्रशासनाने हा ठराव आणलेला आहे. मा. आयुक्त साहेब ऐकून घ्या. आपला देश शेतीप्रधान आहे. पावसाळा येणार शेतकरी ३ महिने आधी त्याची तयारी करतो. घराची कौल बदलतो, बिबियाणांची व्यवस्था करतो. अशी आज काय घटना घडलेली आहे. कावळा सुध्दा त्याचे घरटे बांधायला लागतो आणि मग शेतकरी सांगतो कावळा घरटे बांधतो. आपल्याला आपली काम पूर्ण करायची आहे. २-४ दिवसामध्ये असे काय घडले की प्रशासनाने हा क खाली प्रस्ताव येतोय. उद्या संध्याकाळी पाणी येणार आहे. परवा येणार आहे. काय येणार आहे. आज लोकांना ६६ तासांनी शहरांमध्ये पाणी चालू आहे. पाण्याची टाकी बांधायला घेतली आहे. इथे पाण्याची कोणतीही व्यवस्था नाही आहे. असे काय घडले आहे. कोणाच्या दबावाखाली मी म्हणत नाही. त्याची आवश्यकता असेल तर त्याचे स्वागत करू. आज पर्यंतचा इतिहास आहे, मिरा भाईदरच्या कोणत्याही नगरपरिषदेपासून कोणत्याही पक्षाने कोणत्याही नगरसेवकाने पाण्यासाठी कधीही विरोध केलेला नाही. आजही आम्ही विरोध करणार नाही. प्रशासन “क” खाली एवढा कोट्यावधी रुपयांचा विषय आणतो की आताच जोडणी केल्यावर पाणी चालू होणार आहे का? आता तुम्ही फाईलिंग केल्यावर टाकी बनणार आहे का? काय कामाची पध्दत. एक पत्रक आमच्या हातात मिळाल असते. आम्ही १०० लोक ह्याला संमती देतो. सभागृह नेते सन्मानीत आहे. विरोधी पक्षनेते सन्मानीत आहेत. पण ह्याचा अर्थ १०० नगरसेवक जमेत आहेत असाही ह्याचा अर्थ निघता कामा नये. आम्ही सुद्धा नगरसेवक आहोत. असे आम्हांला स्वतःला वाटते. त्यामुळे जे कामकाज चालणार आहे ते पारदर्शक चालले पाहिजे. तुम्ही मघाशी जसे निवेदन केले आमचे असे मत आहे की तुम्ही प्रामाणिक निवेदन करण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे त्याचे मनापासून स्वागत करतो. ह्या ही कामाचे तुम्ही प्रामाणिक निवेदन करणे गरजेचे होते की शहरात पाणी टंचाईवर मात करण्यासाठी ह्या योजना करणे गरजेचे आहे. इथे पाईपलाईन टाकणे गरजेचे आहे. अशा पध्दतीने कामकाज चालणार असेल. उद्या तर आचारसंहिता लागणार नाही ना. आपल्या सभा लागणारच आहेत. मा. महापौरांना अधिकार आहे. मा. महापौरांशी बोलणे करायला पाहिजे. सभागृह नेते आणि विरोधी पक्षनेत्यांशी बोलणे करायला पाहिजे. ते विषय सभासदांना विश्वासात घेऊन केले तर त्याचे स्वागत होईल. अन्यथा आपआपल्या अकलेनुसार जो तो जे जे अडथळे आणता येतील ते अडथळे आणण्याचा प्रयत्न करतील. मिडीया आपल्या मागे बसलेली आहे. आपण जे काही करतो ते कोणी बघत नाही असे नाही. आपण सगळ्यांनी मिळून ह्याची वाटणी करू या. वाटणी करायला आपले कोणी हात नाही बांधले. ते काचेतून बघतात ना आपली काय वाटणी चालली आहे. ही कामाचीच वाटणी असेल आमचा पुन्हा आग्रह राहिल. मा. महापौर म्हणून तुम्ही विनंती राहिल की जे काम असेल ते ट्रान्सफरन्ट होऊ द्या. ८ दिवसात १० दिवसात दुसरी सभा लावा. त्याला कुठे आडकाठी आहे. नियमानुसार अजेंडा द्या. मोजमाप द्या. दुसरे विचारतात खुलासा होत नाही. माझे बाय हार्ट ज्याला म्हणतात ते निवेदन केलेले आहे. इज्जत ठेवायची तर ठेवा नसेल तर तुमच्या तुम्ही स्वाधीन आहात.

प्रभात पाटील :-

काकांच्या बरोबर मी सुध्दा सहमत आहे. सभागृह सहमत असेल कारण आपण काही कागद न देता करोडोचे विषय वेळेवर आणता. ह्यांच्या ठरावामध्ये इंजिनियरला पण मुदतवाढ दिली गेली हे काय. मनात आले की सगळं होते का? त्याच्या ठरावामध्ये विषय होता. विषय मांडला ना.

नरेंद्र मेहता :-

प्रभात ताई आपण इशारा केला म्हणून “क” चा विषय हे तर ठिक आहे. योगायोगाने सभा तहकूब झाली नाही. तर एका निमित्तात मांडता येतो आणि एका मिनीटात कॉपी सुध्दा देता येत नाही. तहकूब झाली म्हणून आपल्याला वेळ होता. म्हणून नाहीतर “क” चा विषय कधील दिला जात नाही. मी जी सुचना मांडली ती नियमाला धरून सुचना मांडली आहे. परत ह्या गोष्टी होऊ नये. आम्ही सदस्य म्हणून मांडली मा. आयुक्त महोदयाचा अधिकार आहे. नियमात असेल ते करतील. त्यांना वाटले नियमाच्या बाहेर आहे तर ते फेटाळतील.

विखंडीत करतील तो त्यांचा निर्णय आहे. मला असे वाटले कायद्यात आहे. आमची भूमिका होती आम्ही मांडली.

प्रभात पाटील :-

मी म्हणते सचिव साहेब “क” चे विषय येत नाही का? नगरसेवकांना “क” च्या विषयाच्या प्रती देत नाही का?

नगरसचिव :-

“क” चा प्रस्ताव वेळेवर होता.

प्रभात पाटील :-

वेळेवर येतो परंतु त्याच्या प्रती देत नाही.

नगरसचिव :-

“ज” सारखा आगाऊ येत नाही.

प्रभात पाटील :-

“क” च्या प्रस्तावाला काही नियम असतील ना. किती करोड पर्यंत तुम्ही आर्थिक प्रशासकीय मंजूरी देऊ शकता. आर्थिक प्रशासकीय मंजूरीचा तो विषयच नसतो. तुम्ही त्याच्या विषयाला मंजूरी घेऊ शकता.

नगरसचिव :-

प्रशासनाकडून विषय द्यायची तरतूद आहे. मा. आयुक्तांना वाटले की हा प्रस्ताव पुढे तर तसा प्रस्ताव मा. आयुक्त देऊ शकतात. त्या प्रमाणे तो प्रस्ताव आलेला आहे.

मा. महापौर :-

पूर्वी पण असे प्रस्ताव आलेले आहे.

रोहिदास पाटील :-

मा. आयुक्त साहेब, प्रशासनाला अधिकार असेल तर आम्ही मान्य करू. पण इमरजन्सी काय आहे.

नरेंद्र मेहता :-

सुचना मांडली आहे ती आम्ही स्विकारत नाही.

मा. महापौर :-

ठीक आहे. मी सुचना फेटाळत आहे. पाण्याचा जो विषय आहे.

प्रकरण क्र. ११ (के प्रस्ताव) :-

आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी मिळणेबाबत.

ठराव क्र. १२ :-

उपरोक्त विषयानुसार मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात अतिरिक्त २० द.ल.ली. पाणी पुरवठा महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळ यांच्यामार्फत उपलब्ध करून घेण्यासाठी मान्यता मिळालेली आहे. सदर पाणी उपलब्ध करून पाणी पुरवठ्यामध्ये सुधारणा होण्यासाठी आवश्यक त्या जलवाहिनी अंतरणे गरजेचे आहे. तसेच पाण्याचा दाब योग्य तो ठेवण्याकरीता काही ठिकाणी जलकुंभ बांधणे आवश्यक आहे. तसेच काही ठिकाणी मुख्य जलवाहिनी अंतरणे सुध्दा आवश्यक आहे. पाणी पुरवठा उपलब्ध झाल्यानंतर पाणी पुरवठा वितरण योग्य होणेकरीता आवश्यक ती खालील कामे हाती घेणे आवश्यक आहे.

अ.क्र.	कामाचे नांव	अंदाजित रक्कम (रु.)
१	मिरारोड (पूर्व) शांतीनगर सेक्टर २ येथे उंच जलकुंभ बांधणे.	१,१९,४७,३००/-
२	भाईंदर (प.) येथील सुभाष मैदान जलकुंभ ते राई बस स्टॉप पर्यंत बिडाची जलवाहिनी पुरवणे व अंतरणे.	१,२८,६४,४००/-
३	मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात मिरारोड (पूर्व) शांती नगर येथे सेक्टर ११ जलकुंभ ते सेक्टर ७ व २ जलकुंभाकरीता ३५० मि.मी. व्यासाची एम.एस.जलवाहिनी पुरवणे व अंतरणे.	९९,०६,४००/-
४	मिरा भाईंदर महानगरपालिका आरक्षण क्र. २२६ इंद्रलोक फेज क्र. ०४ मौजे नवघर येथे उंच जलकुंभ बांधणे.	२,३२,७२,९००/-
५	मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील मिरारोड (पूर्व) हटकेश ते कनाकिया जलकुंभापर्यंत ८६४ मि.मी. व्यासाची मृदुपोलादी जलवाहिनी पुरविणे व अंतरणे.	५,६२,६३,५००/-
६	मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात घोडबंदर येथील जी.सी.सी. क्लब, आकृती व पूनम नगर व गौरव रेसीडेन्सी येथे बीडाची जलवाहिनी पुरविणे व अंतरणे.	१,०६,२५,०००/-
७	मिरा भाईंदर महानगरपालिका पाणी पुरवठा विभागात वितरण व्यवस्था व देखभाल दुरुस्तीकरीता वार्षिक मुदतीने पाईप पुरवठा करणे.	१,००,००,०००/-

तरी वरील कामे आवश्यक असल्याने मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे अनुसुची “ड” मधील प्रकरण २ (१) (के) अन्वये सदर कामे अर्थसंकल्पीय तरतूदीनुसार करून घेण्यांस, ही सभा आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देत आहे.

सुचक :- श्री. ध्रुवकिशोर पाटील अनुमोदन :- श्री. जुबेर इनामदार
ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-
महापौर
मिरा भाईदर महानगरपालिका

रोहिदास पाटील :-

शोक प्रस्ताव एकनाथ जगन्नाथ पाटील, नवघर ह्यांचे दुःखद निधन झालेले आहे. ही सभा शोक प्रस्ताव मांडत आहे.

दुःखवटा ठराव १३ :-

श्री. एकनाथ जगन्नाथ पाटील, नवघर ह्यांचे दुःखद निधन झालेले आहे. म्हणून शोकप्रस्ताव मांडत आहे. त्या सर्वांच्या कुटूंबीयांच्या दुःखात ही सभा सहभागी असून त्यांच्या मृतात्म्यास चिरशांती लाभो हीच ईश्वरचरणी प्रार्थना.

सुचक :- श्री. रोहिदास पाटील अनुमोदन :- श्री. प्रविण पाटील
ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-
महापौर
मिरा भाईदर महानगरपालिका

शिक्षण अधिकारी :-

मा. महापौर ह्यांच्या परवानगीने, आदरणीय आयुक्त साहेब, सन्मा. सदस्य ह्यांना मी माझा परिचय करून देतो. माझे नांव सुरेश मोतीराम देशमुख. मी २५ वर्षांपासून प्राथमिक, माध्यमिक आणि उच्च माध्यमिक शिक्षण विभागामध्ये काम केलेले आहे. आणि आपल्या मनपामध्ये चांगल्या पध्दतीने काम करण्याचा प्रयत्न करेन. ह्याच्या अगोदर शिक्षण अधिकारी माध्यमिक ह्या कार्यालयात विषय तज्ञ म्हणून काम करीत होतो. त्यानंतर मा. शिक्षण उच्च-संचालक कार्यालयात काम केलेले आहे. नगरपालिकेत सुध्दा काम केलेले आहे. आणि प्रौढ शिक्षणात काम केलेले आहे. डी.एड. कॉलेजमध्ये लेक्चरर म्हणून काम केलेले आहे.

नरेंद्र मेहता :-

शिक्षण अधिकारी साहेब मध्येच अशी चर्चा होती की आपले ७ वी चे विद्यार्थी ८ वी चे विद्यार्थी कुठे जातील. आपण ७ वी आणि ८ वी केले तर ८ वी नंतर हा प्रश्न आहे की ९ वी चे विद्यार्थी कुठे जातील. मॅडम, आपल्याकडे जे विद्यार्थी आहेत ते ९० टक्के बिलो पावटी लाईन वाले आहेत. आर.टी.आई. अॅक्टप्रमाणे २५ टक्के आपण त्यांच्याकडून अॅडमिशन घेऊ शकतो आणि त्याचे पैसे सरकार देणार आहे. ज्या शाळेत आपले विद्यार्थी शिकतात. त्यांच्याकडून इन्कम सर्टिफिकेट घेतले तर आपल्याला कुठल्याही शाळेत त्यांना अॅडमिशन मिळवून देता येईल. आणि मा. आयुक्त महोदयांनी प्रायोरिटीवर पत्र दिले तर आपले जे विद्यार्थी आहेत त्यांच्या शाळेत त्यांना फ्री ऑफ कॉस्ट अॅडमिशन मिळवून देता येईल. आणि हे बंधनकारक आहे. त्या प्रमाणे १०० टक्के नाही तर २५ ते ३० टक्के मुलं ही दुसऱ्या शाळेत समावेश करण्यांत येईल. २५ टक्के आर. टी. आई. अॅक्टप्रमाणे शिक्षण अधिकाऱ्यांनी यादी मागवावी आपले जे विद्यार्थी आहेत. मा. आयुक्त महोदय चर्चा करून हा कोटा पूर्ण करावा.

मा. महापौर :-

ठीक आहे. सभा संपली असे मी जाहीर करते.

(सभा संपल्याची वेळ :- २.४५ वाजता)

सही/-
महापौर
मिरा भाईदर महानगरपालिका

नगरसचिव
मिरा भाईदर महानगरपालिका